शैक्षिक मंथन

(द्विभाषी मासिक)

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 11 अंक : 6 1 जनवरी 2019

(पौष-माघ, विक्रम संवत् 2075)

संस्थापक

स्व. मुकुन्दराव कुलकर्णी

❖

परामर्श

के.नरहरि

डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल

जगदीश प्रसाद सिंघल

❖

सम्पादक

सन्तोष पाण्डेय

❖

सह सम्पादक

भरत शर्मा

❖

संपादक मंडल

प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय

डॉ. एस.पी. सिंह

डॉ. ओमप्रकाश पारीक

डॉ. शिवशरण कौशिक

❖

प्रबन्ध सम्पादक

महेन्द्र कपूर

❖

व्यवस्थापक

बजरंग प्रसाद मजेजी

प्रेषण प्रभारी

बसन्त जिन्दल ❑ नौरंग सहाय

कार्यालय प्रभारी

आलोक चतुर्वेदी : 9782873467

प्रकाशकीय कार्यालय

82, पटेल कॉलोनी, सरदार पटेल मार्ग, जयपुर (राजस्थान) 302001

दूरभाष : 9414040403

दिल्ली ब्यूरो :

शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13, कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053

दूरभाष : 011-22914799

E-mail :
shaikshikmanthan@gmail.com
Visit us at :
www.shaikshikmanthan.com

एक प्रति 20/- वार्षिक शुल्क 200/-
आजीवन (दस वर्ष) 1500/-

पृष्ठ संयोजन : सागर कम्प्यूटर, जयपुर

शैक्षिक मंथन मासिक में प्रकाशित सामग्री से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा चित्रों का प्रतीकात्मक प्रयोग किया गया है।

उपभोक्तावाद के वशीभूत नारी ❑ डॉ. इन्दु बाला अग्रवाल

स्वतंत्रता और अपनी पहचान बनाने की धुन में उपभोक्तावादी संस्कृति की गुलाम बनती नारी क्या इसका रिवर्स नहीं कर सकती, क्या वह अपनी आन-बान-शान बरकरार रख, घर परिवार को गौरवान्वित करने तथा सबको साथ लेकर बाजारीकरण, वैश्वीकरण को अपने हुनर, अपनी कला को मुनाफे में तब्दील नहीं कर सकती। क्या शिक्षा का इस्तेमाल समाज को शिक्षित व सुनियोजित करने में नहीं किया जा सकता। अपनी सेवाओं द्वारा चाहे डॉक्टर या नर्स बनकर समाज को बहुउपयोगी सेवा उपलब्ध नहीं करवा सकती।

9

अनुक्रम

4.	भारत में नारी प्रतिमा के आयाम	- सन्तोष पाण्डेय
7.	स्त्री शिक्षा : कल, आज और कल	- डॉ. बुद्धमति यादव
11.	भारत में स्त्री शिक्षा की स्थिति	- डॉ. सुमनबाला
14.	उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव	- श्रीमती दीप्ति चतुर्वेदी
16.	भगिनी निवेदिता का योगदान	- प्रो. मधुर मोहन रंगा
18.	नारी : भारतीय उत्तम दृष्टि	- डॉ. ओम प्रकाश पारीक
21.	वर्तमान परिदृश्य में भारतीय नारी	- डॉ. प्रियंका गर्ग
26.	Role of Women in Social Development	- Prof. P.C. Agarwal
28.	शिक्षा के उद्देश्य व मूल्यांकन	- बजरंग प्रसाद मजेजी
30.	सौर क्रांति : अमावस्या को कर दे पूनम	- डॉ. अनिल कुमार गुप्ता
32.	खाद्य सुरक्षा से सुपोषण की ओर	- कैलाश विश्नोई
35.	विवेकानन्द : कर्तव्यबोध की प्रासंगिकता	- डॉ. हरनाम सिंह
37.	गाँधी, महिला और शिक्षा	- प्रो. सतीश कुमार
39.	क्या समर्थ को दोष नहीं? (कुटुम्ब प्रबोधन : अध्याय-10)	- हनुमान सिंह राठौड़
41.	गतिविधि	

Bharatiya Sanskriti Education and Women

❑ Dr. T. S. Girishkumar

Bharat always had its own knowledge tradition, and this originated much before all other knowledge traditions of the world. But the conquests and other influences from outside influenced Bharatiya knowledge tradition in a devastating manner. Those who came from out side had never understood Bharatiya knowledge tradition because of the huge conceptual and logical differences in what they knew and the Vedopanishadic knowledge tradition. They imposed what they thought as correct, especially in the light, that they never understood Bharat.

23

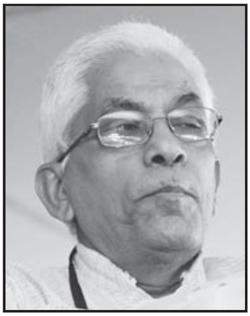

वास्तव में भारतीय नारी चाहे दिव्यात्म रूप ग्रहण करे अथवा न करे परन्तु परिवार के केन्द्र बिन्दु, मानव को भावनात्मक बल प्रदान करने वाली शक्तिपुंज का रूप अवश्य ही ग्रहण कर सकती है। इसके लिये पश्चिमी 'स्त्रीवाद' आदर्श नहीं हो सकता है। भारतीय नारी की 'छवि' को भारतीय सामाजिक परिवेश में ही निखारना होगा। ऐसी छवि का निर्माण सशक्त भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अपनाने पर ही संभव हो सकता है। इस हेतु भारतीय शिक्षा व्यवस्था को मैकाले की मानसिकता से मुक्त करना होगा। मैकाले की छाया से भारतीय शिक्षा तब ही मुक्त हो सकेगी जब भारतीय शिक्षा व्यवस्था के पाठ्यक्रम की अवधारणा संरचनात्मक रूप से बदले।

भारत में नारी प्रतिमा के आयाम

❑ सन्तोष पाण्डेय

संपादकीय

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति एवं समाज व्यवस्था में नारी प्रतिमा (छवि) परम सम्माननीय एवं जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय और रचनात्मक भूमिका निभाने वाली रही है। प्रकृति प्रदत्त माँ की भूमिका के रूप में भारतीय नारी की छवि एक स्नेहमयी, रक्षक संस्कार निर्माण में प्रथम गुरु के रूप में रही है। स्नेहमयी माँ के साथ बहिन, पुत्री, पत्नी के दायित्वों का निर्वहन भी उच्च सामाजिक व सांस्कृतिक आदर्शों के अनुरूप रहा है। परिवार से परे समाज में भी भारतीय नारी की प्रतिमा विदुषी, कुशल गृहणी, परिवार में एकता व सामंजस्य बनाये रखने वाली सुदृढ़ कड़ी (link) की रही है, जो आज तक विद्यमान है। इसके इतर भारतीय जनमानस में भारतीय नारी की एक दिव्यात्म छवि व्यापक रूप से विद्यमान है जो राष्ट्रीय एकता के लिये 'भारत माता' की संकल्पना, सांसारिक व सामाजिक आदर्शों के रूप में राधा एवं सीता के रूप में जन-जन में व्याप्त है। भारत चाहे जैसे सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक उथल-पुथल से विभिन्न कालखण्डों में भले ही ग्रसित रहा हो, परन्तु, भारतीय नारी की उपर्युक्त छवि अप्रभावित रही है। कैसे भी झंझावात क्यों नहीं आये हों भारतीय नारी ने अपना सनातन रूप से चली आ रही छवि के अनुरूप ही आचरण किया है। परन्तु यह भी सत्य है कि अनेक शताब्दियों तक विदेशी आक्रांताओं के अत्याचार व अनाचार से भारतीय नारी को उत्पीड़न की असह्य पीड़ा सहनी पड़ी तथा सामाजिक कुरीतियों का शिकार होना पड़ा। आर्थिक व राजनीतिक पराधीनता के दौर में भारतीय समाज के अन्तर्मुखी बनने से भारतीय नारी की स्थिति व्यापक रूप से प्रभावित हुई। आज भी विद्यमान लैंगिक असमानता व शैक्षिक दृष्टि से व्यापक पिछड़ापन इसका ही परिणाम है। यद्यपि स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रारंभ के पूर्व ही अनेक सामाजिक व धार्मिक सुधारकों ने अनेक प्रयासों द्वारा स्थिति को बदलने का भरपूर प्रयास किया जिसके सार्थक परिणाम स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान प्रकट हुये जो एक प्रकार से नारी जीवन के पुनरुत्थान व पुनर्जीवन के वाहक बने। इस दुरूह कालखण्ड में भी भारतीय नारी की आदर्शमयी प्रतिमा (छवि) अप्रभावित रही। तदपि व्यवहार रूप में भारतीय नारी की सामाजिक स्थिति व भूमिका भिन्न रही। परन्तु भारतीय नारी की आदर्श छवि एक लक्ष्य व ध्येय बनी रही जिसकी

प्राप्ति के प्रयास स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् फलीभूत हुये।

स्वतंत्रता प्राप्ति एवं भारतीय संविधान को स्वीकार किया जाना एक बड़ा मील का पत्थर है। समाज में बड़े-बड़े आर्थिक व सामाजिक परिवर्तनों की अटूट श्रृंखला प्रारंभ हुई। सभी प्रकार की समानता की स्थापना के लिये वर्ग भेद, जाति भेदों, लिंग भेद, सामाजिक भेद, शिक्षा प्राप्ति में भेद अवसरों में भेद व अन्य किसी प्रकार के भेद की समाप्ति का पथ प्रशस्त हुआ। विधायी व्यवस्थाओं द्वारा सभी प्रकार के भेदों को समाप्त किया गया। यह भी सत्य है कि संवैधानिक समानता व विधायी व्यवस्था भेद-भाव की समाप्ति के लिये अपर्याप्त हैं किन्तु इन प्रयासों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त कराना भी परम आवश्यक है। शिक्षा ही वह एक मात्र सशक्त माध्यम है, जो संवैधानिक एवं विधायी प्रयासों को सामाजिक स्वीकृति, दिला सकता है। शिक्षा ही जनसाधारण की सोच को बदल सकती है। इसी अवधारणा को दृष्टिगत कर आर्थिक विकास की आधारशिला रखने के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तनों के माध्यम से भारतीय समाज को निरन्तर बदलते समय के अनुरूप बनाने के लिये शिक्षा के प्रचार व प्रसार को प्रमुखता प्रदान की गई। भारतीय समाज मैकाले की शिक्षा पद्धति के पूर्ण जकड़न में होने के कारण समाज ने भौतिक सुख के साधनों को बड़े अवसर के रूप में जीवन का अंग बना लिया, जिससे समाज की सोच पर पश्चिमी जीवन शैली का निरन्तर बढ़ता प्रभाव नजर आया। शिक्षा के प्रसार द्वारा जिस प्रकार से सामाजिक सोच में उदारता, सामाजिक समरसता व सामंजस्यता आनी चाहिये थी नहीं आ पायी। परिणाम अपरिहार्य रहे। जातिगत, वर्गगत, लैंगिक व क्षेत्रीय भेदभाव समाप्त होने के स्थान पर और पुष्ट हुये। नारी की छवि नेपथ्य में चली गई। व्यावहारिक रूप से जीवन के सभी क्षेत्रों में नारी के सम्मान का ह्रास हुआ, अवसरों की समानता से वंचित हुई। भारतीय नारी प्रकृति प्रदत्त गुण, शक्ति व स्वभाव के कारण पारिवारिक जीवन की सुदृढ़ कड़ी बनी रही। आर्थिक प्रगति के कारण बढ़ती सम्पर्कता से लाभान्वित होने के लिये आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका बढ़ी। सुशिक्षित विधियों में महिलाओं की भूमिका बढ़ी। सुशिक्षित, प्रशिक्षित व दक्ष महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में न केवल भूमिका ही बढ़ी वरन उन्होंने अनेक क्षेत्रों में असाधारण सफलतायें अर्जित की व नये प्रतिमान स्थापित किये।

पारिवारिक जीवन में निर्णय की प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका पुष्ट हुई। सामाजिक जीवन के ढ़ाँचे में परिवर्तन हुआ संयुक्त परिवार प्रथा इसका प्रथम शिकार हुई। इन परिवर्तनों के बीच दु:खद यह रहा है कि देश के सभी भागों, क्षेत्रों, वर्गों में महिला शिक्षा प्राप्ति के समान व पर्याप्त अवसर नहीं मिल सके। परिणाम यह रहा कि जिस तीव्रता से नारी छवि बदलनी चाहिये थी, नहीं बदली। आज भी पुरुष प्रधान सामाजिक मानसिकता के कारण ही अनेक कुरीतियाँ जो नारी की प्रतिमा को दोयम दर्जे का बनाती है, प्रचलित है। आज भी जनसंख्या में असमान लिंगानुपात, कन्या भ्रूणहत्या का दुष्परिणाम हैं। व्यापक रूप से प्रचलित बाल विवाह, अशिक्षा, दहेजप्रथा, अन्तर्जातीय विवाहों के प्रति व्यापक असहमति आदि इसके उदाहरण है। शिक्षा के प्रसार के बावजूद आज भी परिवार के आर्थिक संस्थानों पर पुरुषों का एकाधिकार है। आर्थिक व परिवारिक निर्णयों में नारी की द्वितीयक भूमिका, नारी की छवि को सम्माननीय बनाने में बाधक है। आज 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' जैसे कार्यक्रम अपनाने पड़ रहे हैं। भारतीय समाज व आर्थिक व्यवस्था के लिये नब्बे (Ninetees) का दशक मील का पत्थर बना। यह वह दशक है जब भारत वैश्वीकरण उदारतावाद व निजी कारण को स्वीकार कर वैश्विक समुदाय से आर्थिक व सामाजिक एकीकरण को अपनाया। इनसे व्यापक परिवर्तनों का दौर प्रारंभ हुआ। भारत एक बड़ी आर्थिक शक्ति व उपभोक्ता बाजार के रूप में उभरा। देश में तीव्र आर्थिक प्रगति से बड़े सामाजिक बदलाव आये। भौतिक संसाधनों के उपयोग की दृष्टि से जीवन स्तर में वृद्धि हुई। देश में एक नया ताकतवर मध्यम व उच्चमध्यम वर्ग का उदय हुआ है,जिसके इर्द-गिर्द ही उत्पादन व्यवस्था केन्द्रित रही है। भारतीय नारी को नये प्रकार की स्वतंत्रता, आर्थिक आत्मनिर्भरता, कुरीतियों से मुक्ति की भावना पुष्ट हुई है। परन्तु इनका समाधान भारतीय परिवेश में ढूँढ़ने के बजाय पश्चिमी सोच के अनुरूप ढूँढने के प्रयास हो रहे है। यहाँ पुन: उल्लेखनीय है कि इन सबका कारण मैकाले की शिक्षा पद्धति को पुष्ट करना व पश्चिमी सभ्यता का दृष्टिकोण कि भौतिक सफलता ही सुख का साधन है, व्यक्तिवाद से ही सफलतायें प्राप्त हो सकती है। व्यक्तिगत उन्नति ही सामाजिक उन्नति का आधार है। इनमें सामूहिक कारण, सामाजिक सरकारों के प्रति उपेक्षा भाव है। इस प्रकार पाश्चात्य समाज भारतीय समाज की अवधारणा से मेल नहीं खाता है। भारत में आत्मविकास के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास पर बल दिया जाता है। जिससे व्यक्ति व समाज एकाकार होते हैं, व्यक्ति व समाज में समन्वय व तदात्म स्थापित होता है। नारी की छवि इस अवधारणा पर सर्वाधिक उपेक्षित हुई।

आज वैश्विक बाजार उपभोक्तावाद पर आधारित है। जिसमें अपने उत्पाद को जन-जन तक पहुँचाने व नये बाजार विकसित करने के लिये मार्केटिंग का महत्त्व बढ़ा है। विज्ञापन की नई-नई विद्यायें इसे आगे बढ़ा रही है। इनमें विज्ञापनों व मार्केटिंग में महिलाओं को केन्द्र बिन्दु बनाकर विभिन्न आकर्षक रूपों में प्रस्तुत किया जाता है।

इस व्यवस्था में नारी की छवि बाजार में बिकने वाली एक वस्तु की बन जाती है। महिलाओं की छवि को आकर्षक बनाकर सैक्स उपकरण का रूप दे दिया जाता है। नारी को सैक्सटूल बनाकर सफलता की कामना रहती है। इनका परिणाम दूषित मानसिकता के रूप में प्रकट होता है। महिलाओं के साथ बढ़ते यौन शोषण के आपराधिक कृत्य आम हो गये हैं। नारी की यह छवि पश्चिमी सोच व नैतिकता के दायरे में हो सकती है। परन्तु यह भारतीय सोच व संस्कृति का अंग नहीं हो सकती है। भारतीय जनमानस में आज भी नारी की छवि एक देवी एक शक्ति के रूप में व्याप्त है, जो अनाचार व अत्याचारों के शमन हेतु दैवीय शक्ति का रूप धारण कर समाज को अभयदान देती है। वास्तव में भारतीय नारी चाहे दिव्यात्म रूप ग्रहण करे अथवा न करे परन्तु परिवार के केन्द्र बिन्दु, मानव को भावनात्मक बल प्रदान करने वाली शक्तिपुंज का रूप अवश्य ही ग्रहण कर सकती है। इसके लिये पश्चिमी 'स्त्रीवाद' आदर्श नहीं हो सकता है। भारतीय नारी की 'छवि' को भारतीय सामाजिक परिवेश में ही निखारना होगा। ऐसी छवि का निर्माण सशक्त भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अपनाने पर ही संभव हो सकता है। इस हेतु भारतीय शिक्षा व्यवस्था को मैकाले की मानसिकता से मुक्त करना होगा। मैकाले की छाया से भारतीय शिक्षा तब ही मुक्त हो सकेगी जब भारतीय शिक्षा व्यवस्था के पाठ्यक्रम की अवधारणा संरचनात्मक रूप से बदले। पाठ्यचर्या का निर्माण निर्धारण भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं पर आधारित हो व सामाजिक समस्याओं को समझने एवं उनका निदान ढूँढ़ने में भारतीय शाश्वत जीवन मूल्यों को अपनाया जाय। यदि सामाजिक धारणायें बदलती है तो नारी की छवि भी बदलेगी और नारी पुन: आत्मरूप व दिव्यात्म रूप में गौरव व सम्मान की अधिकारिणी बनेगी। ❑

पाठ्यक्रम में नारी प्रतिमा

भारतीय समाज में मानव-चेतना के विकासक्रम में नारी की सदैव विशिष्ट भूमिका रही है। भारतीय नारी ने जीवन के विविध पक्षों तथा विभिन्न क्षेत्रों में संपूर्ण समाज के अंतरंग तथा बहिरंग परिष्कार में विशेष योगदान किया है। वस्तुत: एक माँ ही बालक की अन्तर्भूत और प्रसुप्त विशेषताओं की परिष्कृति और अभिव्यक्ति की प्रणेता होती है। समाज में नारी की- माँ, बहन, पत्नी, पुत्री के रूप में विभिन्न स्थितियाँ होती हैं जो किसी-न-किसी रूप में व्यक्ति के भावनात्मक विकास में सहायक होती हैं।

उल्लेखनीय है कि प्राणिमात्र की प्रकृतिरूपा माँ अपनी संतान की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी तक लगा देती है। उसकी इसी तत्परता ने परिवार के सदस्यों, उसकी संतानों में न केवल आत्मरक्षा की प्रवृत्ति का विकास किया, अपितु आत्मरक्षा को समाज में एक प्रकृत जीवन मूल्य के रूप में ही स्थापित कर दिया। यही आत्मरक्षा की प्रवृत्ति परिवार, ग्राम, देश तथा विश्व रक्षा तक विस्तार पाकर एक उदात्त जीवन-मूल्य बन जाती है जिसके मूल में नारी जाति की मातृ-भावना ही है। आर्य-संस्कृति से पूर्व हमें जो सिन्धुघाटी और मोहन- जोदड़ो में तत्कालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं, उनमें मातृदेवी की मूर्ति भी है। इससे ज्ञात होता है कि भारत में आर्य-सभ्यता से पूर्व भी नारी की स्थिति, जीवन ऊर्जा की वाहिका के रूप में पूज्य तथा श्लाघ्य रही है। भारतीय संस्कृति में नारी की प्रतिमा आत्मरूप के साथ दिव्यात्म रूप में भी स्थापित रही है।

भारतीय जनमानस में नारी का यह दिव्यात्म रूप भारत-माता के रूप में, राष्ट्रीयता में, प्रकृति में, राधा-सीता के रूप में, शक्ति के रूप में, ब्रह्म की अंशभूत प्रेयसी आत्मा के रूप में सर्वत्र दिखाई देता है, तो साथ ही आत्मरूप में उसने जीवन के विविध क्षेत्रों, जैसे - अध्यात्म, ललित कला, साहित्य, विज्ञान, राजनीति, खेल, संस्कृति, समाज सेवा, गृहधर्म, शिक्षा, वीरता, ऐश्वर्य, शासन आदि में अविस्मरणीय स्थान बनाया है।

यह सर्वविदित है कि वर्तमान वैश्वीकरण के दौर में जब समूचे विश्व की नारी-जाति को एक साधारण मनुष्य, उत्पाद (कमोडिटी) तथा भौतिकता के अंधे जाल में लुप्त सामान्य स्त्री के रूप में परिभाषित किया जा रहा है, तब यह और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि वर्तमान भारतीय शिक्षा में विभिन्न पाठ्यक्रमों में नारी की प्रतिमा (छवि) उपरलिखित संदर्भों के अनुरूप पुनर्स्थापित की जानी आवश्यक है। आज देश को आर्थिक व सामाजिक रूप से विकसित करने में महिलाओं की भूमिका उल्लेखनीय हो गई है। ❑

आज शिक्षा से प्राप्त अधिकारों को संरक्षित रखना स्त्री जाति के लिए चुनौती बनता जा रहा है। अत: आवश्यकता इस बात की है कि वर्तमान अधिकारों के संरक्षण हेतु आधुनिक स्त्री को अपनी भूमिका तय करनी होगी, अपने लक्ष्य निर्धारित करने होंगे। उसके लिए उसे परम्परा की जमीन पर खड़े होकर ही प्रगति के मार्ग को चुनना होगा और इस मार्ग पर चलने के लिए स्त्री को पुरुष का सहयोग भी लेना होगा। पुरुष को प्रतिद्वंद्वी नहीं, पूरक अथवा सहगामी मानकर साथ चलना होगा, तभी स्त्री समाज में अपने लक्ष्य को सहज ही प्राप्त कर सकेगी और अपनी छवि का निर्धारण कर सकने में भी सक्षम हो सकेगी।

स्त्री शिक्षा : कल, आज और कल

❑ **डॉ. बुद्धमति यादव**

किसी भी परिवार, समाज और राष्ट्र का विकास स्त्री और पुरुष के समान विकास पर निर्भर है। यदि एक भी अंग दूसरे की तुलना में 'कमतर' रह जाता है तो विकास की गति स्वत: ही धीमी पड़ जाती है। दोनों का समान विकास आवश्यक है और वह 'शिक्षा' द्वारा ही सम्भव है।

भारतीय समाज में स्त्री 'शिक्षा' से लम्बे समय तक वंचित रही, हालांकि वैदिक काल में स्त्रियों को वेदाध्ययन, शास्त्रार्थ, शस्त्र-विद्या आदि की शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार था। समाज में उनका विशिष्ट स्थान था। लड़कियों के उपनयन संस्कार किये जाते थे। यज्ञादि कर्मों में भी स्त्रियाँ भाग लेती थी। अपाला, घोषा, मैत्रेयी, गार्गी, लोपामुद्रा आदि इसके श्रेष्ठ उदाहरण है। वैदिक काल में स्त्री शिक्षित होने के कारण 'अबला' नहीं 'सबला' थी। स्मृति-काल में तो 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' कहकर नारी को उत्कृष्टता के चरम पर प्रतिष्ठित कर दिया। रामायण और महाभारत काल में भी स्त्री-शिक्षा की सुव्यवस्था दृष्टिगोचर होती है। वेदाध्ययन के साथ-साथ विभिन्न कलाओं में निपुणता हेतु शिक्षण की व्यवस्था का भी उल्लेख मिलता है। निष्कर्षत: तत्कालीन समाज में नारी की शैक्षिक स्थिति उच्चस्तरीय थी।

मध्यकाल तक आते-आते काल और परिस्थितियों में परिवर्तन आया, जिससे स्त्री का गौरवमय पद धीरे-धीरे अवनत दशा में परिणत होने लगा। स्त्रियों के समस्त अधिकार पुरुषों के अधीन होते गये और स्त्री को दासत्व स्वीकार करने को विवश होना पड़ा। स्त्री शिक्षा गौण होने लगी और पुरुष वर्चस्व बढ़ने लगा। नारी का कार्य क्षेत्र घर तक सीमित हो गया और पर्दे की सीमा में उसे आबद्ध कर दिया गया। बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा नारी जीवन के अभिशाप बन गए। पुरुष सत्तात्मक समाज में नारी की अधीनता बढ़ती गई, जिससे 'स्त्री-शिक्षा' उपेक्षित होती गई। मध्य युग में नारी पुरुष के समान नेतृत्व करने तथा सामाजिक कार्यक्रमों में समानता से भाग लेने से वंचित कर दी गई। स्त्री अब पुरुष की 'सहयोगिनी' के स्थान पर उसकी 'दासी' बन गई। 'सबला' अब 'अबला' बनने को विवश थी। नारी की स्थिति को तत्कालीन राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने इस प्रकार व्यक्त किया है – **'अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी/आँचल में है दूध और आँखों में पानी।'**

नारी पुरुष की 'अर्द्धांगिनी' मानी जाती है। इस आधार पर यदि अर्द्धांग अशिक्षित रहे, तो समाज की सर्वांग पूर्ण प्रगति कैसे सम्भव हो सकती है? नारी ही पितृकुल और पतिकुल की समग्र स्थिति के उन्नयन की आधारभूता है, फिर भला यदि वही अशिक्षित हो तो परिवार और समाज कैसे प्रगति की ओर अग्रसर हो सकता है? इस तथ्य को आधुनिक काल में समाज-सुधारकों और भारतीय मनीषियों ने स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता और उपयोगिता के सन्दर्भ में अनुभव किया और उसके लिए अनेक प्रयास भी किए ताकि समाज में नारी की खोई प्रतिष्ठा पुन: स्थापित हो सके और नारी को वो सम्मान मिले जिसकी वह अधिकारिणी है। प्रसाद ने 'ध्रुवस्वामिनी' में कहा है –

योनि नहीं है रे नारी,
वह भी मानवी प्रतिष्ठित।
उसे पूर्ण स्वाधीन करो,
वह रहे न नर पर आश्रित।

'विवेकानन्द जी ने भी स्पष्ट कहा है कि प्रत्येक राष्ट्र को स्त्री वर्ग का पूरा सम्मान करना चाहिए। संसार में सभी जातियाँ नारियों का समुचित सम्मान करके महान हुई है। जो जाति नारी का सम्मान करना नहीं जानती, न तो अतीत में उन्नति कर सकी, न आगे उन्नति कर सकेगी।' इसलिए यदि समाज में परिवर्तन लाना है और विकास के अभीष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करना है तो हमें स्त्री शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार करना होगा। क्योंकि किसी भी राष्ट्र को उन्नति के पथ पर ले जाने में शिक्षा महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। शिक्षा ग्रहण करके मनुष्य स्वयं का, समाज का और राष्ट्र का उत्थान करता है और इसके माध्यम से जीविकोपार्जन कर शिक्षा की सार्थकता सिद्ध

करता है। आज की नारी भी शिक्षा को सार्थक बनाने में लगातार प्रयासरत है। जीवन के हर क्षेत्र में कदम रख उच्च पदों पर आसीन होकर स्वयं का, परिवार का, राष्ट्र का गौरव बढ़ा रही है।

वर्तमान में नारी शिक्षा के परिणामस्वरूप ही इक्कीसवीं सदी को 'नारी सदी' के रूप में जाना जाने लगा है। सरकार द्वारा बालिका-शिक्षा की दशा उन्नत करने हेतु अनेक प्रयास यथा-बालिकाओं हेतु अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा का प्रावधान, विभिन्न वर्ग की छात्राओं हेतु छात्रावासों की सुविधा, दूरदराज से आने वाली बालिकाओं हेतु निशुल्क साईकिल और स्कूटी वितरण की योजना, विभिन्न छात्रवृत्तियों द्वारा बालिकाओं का आर्थिक सहयोग तथा शैक्षिक क्षेत्र में उन्नति करने हेतु गार्गी पुरस्कार तथा निशुल्क लैपटाप वितरण आदि किए जा रहे हैं। वर्तमान में लड़कियाँ व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रही है। शिक्षण से सम्बन्धित ट्रेनिंग, कॉलेजों और मेडीकल कॉलेजों में लड़कियों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। वे अब कला, विज्ञान, वाणिज्य के साथ-साथ प्रशासनिक और सेना आदि क्षेत्रों में भी दक्षता प्राप्त कर रही है। फलस्वरूप समाज में हर क्षेत्र में परिवर्तन दिखाई देने लगा है। डॉ. पणिक्कर के शब्दों में, स्त्रियों की शिक्षा और उनकी जागृति ने उस कुल्हाड़ी को तेज कर दिया है। जिसकी सहायता से हिन्दू सामाजिक जीवन की जंगली झाड़ियों को साफ करना सम्भव हो गया है। स्त्री शिक्षा के व्यापक प्रसार ने स्त्रियों को अपने व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के समुचित अवसर प्रदान किये हैं, रूढ़िवादी विचारों से काफी सीमा तक मुक्त किया है, पर्दा-प्रथा को कम तथा बाल-विवाह के प्रचलन को घटाने में योग दिया है।' इस प्रकार अब महिलाएँ रूढ़िवादी सामाजिक बंधनों से मुक्त होने के लिए प्रयत्नशील है। आज अनेक महिलाएँ, महिला संगठनों और क्लबों की सदस्य है और समाज कल्याण के कार्यों में भागीदारी निभा रही है। पारिवारिक क्षेत्र में भी स्त्रियों के अधिकारों और स्वतंत्रता को पूरा महत्त्व मिल रहा है। बच्चों की शिक्षा, परिवार की आय के उपयोग, पारिवारिक अनुष्ठानों की व्यवस्था तथा घर के प्रबंध में स्त्रियों की इच्छा को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है। आज की बदली हुई परिस्थितियों में स्त्री 'दासी' नहीं 'सहयोगिनी' के रूप में अपना महत्त्व स्थापित कर रही है। आर्थिक क्षेत्र में स्त्रियों की सहभागिता भी बढ़ी है। नगरों में निम्न वर्ग की स्त्रियाँ घरेलू कार्य अथवा उद्योगों के माध्यम से कुछ न कुछ कमाती थीं लेकिन अब मध्यम और उच्च वर्ग की स्त्रियाँ भी आर्थिक दृष्टि से कोई काम करना बुरा नहीं समझती। शिक्षा के व्यापक प्रसार, नयी-नयी वस्तुओं के आकर्षण, उच्च जीवन-स्तर बिताने की बलवती इच्छा और बढ़ती कीमतों ने महिलाओं को कोई न कोई काम करने को प्रेरित किया। अब महिलाएँ हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनकर पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। राजनीतिक क्षेत्र में भी महिलाओं ने अपने कदम बढ़ाएँ हैं। पार्लियामेण्ट और विधान मण्डलों में स्त्री प्रतिनिधियों की संख्या और विभिन्न गतिविधियों में उनकी सहभागिता, राज्यपाल, मंत्री, मुख्यमंत्री और यहाँ तक कि प्रधानमंत्री तक के रूप में उनकी भूमिकाओं से स्पष्ट है कि इस देश में शिक्षा के कारण राजनीतिक चेतना दिनों-दिन बढती जा रही है। भारतीय महिलाओं ने राज्यपालों, केबिनेट स्तर के मंत्रियों और राजदूतों के रूप में भी यश प्राप्त किया है। महिलाओं में अब अपने वोट का स्वतंत्र रूप से उपयोग करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। ये स्थिति इस बात की द्योतक है कि स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में उतरोत्तर सुधार और विकास हो रहा है।

स्त्री के जीवन में आए परिवर्तन से आज की स्त्री पुन: अपने खोए गौरव और सम्मान को पाने को उत्सुक है, लेकिन अब उसे पुरानी मान्यताओं और परम्पराओं को स्वीकार करना स्वीकार्य नहीं। यह स्थिति आज समाज के समक्ष एक चुनौती बन गई है, इसलिए डॉ. पणिक्कर का कारण है कि स्त्रियों द्वारा हिन्दू जीवन के सिद्धांतों का पुनर्परीक्षण आज हिन्दू समाज के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। बढ़ती हुई सामाजिक आवश्यकताओं के प्रति उसके मस्तिष्क की जागरूकता पूर्णत: असंतोषजनक, आदर्श के प्रति उनमें बढ़ते हुए क्षोभ, परम्पराओं के नाम पर उन्हें स्वतंत्र जीवन के लिए आवश्यक मौलिक अधिकारों से वंचित रखना, शिक्षा से उत्पन्न होने वाली महत्त्वाकाँक्षा और राष्ट्र के जीवन में सम्मिलित होने और उसके भविष्य का निर्माण करने हेतु चल रहे राष्ट्रीय संघर्ष के दो पीढ़ियों के साहसिक अनुभवों आदि ने उन्हें जीवन के आदर्शों का पुनर्परीक्षण करने की प्रेरणा दी है। पिछले कुछ वर्षों में पारित सामाजिक अधिनियमों ने भी स्त्रियों की निर्योग्यताओं को दूर करने और उनकी स्थिति को ऊँचा उठाने में उल्लेखनीय योग दिया है।

आज शिक्षा से प्राप्त अधिकारों को संरक्षित रखना स्त्री जाति के लिए चुनौती बनता जा रहा है। अत: आवश्यकता इस बात की है कि वर्तमान अधिकारों के संरक्षण हेतु आधुनिक स्त्री को अपनी भूमिका तय करनी होगी, अपने लक्ष्य निर्धारित करने होंगे। उसके लिए उसे परम्परा की जमीन पर खड़े होकर ही प्रगति के मार्ग को चुनना होगा और इस मार्ग पर चलने के लिए स्त्री को पुरुष का सहयोग भी लेना होगा। पुरुष को प्रतिद्वंद्वी नहीं, पूरक अथवा सहगामी मानकर साथ चलना होगा, तभी स्त्री समाज में अपने लक्ष्य को सहज ही प्राप्त कर सकेगी और अपनी छवि का निर्धारण कर सकने में भी सक्षम हो सकेगी। तभी सही अर्थों में स्त्री सम्मान की अधिकारिणी बन सकेगी तथा कहा जा सकेगा –

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में। ❑

(एसोसियेट प्रोफेसर, जी.डी.कॉलेज, अलवर)

उपभोक्तावाद के वशीभूत नारी

स्वतंत्रता और अपनी पहचान बनाने की धुन में उपभोक्तावादी संस्कृति की गुलाम बनती नारी क्या इसका रिवर्स नहीं कर सकती, क्या वह अपनी आन-बान-शान बरकरार रख, घर परिवार को गौरवान्वित करने तथा सबको साथ लेकर बाजारीकरण, वैश्वीकरण को अपने हुनर, अपनी कला को मुनाफे में तब्दील नहीं कर सकती। क्या शिक्षा का इस्तेमाल समाज को शिक्षित व सुनियोजित करने में नहीं किया जा सकता। अपनी सेवाओं द्वारा चाहे डॉक्टर या नर्स बनकर समाज को बहुउपयोगी सेवा उपलब्ध नहीं करवा सकती। हाँ ये सब हो सकता है, आवश्यकता मात्र भौतिकतावाद के पीछे अन्धे होकर भागने में नहीं वरन् त्याग, समर्पण स्वहित व स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ की भावना की है।

❑ **डॉ. इन्दु बाला अग्रवाल**

आँचल में दूध आँखों में पानी, अबला तेरी यही कहानी। इस स्वीकारोक्ति के साथ समाज में नारी स्वतंत्रता व नारी अधिकारों के प्रति जद्दोजहद शुरू हुई, नारी को शोषणमुक्त व शोषण से बचाने हेतु नारी के पक्ष में, कानूनों को कठोर बनाया गया और बराबरी के अधिकार के साथ-साथ आरक्षण जैसे मुद्दों को हवा दी जाने लगी। 'पराधीनता सपनेहूं सुख नाही' सब बन्धनों को तोड़कर नारी अमयार्दित, संस्कारविहिन होकर नैतिकता की सीमा रेखा पार कर आजादी के वातावरण में साँस लेने हेतु इतनी व्यग्र हो उठी कि पोस्टरों, बैनरों, विज्ञापनों और होर्डिंग्स से झाँकती उसकी तस्वीरें सभ्य व्यक्ति को आँखें झुकाने हेतु विवश कर देती है। पाश्चात्य अर्थशास्त्री नक्से ने प्रदर्शन प्रभाव की बात की है उसमें लोग अपने जीवन स्तर को उच्च दिखाने के प्रयास में दूसरे लोगों की जीवन शैली में ढलने का प्रयास करते हैं चाहे वह जीवन शैली उनके पर्यावरण के अनुकूल हो या ना हो। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, समाज में रहता है, हर समाज की अपनी परम्पराएँ और मर्यादाएँ हैं जिसके कारण सामाजिक व पारिवारिक जीवन की नींव टिकी हैं। शुरूआत से ही भारतीय समाज में जीवन को श्रेष्ठतम बनाने हेतु जीवन मूल्यों को अपनाया है, सामाजिक हित को व्यक्तिगत हित के सामने तरजीह दी गई है। त्याग, समर्पण, प्रेम, अनुराग, इच्छाओं के दमन द्वारा एक सभ्य समाज का उदय होता है जिसमें परिवाररूपी वृक्ष फलता-फूलता है और जिसकी छाँव में नन्हीं कलियाँ सुसंस्कारित हो पल्लवित व पुष्पित हो समाज व राष्ट्र की सुरक्षा प्रहरी बनती हैं।

यह सत्य है कि भारतवर्ष की लगभग आधी आबादी स्त्रियों की है और मर्यादाओं और संस्कारों के तहत, पुरुष प्रधान समाज ने उसका जी भर कर शोषण किया है लेकिन आज स्वतंत्रता की आड़ में, उपभोक्तावाद के चलते नारी ही छली जा रही है तथा दूसरी तरफ परिवार व्यवस्था विध्वंस होने के कगार पर खड़ी है। आर्थिक स्वावलम्बन और स्वतंत्रता के नाम पर नारी कुछ भी करने को तैयार है चाहे उसका परिणाम कितना ही घातक क्यों ना हो, छोटे-छोटे मासूम बच्चों को नौकरानियों या क्रेच के भरोसे छोड़ Multi National में काम करने, घर से बाहर 10 से 12 घण्टे रहने यहाँ तक कि दूसरे शहरों की नौकरियाँ भी स्वीकार

कर लेती हैं, जिसका फायदा पुरुष समाज बखूबी उठाता है, वह नारी घर की दहलीज पार कर निकल तो पड़ती है लेकिन परिणाम नन्हीं कलियों को भुगतना पड़ता है। इससे तो घर-परिवार मे रहते हुए, आर्थिक स्वावलम्बन का प्रयास करते हुए, अपनी इच्छाओं, कामनाओं व भावनाओं पर नियन्त्रण करते हुए अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखते हुए परिवार के बोझ को कम करने का प्रयास क्या उचित नहीं है। क्यों भौतिकतावाद के चलते उसने अपनी जीवनचर्या को परिमार्जित कर लिया है, नौकरानियों पर टिकी जीवन शैली, जंक फूड का बढ़ता प्रचलन, पाश्चात्य वस्त्र क्या नारी को वो सम्मान दिलवा पाएगा।

आज हमें अनायास ही अपनी माँ के हाथ से बने लड्डुओं की मिठास, मठड़ियों और कचौरियों की महक वो आम का अचार जिसका घण्टों स्वाद नहीं भूलता था और घर के खान-पान की याद आती है। हमारी माँ कितने मनोयोग से हमारे लिये दिन-रात एक कर स्वेटर, टोपी, मौजे बनाकर स्नेहपूर्वक पहनाती थी, सुन्दर-सुन्दर फ्रॉक सिलती, मनोयोग से घर संवारती, हर क्षण हम अपनी माँ के साथ बाँटते, हमारे हर दु:ख व सुख की संगी, साथी होती। घर स्वर्ग के समान प्रतीत होता, यह जरूर था कि भौतिक सुख-सुविधाओं का अभाव था, परन्तु हमारी माँ ने कभी भी अपनी चादर से बाहर पाँव नहीं निकाले, पिता की तनख्वाह व अनुशासन से घर सुनियोजित व सुव्यवस्थित चल रहा था। पिता व माता दोनों घर-परिवार के प्रति पूर्ण समर्पित थे।

स्वतंत्रता और अपनी पहचान बनाने की धुन में उपभोक्तावादी संस्कृति की गुलाम बनती नारी क्या इसका रिवर्स नहीं कर सकती, क्या वह अपनी आन-बान-शान बरकरार रख, घर परिवार को गौरवान्वित करने तथा सबको साथ लेकर बाजारीकरण, वैश्वीकरण को अपने हुनर, अपनी कला को मुनाफे में तब्दील नहीं कर सकती। क्या शिक्षा का इस्तेमाल समाज को शिक्षित व सुनियोजित करने में नहीं किया जा सकता। अपनी सेवाओं द्वारा चाहे डॉक्टर या नर्स बनकर समाज को बहुउपयोगी सेवा उपलब्ध नहीं करवा सकती। हाँ ये सब हो सकता है, आवश्यकता मात्र भौतिकतावाद के पीछे अन्धे होकर भागने में नहीं वरन् त्याग, समर्पण स्वहित व स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ की भावना की है।

अर्थशास्त्र के पिता कहे जाने वाले एडमस्मिथ के अदृश्य हाथों की शक्ति के सिद्धान्त जिसमें यदि सब अपना-अपना विकास कर लें तो समाज का अपने आप विकास हो जाएगा, उसके स्थान पर सोच बदलकर समाज व राष्ट्र को सहेजना, उनके लिए स्वप्न देखना राष्ट्र व समाज की पहचान में स्वयं की पहचान बनाना या खोजना अपना उद्देश्य बनाना होगा जिससे नारी का वर्तमान स्वरूप उसको गौरवान्वित करने का प्रयास बने न कि उसे कलंकित करने की।

हाँ, यह आवश्यक है कि सदियों पुरानी दासता व शोषण से उसे मुक्ति अवश्य मिलनी चाहिए, पुरुष प्रधान समाज के स्थान पर पुरुष सहयोग आधारित समाज होना चाहिए जिसमें यदि नारी आर्थिक स्वावलम्बन या घर-परिवार की स्थिति सुधारने हेतु कदम उठाती है तो उसकी जिम्मेदारियों का बँटवारा हो, बच्चे भी महत्त्वपूर्ण हैं और पिता द्वारा भी उतने ही त्याग समर्पण की आवश्यकता है। हालाँकि समाज मे बदलाव देखने को मिल रहे हैं पर समाज एकाएक बदलता नहीं हैं। अत: प्रदर्शन प्रभाव से मुक्त होकर सोच व नजरिया बदलना होगा। अन्धानुकरण के स्थान पर आर्थिक व सामाजिक उन्नति को अपनाना होगा। अपने जीवन मूल्यों को अपनाकर, तोड़कर नहीं बल्कि जोड़कर अपनी मर्यादाओं के साथ कुछ कर गुजरने का ज़ज़्बा व हौसला परिवार व समाज को नयी राह दिखा पायेगा। अधिकारों की प्राप्ति से पहले कर्त्तव्य परायणता की और ध्यान देना होगा।

जीते हो किसी ने देश तो क्या
हमने दिलों को जीता है,
जहाँ राम अभी तक है नर में
नारी में अभी तक सीता है। ❑

(पूर्व तदर्थ व्याख्याता,
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर)

शैक्षिक असमानता जो पुरुष और स्त्री शिक्षा में दृष्टिगत हो रही है उसकी दवा भी स्वयं शिक्षा ही है क्योंकि शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य मानव मात्र की वह स्वतन्त्रता है, जो उसके जीवन में पूर्णता की अनुभूति जगा सके, सबके बीच समानता लाए, व्यक्तिगत और सामूहिक आत्मनिर्भरता लाए। इसी से राष्ट्र और समाज की प्रगति संभव हो सकेगी। 2011 का इंदिरा गांधी शान्ति पुरस्कार प्रदान करते समय तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने स्त्री शिक्षा में विषमताओं के पहलू को स्वीकारते हुए कहा कि राष्ट्र की समग्र गतिविधियों में महिलाओं को उचित भागीदारी दिये बिना सामाजिक प्रगति की अपेक्षा रखना बेमानी होगा।

भारत में स्त्री शिक्षा की स्थिति

❑ **डॉ. सुमनबाला**

भारत देश में शिक्षा और व्यवस्था पुरातन है। प्राचीन साहित्य से पता चलता है कि ऐसा कोई भी देश नहीं है जहाँ ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन समय में उत्पन्न हुआ हो। वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय तक हमारी शिक्षा का प्रवाह अविच्छिन रूप से बहता आ रहा है।

भारतीय सभ्यता में हम जितना प्राचीन काल की ओर जाते हैं, नारी का स्थान उतना ही महत्त्वपूर्ण दिखाई देता है। भारत में वैदिक काल सुदीर्घ काल माना जाता है, जिसमें यज्ञों में सम्मिलित होने वाले को बिना किसी लैंगिक भेद के वैदिक शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती थी। इसी प्रकार सिन्धु-घाटी की सभ्यता के निवासी भी अपने बालक-बालिकाओं की शिक्षा के प्रति जागरूक थे। वैदिक युग में स्त्री शिक्षा अपनी उच्चतम सीमा पर थी और स्त्री-पुरुष बिना भेद-भाव के शिक्षा प्राप्त करते थे। स्त्रियाँ बुद्धि और ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी थीं। वे समान शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ, याज्ञिक कर्म-काण्ड में पुरुषों का सहयोग करती थीं और समाज में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान था। बालिकाओं का भी यज्ञोपवीत संस्कार होता था और वे भी ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत करती हुईं शिक्षा प्राप्त करती थीं। तत्कालीन अवशेषों में महिलाओं की शिक्षा के बारे में पता चलता है कि उन्हें संगीत, नृत्यकला एवं ललितकलाओं की शिक्षा दी जाती थी। प्राचीन काल में जहाँ बहुत सी प्रज्ञा सम्पन्न महिलाओं का वर्णन मिलता है वहीं उनके अच्छी योद्धा होने का उल्लेख भी है। जो इस तरफ संकेत करते हैं कि स्त्रियों को सैनिक शिक्षा भी दी जाती थी। प्राचीन भारत की नारियों का अनेक युद्धों में कुशलतापूर्वक भाग लेना और युद्ध विजय में उनके अहम योगदान का वर्णन भी मिलता है।

ये महान विदुषियाँ न केवल शिक्षित थीं अपितु वे बाह्य और आत्म संबंधी गूढ़ दार्शनिक तथ्यों की ज्ञाता भी थीं। इस सम्बन्ध में मैत्रेयी-याज्ञवल्क्य की ब्रह्मगान सम्बन्धी चर्चाएँ और याज्ञवल्क्य-गार्गी संवाद का वर्णन भी प्राचीन साहित्य में पढ़ने को मिलता है। उस काल में नारियाँ न केवल महान धार्मिक यज्ञों में सम्मिलित होकर मन्त्रोच्चार करती थीं अपितु वे दार्शनिक वाद-विवाद (शास्त्रार्थ) में सम्मिलित होकर बुद्धिमत्ता का परिचय भी देती थीं। गोमिल गृह्यसूत्र के अनुसार विवाह के अवसर पर वर और वधू दोनों साथ-साथ मन्त्रोच्चारण करते थे, अतः उस काल की स्त्रियाँ भी शिक्षित होती थीं। जो स्त्रियाँ ब्रह्मचारिणी होना चाहे वे उपनयन धारण कर सकती थीं, अग्निहोम कर सकती थीं और अपने घर पर वेदाध्ययन तथा भिक्षाचर्या कर सकती थीं।

महाकाव्यों में भी जैसे रामायण के काल में कौशल्या और तारा दोनों ही मन्त्रविद् थीं, इसके अतिरिक्त अन्य महान नारियों में अत्रैयी, सुलभा, द्रौपदी, उत्तरा, शकुंतला, सावित्री, शिवा, विदुला, प्रभासभार्या, गौतमी, अरुंधती, शांडिली, दमयन्ती, गंगा, सत्यवती, गांधारी, कुन्ती और माधवी इत्यादि कितने ही नाम सम्मिलित हैं। प्राचीन साहित्य में वर्णित उदाहरणों से हमें पता चलता है कि उस काल में स्त्री शिक्षा भी पुरुष शिक्षा के बराबरी के स्थान पर थी। स्त्रियों को स्वतन्त्र निर्णय करने का अधिकार प्राप्त था और समाज में उन्हें सम्मानित स्थान प्राप्त था। इस काल में धनी और संभ्रांत परिवारों की कन्याओं की शिक्षा का वर्णन भी मिलता है। कालान्तर में धीरे-धीरे स्त्री शिक्षा और उनका शैक्षिक स्तर पतनोन्मुख होता चला गया। इसके कारण चाहे जो भी रहे हो परन्तु स्त्री शिक्षा में आई कमी के कारण समाज पितृसत्तात्मक होता चला गया जिसके फलस्वरूप महिलाएँ ज्ञान के विकास और प्रसार के अधिकार से वंचित होती चली गयी। इससे इस प्रकार की परम्पराओं और रूढ़ियों का निर्माण हुआ जिसमें स्त्री न केवल शिक्षा के अधिकार से दूर होती गयी अपितु उसकी स्वायत्तता भी संकुचित होती हुई एक पराधीन जीवन जीने के लिए आभिशिप्त हो गई। इस

पितृसत्तात्मकता के प्रभावस्वरूप उसी के अनुरूप धार्मिक कर्मकाण्ड और विश्वास उत्पन्न हुए, जैसे पुत्र जन्म व पुत्र प्राप्ति के आशीर्वाद को एक विशेष मान्यता प्राप्त हो गई। प्राचीन भारत में जहाँ शिक्षा के मुख्य आदर्श और उद्देश्य ईश्वर भक्ति, आध्यात्मिकता, धार्मिकता की भावना, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, नागरिक एवं सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन, सामाजिक कुशलता की उन्नति एवं राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण था वहीं इस परिवर्तित स्वरूप में स्त्री शिक्षा केवल गृहस्थ जीवन और उसके संचालन तक सिमट कर रह गयी। वैदिक काल में जहाँ स्त्रियाँ प्रजातान्त्रिक तरीके से सभाओं में उपस्थित होकर प्रशासनिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करना सीखती थीं वहीं वह अब घर व पर्दे में सिमट कर रह गईं। इस प्रकार ऐसी सामाजिक मान्यताओं की शुरूआत हुई जो जेंडर पक्षपात को बढ़ावा देती थी। जिससे जेंडर अन्तराल निरन्तर बढ़ता चला गया। वर्तमान में भी जेंडर अंतराल की समस्या बनी हुई है और 2011 की जनसंख्या की अंतिम रिपोर्ट के अनुसार जहाँ वर्ष 1901 में साक्षरता वृद्धि दर पुरुषों की 9.83 प्रतिशत और स्त्रियों की 0.60 प्रतिशत थी वह 2011 में पुरुषों की 82.14 प्रतिशत और स्त्रियों की 65.46 प्रतिशत हो गई। पुरुष और स्त्री साक्षरता दर की वृद्धि का यह 16.68 प्रतिशत का अन्तर स्त्री शिक्षा में जेंडर अंतराल की समस्या की ओर संकेत करता है। आजादी के बाद से इस अन्तराल को पाटने और स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रयास किये जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण प्रयास निम्नलिखित रहे हैं।

- विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) ने स्त्रियों के शैक्षिक अवसर बढ़ाने एवं पुरुष शिक्षा के नकलची दृष्टिकोण के स्थान पर ऐसी शिक्षा देने की बात कही जिससे अच्छी व सफल महिला बन सकें।
- माध्यमिक शिक्षा आयोग (1052-53) लड़कियों को गृह विज्ञान की शिक्षा के लिए विशेष सुविधाएँ देने व पृथक विद्यालय खोलने की अनुशंषा की।
- भारत सरकार द्वारा गठित दुर्गाबाई देशमुख समिति (1957) ने न्यून अवधि में पुरुष और स्त्री शिक्षा के मध्य दूरी को पाटने का सुझाव दिया।
- भक्तवत्सलम समिति (1963) के सुझाव के अनुसार शिक्षा की पहुँच का स्तर (दूरी के परिप्रेक्ष्य में) महिला शिक्षा पर प्रभाव डालता है। इसीलिए प्रत्येक 300 की आबादी पर एक प्राइमरी स्कूल, हर 3 मील की दूरी पर एक जूनियर हाई स्कूल तथा 5 मील की दूरी पर एक माध्यमिक स्कूल होना चाहिए।
- हंसा मेहता समिति (1964) के प्रतिवेदन में जेंडर के आधार पर पाठ्यक्रम का विरोध किया और कहा कि प्राथमिक स्तर पर एक समान पाठ्यक्रम और माध्यमिक स्तर पर विभिन्न पाठ्यक्रमों की व्यवस्था का सुझाव दिया।
- कोठारी आयोग (1964-66) के प्रतिवेदन में स्त्री शिक्षा के विगत सभी प्रयासों का समर्थन करते हुए कहा कि राज्य एवं केन्द्रिय सरकारों को विशेष योजनाओं, अभिप्रेरकों एवं पर्याप्त धन की व्यवस्था कर स्त्री शिक्षा के क्षेत्र की सभी बाधाओं को दूर करने का निश्चय करना चाहिए।
- फुलरेनू गुहा समिति (1971-74) ने शिक्षा के सभी क्षेत्रों पर 'सह-शिक्षा' पर बल दिया।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने स्त्री साक्षरता के मार्ग में सभी अवरोधों को दूर करते हुए विभिन्न तकनीकी एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में स्त्रियों की सहभागिता बढ़ायी जाये का सुझाव दिया।
- आचार्य राममूर्ति समिति (1990) ने शिक्षा में स्त्री की समानता के लिए माध्यमिक स्तर पर शिक्षा में 50 प्रतिशत महिला अध्यापक लगाने की बात कही।
- प्रोग्राम ऑफ एक्शन (1992) में स्त्रियों की पदवी सुधार हेतु शिक्षा की अभिकर्ता भूमिका को स्वीकारते हुए वंचितों की शिक्षा के लिए समावेशी प्रयासों पर बल दिया।
- महिला शिक्षा व कॉमन स्कूल सिस्टम पर केब की गठित कमेटी (2004) ने सुझाव दिया कि प्रत्येक शैक्षिक संस्थान महिला शिक्षक रखेगा तथा संस्थानों में जेंडर संवेदनशीलता का वातावरण विकसित करने पर जोर दिया जाए।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में शिक्षा में जेंडर असमानता को स्वीकारते हुए कहा गया कि शिक्षा उन व्यवस्थाओं का अटूट अंश है जो बच्चों का जीवन तय करती है। इसलिए समान नागरिकता प्राप्त करने, विशेषकर लड़कियों को कमियों से उबारने व अधिकारों का प्रयोग करने की क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम व अध्यापन कला की विशेष रणनीतियां तैयार करनी होगी।

शिक्षा के अधिकार अधिनियम (2009) के अन्तर्गत 6-14 वर्ष के सभी बालकों को नि:शुल्क अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान रखा गया है। इसके फलस्वरूप बालिकाओं के विद्यालय में नामांकन में तेजी आयी है।

बालिका अनिवार्य शिक्षा एवं कल्याण विधेयक - 2001 भी बालिकाओं की अनिवार्य शिक्षा को प्रबंधित करता ही। बाल विवाह निषेध अधिनियम 1976 और स्त्री अशिष्ट निरूपण अधिनियम - 1986 भी स्त्री शिक्षा के बढ़ावा देकर उनके अधिकारों के संरक्षण में सहायक है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15

और 16 के मौलिक अधिकार तथा भारतीय संविधान के अनुच्छेद 38 व 39 राज्य नीति निर्देशक सिद्धान्तों द्वारा अधिकारपूर्वक शिक्षा में भेदभाव को निषेध करता है। संविधान में शिक्षा में समानता के साथ-साथ 1999 में 73वें व 74वें संशोधन में त्रिस्तरीय व्यवस्था में पंचायती राज व शिक्षा में एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित कर दी गई हैं। इसके अलावा बालिकाओं के लिए आवासीय विद्यालय (कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय), छात्रवृत्ति योजनाएं, एकल बालिका शिक्षा योजना, रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण योजनाएँ, विमेन्स इंटीग्रेटिड लर्निंग फॉर लाईफ योजना, किशोरी शक्ति योजना, बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाएँ बालिकाओं और स्त्री शिक्षा के लिए चलाई गई हैं। पृथक-पृथक राज्यों में भी अलग-अलग योजनाएँ बालिका शिक्षा, उनके सशक्तीकरण और लैंगिक अन्तराल समाप्त करने के लिए क्रियान्वित की गई हैं। परन्तु देश की आजादी के सात दशक बीत जाने के बाद और अनेक नीतिगत, योजनागत, विधिक सहित संस्थागत प्रयासों की लंबी सूची के बाबजूद स्त्री शिक्षा की स्थिति और साथ ही उसकी सामाजिक स्थिति चिंताजनक ही कही जा सकती है।

स्वतन्त्रता दिवस पर 2014 में देश के प्रधानमंत्री ने स्त्री की समाज में स्थिति और पुरुषों की तुलना में उसकी असमान शिक्षा स्थिति को देखते हुए कहा कि ''डिग्निटी ऑफ विमेन'' के लिए कार्य करना हम सबका दायित्व है। स्थिति इतनी गंभीर है कि शिक्षा के अलावा उसके अस्तित्त्व को बचाने हेतु ''बेटी बचाओ, बेटी बढ़ाओ'' जैसी महत्त्वाकांक्षी योजना का शुभारम्भ किया गया। आज भी भारतीय स्त्रियाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिति पर पिछड़ी हुई हैं। स्त्रियों की राष्ट्र की उत्पादकता में बराबर की भागीदारी होने के बावजूद माध्यमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा व तकनीकी शिक्षा में बालिकाओं के प्रतिशतांक में व्यापक विरोधाभास होना समस्या की गंभीरता व व्यापकता को दर्शाता है। वैश्विक जेंडर असमानता सूचकांक (2015) के अनुसार ''भारतीय महिलाओं की स्थिति पिछले सालों की तुलना में सुधरी है लेकिन शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक मोर्चे पर पीछे रह जाने का कारण उनका महिला होना ही है। समस्त योजनाओं, संवैधानिक प्रावधानों के बावजूद आज भी शिक्षा व्यवस्था में जेंडर तथा सामाजिक समानता के मुद्दों की दृष्टि से ऐसे ढांचे की जरूरत है, जो इसके सम्बन्धित विविध दोषों को प्रत्यक्ष करते हुए दूर कर सके। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा -2005 के मार्गदर्शक सिद्धान्त में इस तथ्य को स्वीकार गया कि जेंडर, जाति, भाषा, संस्कृति, धर्म या असमर्थता से जनित असमानताओं के परिणाम-स्वरूप शिक्षा में आई प्रतिकूलताओं को सीधे सम्बोधित करने की आवश्यकता है, केवल नीतियों और योजनाओं के माध्यम से ही नहीं, बल्कि शिक्षारम्भ से ही शिक्षा शास्त्रीय अभ्यासों के माध्यम से भी शिक्षा में समानता के मानक गढ़े जाएँ। अत: शिक्षा को ऐसा होना चाहिए कि वह बालिकाओं को ऐसा सामर्थ्य दे सके कि असमान समाजीकरण के अपने नुकसान की भरपाई कर सके और अपनी क्षमताओं को इस प्रकार विकसित कर सके कि आगे चलकर वे स्वायत और समान नागरिक बन सके।''

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2005 के फोक्स समूह ने तर्क दिया कि शिक्षा उन व्यवस्थाओं का अटूट अंग है, जो स्थायी व समान नागरिकता प्राप्त करने हेतु पाठ्यक्रम एवं अध्यापन कला संबंधी विशेष रणनीतियाँ तैयार करेंगी ताकि बच्चे विशेषकर लड़कियाँ कमियों से उबरने एवं अपने अधिकारों व पसंदों के प्रयोग करने के कौशल विकसित कर सके। एन.सी.एफ.-2005 के पोजिशन पेपर ऑन जेंडर इश्यूज इन एजुकेशन का सार भाव भी यह है कि आज ऐसे शिक्षाशास्त्र व शैक्षिक व्यवस्थाओं की आवश्यकता है जो लिंग, वर्ग, जाति एवं भौगोलिक असमानताओं के प्रति संवेदनशील व जागरूक हो। अधिक संख्या में स्कूल खोलने, सुदृढ़, बुनियादी ढ़ाँचा खड़ा करने, सार्वभौमिक नामांकन करने, सतर्क निगरानी रखने, पूर्वाग्रह मुक्त पाठ्यक्रम विकसित करने, जेंडर संवेदनशीलता आधारित ज्ञान के विकास के नीतिगत, योजनागत, विधिक एवं संस्थागत प्रयासों के साथ जन-सहभागिता के संबलन से समतामूलक शैक्षिक वातावरण का निर्माण करना अनिवार्य है। शैक्षिक असमानता जो पुरुष और स्त्री शिक्षा में दृष्टिगत हो रही है उसकी दवा भी स्वयं शिक्षा ही है क्योंकि शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य मानव मात्र की वह स्वतन्त्रता है, जो उसके जीवन में पूर्णता की अनुभूति जगा सके, सबके बीच समानता लाए, व्यक्तिगत और सामूहिक आत्मनिर्भरता लाए। इसी से राष्ट्र और समाज की प्रगति संभव हो सकेगी। 2011 का इंदिरा गांधी शान्ति पुरस्कार प्रदान करते समय तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने स्त्री शिक्षा में विषमता के पहलुओं को स्वीकारते हुए कहा कि राष्ट्र की समग्र गतिविधियों में महिलाओं को उचित भागीदारी दिये बिना सामाजिक प्रगति की अपेक्षा रखना बेमानी होगा। शिक्षा ही महिलाओं में सही दृष्टिकोण, सही विचार और सही निर्णय लेने की क्षमताएँ पैदा कर सकती है अत: महिलाओं की शिक्षा आवश्यक ही नहीं अनिवार्य होनी चाहिए।❑

(व्याख्याता, हरिभाऊ उपाध्याय महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, हटूण्डी, अजमेर)

उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव

❑ श्रीमती दीप्ति चतुर्वेदी

उपभोक्तावाद की अवधारणा अर्थशास्त्र से जुड़ी हुई है। वर्तमान समय में दुनिया भर में बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ चौबीसों घण्टे, सातों दिन उत्पादन करने में लगी हुई है। उत्पादन व उपभोग का संतुलन बनाना इन बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठानों में मोटे वेतन पर कार्य कर रहे अर्थशास्त्रियों के लिए चुनौती है। यहीं उपभोक्तावाद का प्रभाव परिलक्षित होता है। कुशल व्यवसाय प्रबंधकों ने इसका हल निकाल लिया है, यह हल है- भारतीय नारी।

भारत विश्व में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था है। पिछले कुछ वर्षों तक पूर्ण रूप से कृषि पर निर्भर रही भारतीय अर्थव्यवस्था अब मध्यम वर्ग या नौकरी पेशा लोगों के बलबूते पर दिन दूनी रात चौगुनी छलांग लगा रही है। भारत में विश्व की सभी बड़ी कम्पनी को एक बाजार नजर आता है। 125 करोड़ लोगों एवं विश्व में सर्वाधिक युवाओं वाला हमारा देश एक विशाल बाजार है। हमारे देश के मध्यमवर्ग में महिलाएँ भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है एवं उपभोक्ता के रूप में नारी पुरुषों के मुकाबले ज्यादा उत्साही एवं प्रभावी नजर आती है। आधुनिक भारतीय नारी के इसी रूप के कारण वह देखते ही देखते उपभोक्तावादी संस्कृति का केन्द्र बिन्दु बन गई है।

भारतीय नारी को उपभोक्तावादी संस्कृति के केन्द्र में एक सोची समझी रणनीति के तहत लाया गया है। इसे बढ़ावा देने में विज्ञापनों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। टेलीविजन चालू करते ही या इंटरनेट शुरू करते ही विभिन्न सोशल साइट पर अनगिनत विज्ञापनों की शृंखला शुरू हो जाती है। साबुन, शैम्पू, हेयर कलर, मेक अप प्रोडक्ट्स, घी, तेल, चॉकलेट और मसाले से लेकर पुरुषों की शेविंग क्रीम, रेजर, परफ्यूम और मोटर साइकिलों के विज्ञापनों में महिलाएँ इठलाती नजर आती है। दिन रात टेलीविजन पर आने वाले विज्ञापन और उनमें दिखाई देने वाली महिलाओं द्वारा एक निश्चित उत्पाद को खरीदने का आग्रह सहज ही लोगों को प्रभावित करता है।

भारतीय नारी जहाँ एक ओर उपभोक्तावाद को बढ़ावा देने में ब्रह्मास्त्र साबित हो रही है वहीं दूसरी ओर वह स्वयं उपभोक्तावाद की सबसे बड़ी शिकार है। आज विश्व भर के निर्माता अपने उत्पाद की सफलता के लिए भारत की ओर आस लगा कर बैठे रहते हैं। दुनिया के तमाम बड़े ब्राण्ड से भारतीय बाजार अटे पड़े हैं। ऐसे उत्पादों को बेचने के लिए कम्पनियाँ महिलाओं के स्वाभाविक गुण, ईर्ष्या या ममता का सहारा लेते हैं। जब एक भारतीय स्त्री यह ईर्ष्या करती है कि सामने वाली महिला की साड़ी उसकी साड़ी से ज्यादा सफेद कैसे है तो वह एक

भारतीय नारी जहाँ एक ओर उपभोक्तावाद को बढ़ावा देने में ब्रह्मास्त्र साबित हो रही है वहीं दूसरी ओर वह स्वयं उपभोक्तावाद की सबसे बड़ी शिकार है। आज विश्व भर के निर्माता अपने उत्पाद की सफलता के लिए भारत की ओर आस लगा कर बैठे रहते हैं। दुनिया के तमाम बड़े ब्राण्ड से भारतीय बाजार अटे पड़े हैं। ऐसे उत्पादों को बेचने के लिए कम्पनियाँ महिलाओं के स्वाभाविक गुण, ईर्ष्या या ममता का सहारा लेते हैं। जब एक भारतीय स्त्री यह ईर्ष्या करती है कि सामने वाली महिला की साड़ी उसकी साड़ी से ज्यादा सफेद कैसे है तो वह एक निश्चित ब्राण्ड का प्रयोग करने का निश्चय कर लेती है, यही उपभोक्तावाद आम भारतीय महिलाओं के मन मस्तिष्क पर हावी हो जाता है।

निश्चित ब्राण्ड का प्रयोग करने का निश्चय कर लेती है, यही उपभोक्तावाद आम भारतीय महिलाओं के मन मस्तिष्क पर हावी हो जाता है।

वर्तमान समय में खेल भी उपभोक्तावादी संस्कृति के शिकार बन चुके हैं। क्रिकेट प्रतियोगिताओं के दौरान मैदान में भी चीयर गर्ल्स का जलवा देखने को मिलता है। उनका आकर्षण बरबस ही लोगों को महँगा टिकट खरीदकर मैदान तक ले आता है। आज ओलम्पिक जैसी प्रतियोगिताओं में मैडल जीतने वाली महिला खिलाड़ी टेलीविजन पर जब विभिन्न प्रकार के दर्द निवारक मरहम या अन्य उत्पादों के विज्ञापन में नजर आती है एवं अपने द्वारा प्रायोजित की जाने वाली कम्पनी के व्यापार में वृद्धि का जरिया बन रही है।

उपभोक्तावाद को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न क्षेत्रों जैसे खेल, सिनेमा, नृत्य, संगीत, मॉडलिंग या सौन्दर्य प्रतियोगताओं में एक मुकाम हासिल कर चुकी महिलाओं का सहारा लिया जाता है, हमारे देश की अन्य महिलाओं के लिए ये रोल मॉडल होती है। आम महिला के मन में भी कहीं न कहीं उनके समान दिखने या रहने की उत्कण्ठा होती है तथा विज्ञापन से प्रभावित होकर वस्तु को खरीद लिया जाता है चाहे उसका वास्तविक उपयोग हो या न हो।

आज विभिन्न चैनलों पर आने वाले अनगिनत धारावाहिकों में भी उपभोक्तावादी स्त्री की छवि उजागर होती है। सुन्दर केश सज्जा, डिजायनर वस्त्राभूषण और साज श्रृंगार में द्विअर्थी संवाद और षड्यन्त्रकारी अंदाज वाली महिलाएँ सज-धज कर टेलीविजन के माध्यम से तथाकथित प्राइम टाइम में आपके ड्राइंग रूम में कब्जा जमा लेती है। फिर शुरू होती है उनके अनुसरण करने की होड़, महिलाएँ उनके पहनावे से लेकर आभूषण तक बड़े गौर से देखती है तथा अगले दिन बाजार में उन उत्पादों को खरीदने पहुँच जाती है।

आधुनिक समय में तकनीक ने उपभोक्तावाद को पंख लगा दिए हैं। जहाँ पहले घरों में आदर्श महिलाओं की बात होती थी तो सीता, राधा, मीरा या मैत्रेयी, गार्गी जैसी विदुषी का नाम लिया जाता था लेकिन आज आदर्श महिलाओं के जिक्र में भी धारावाहिक में आने वाली महिलाओं की चर्चा होती है कि फलां धरावाहिक में वह बहू कितनी अच्छी है या फलां धरावाहिक में सास ननद बहुत खराब। धारावाहिक या सिनेमा स्वयं एक उत्पाद है जिनको उपभोक्ता के रूप में दर्शकों की आवश्यकता होती है जिसमें भारतीय महिलाओं को बखूबी उपयोग किया जा रहा है। वर्तमान समय में बड़े और छोटे पर्दे की चकाचौंध में भारतीय समाज की महिमामयी स्त्री, माँ, बहन, पत्नी या पुत्री कहीं दिखाई नहीं देतीं, जो अपार सम्मान की अधिकारिणी मानी जाती थीं।

आज छोटे-छोटे शहरों में ब्यूटी क्वीन, मिसेज ब्यूटीफुल जैसी प्रतियोगिताएँ, मॉडलिंग कार्यक्रम, ग्लेडरेस व किंगफिशर जैसे केलेन्डरों पर छपी ऐसी तस्वीरें युवतियों में ग्लैमर के प्रति आकर्षण को निरन्तर बढ़ा रही है। शारीरिक सौन्दर्य को निखारने की तीव्र आकाँक्षा, भौतिक समृद्धि की लालसा महिलाओं को अनैतिक कार्यों में झोंक रही है। बाजार में ऐसे उत्पादों की कमी नहीं है जो यह बताते हैं कि सात दिन में कोई सांवली स्त्री एकदम गोरी हो सकती है या पन्द्रह दिनों में कोई मोटी महिला छरहरी काया की स्वामिनी बन सकती है। ऐसे उत्पाद अन्य उत्पादों की तुलना में ज्यादा कमाई देने वाले होते हैं। स्वयं के रूप को निखार कर अपनी रोल मॉडल के जैसे दिखने के चक्कर में महिलाएँ मोटी रकम खर्च कर देती है।

विज्ञापन निर्माता या उपभोक्तावाद को बढ़ावा देने वाले मनुष्य के मनोविज्ञान का सहारा लेते हैं। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि मानव विपरीत लिंग के प्रति स्वाभाविक रूप से आकर्षित होता है ऐसे में कुछ ऐसे उत्पाद जो पूर्ण रूप से पुरुषों के लिए बने होते हैं उनको बेचने के लिए भी विज्ञापनों में महिलाओं का सहारा लिया जाता है। यही कारण है कि महिलाएँ भी बेधड़क पान मसाले व तम्बाकू जैसे विज्ञापनों में दिखाई देती है। यही नहीं विभिन्न सोशल साइट्स पर सेलिब्रिटिज को विभिन्न प्रकार के चश्में, टॉप, जीन्स, जूते एवं पर्स के साथ दिखाया जाता है तथा वहाँ यह बताना भी कभी नहीं भूलते हैं कि यह कौनसा ब्राण्ड है तथा उसकी कीमत कितनी है। उनके अनुसरण के लिए महिलाएँ उन ब्राण्ड की खरीददारी भी बेहिचक करती है तथा उपभोक्तावाद की शिकार बन जाती है।

उपभोक्तावाद का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर ऐसा पड़ा की इसने नारी को वस्तु बना दिया, उसके सामने एक चकाचौंध करने वाला बाजार है जिसके आकर्षण में वह सुध-बुध खो चुकी है। घर, परिवार, संवेदनाएँ, रिश्ते-नाते सब उसके लिए बेमानी होते जा रहे हैं। भौतिकता उस पर हावी हो चुकी है। निश्चित ही आज देवी स्वरूपा लक्ष्मी, दुर्गा या त्यागमयी स्त्री का युग नहीं है परन्तु क्या स्त्रीत्व के मायने भी बदल गए हैं। उपभोक्तावाद के जहर ने भारतीय नारी को लील लिया है परन्तु भारत जैसे पारम्परिक रूप से समृद्धशाली देश में इसे स्वीकार करना असह्य हैं। हमारी संस्कृति एवं स्त्री जाति के गौरव के प्रति आधुनिक नारी का मोह या आस्था खत्म होने के कगार पर है।

भारतीय संस्कृति भारतीय नारी की गरिमा और गौरव इतनी समृद्धिशाली रही है कि भारतीय नारी को वैश्विक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करना चाहिए। परन्तु उपभोक्तावाद के दलदल में वह अस्तित्व खोती जा रही है। संसार केवल भौतिक वस्तुओं का बाजार मात्र नहीं है। मानव जीवन केवल विषय वासना या भोग के लिए नहीं है। मावन जीवन अमूल्य है। भारतीय नारी को उपभोक्ता या वस्तु के रूप में अपनी पहचान की सार्थकता को बदलना होगा और प्राचीन संस्कृति के गौरव महिमा और आस्था को फिर से जगाना होगा। ❑

(सहायक आचार्य -राजनीति विज्ञान, राजकीय बांगड स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पाली, राजस्थान)

भगिनी निवेदिता का योगदान

❑ प्रो. मधुर मोहन रंगा

निवेदिता ने देश के पुनर्जागरण के लिए राष्ट्रीयता की भावना का उदय और सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को उत्कृष्टता तक पहुँचाने के साथ वैज्ञानिक योगदान में भी अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया। उन्होंने श्री जगदीश चंद्र बोस के वैज्ञानिक योगदान का प्रकाशन ब्रिटिश विज्ञान शोध पत्रों में प्रकाशित कराये ताकि उन्हें वैश्विक स्तर पर मान्यता मिले। उल्लेखनीय है कि बोस ने विज्ञान व तकनीकी शोध में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान कर भारत की सेवा की। जन जागरण हेतु निवेदिता ने भारतीय पत्र-पत्रिकाओं में समसामयिक विषयों पर लेख लिखे व संदेश दिया कि समस्याओं का सामना करे, हृदय में निर्बलता न लायें व भारतीय शिक्षा का प्रचार-प्रसार करें। राष्ट्रीयता की भावना मन में संजोकर देश के समग्र विकास में योगदान प्रदान करे।

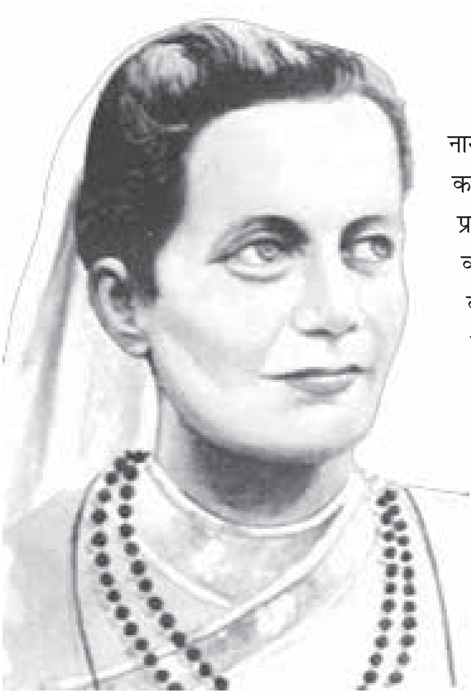

राष्ट्र के सम्पूर्ण विकास में देश की सभ्यता, संस्कृति, इतिहास, धरोहर के साथ-साथ राष्ट्र भक्तों, महापुरुषों, ऋषियों, मुनियों, वैज्ञानिकों, समाज सुधारकों आदि के साथ-साथ प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में न जाने कितने राष्ट्र-प्रेमियों का योगदान होता है। परन्तु मानव-चेतना के अभ्युदय के क्रमिक विकास हमेशा मातृशक्ति, जो विभिन्न रूपों में समाज में विशिष्ट भूमिका का निर्वहन करती है जैसे अध्यात्म चिन्तन में गार्गी, मैत्रेयी, आम्भ्रणी का उल्लेख है, मातृत्व के क्षेत्र में मदालसा का नाम अग्रिम पंक्ति में है। अहिल्या, आथेयी, अंजना, कैकेयी, सुमित्रा, लक्ष्मी बाई, चाँद बीबी, रजिया, दुर्गावती, हाडारानी आदि के मातृत्व, पत्नीत्व, वीरत्व को ऐतिहासिक गौरव प्राप्त है। बचपन से ही राष्ट्रभक्ति का पाठ पढ़ाने हेतु भारतीय वीर माताएँ पालने में झुलाते हुए बालकों के मस्तिष्क में राष्ट्र प्रेम की भावना भरती है-

इला न देणी आपणी, हालरिये हुलाराय।
पूत सिखावे पालणे, मरण बढ़ाई माय।।

(सूर्यमल मीसण, कृत वीर सतसई)

अतः पाठ्यक्रम व पाठ्यचर्या में भारतीय नारी प्रतिमा को समाविष्ट किया गया है, जिसके कारण जीवन मूल्यों व नैतिकता का अनवरत प्रवाह हो रहा है। प्रस्तुत आलेख में भगिनी निवेदिता का भारत के पुनर्जागरण में योगदान को लिखने का प्रयास किया गया है। ऐसी भारतीय प्रतिमा के योगदान को पाठ्यक्रम व पाठ्यचर्या में शामिल करना समीचीन होगा।

भारतीय प्राचीन इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस वसुन्धरा पर, आर्यावर्त में, प्रत्येक समय व काल में प्रतिभा सम्पन्न मनीषियों, विदुषियों, महापुरुषों, ऋषियों, मुनियों ने जन्म लिया है। कालान्तर में उन्होंने अपने कृतित्व, व्यक्तित्व, समर्पण व सेवाओं के द्वारा महत्त्वपूर्ण कार्य, व्यक्ति, समाज व देश के लिए सम्पादित किये। निःस्वार्थ भाव से व सम्पूर्ण मनोयोग से कार्य निष्पादन के बाद महाप्रयाण कर गये। ऐसे ही सर्वगुण सम्पन्न व श्रेष्ठ व्यक्तित्व की धनी थीं, विदुषी भगिनी निवेदिता। वे एक राष्ट्र भक्त के साथ भारत में शिक्षा, पुनर्जागरण, सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय निर्माण के लिए एक समर्पित व्यक्तित्व थीं। देश के सर्वांगीण विकास की चिंता को लेकर उनका देश के समग्र विकास का चिंतन व योगदान आज भी हमें दिशा प्रदान करता है। निवेदिता का भारत के पुनः निर्माण में योगदान इसी बात से परिलक्षित होता है कि स्वयं स्वामी विवेकानन्द जी ने भगिनी निवेदिता को अभिप्रेरित करते हुए संदेश दिया कि वह दिव्य गुणों का समुच्चय है जिसमें माँ का ममत्व भरा हृदय, किसी नायक की दृढ़ इच्छा शक्ति, दक्षिण-पश्चिम हवाओं की मीठी बयार, जो मधुरता से परिपूर्ण है, और जिस हृदय में पवित्रता और सम्मोहन शक्ति निवास करती है। निवेदिता को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी कहते हैं कि उनमें आर्यों की

वेदिकाओं की ज्वलन्त ज्वालाएँ हैं और कामना करते हैं कि यह सब तुम्हारा हो, जिसकी किसी पुरातन पुरुष ने कल्पना भी न की हो, सब तुम्हारा है, भारत का भविष्य तुम्हारी संतान हो क्योंकि तुम स्वामिनी, सेविका, सखी की प्रतिमूर्ति हो। तुम भारत की आगत संतान की प्रेरणा हो। (आत्मप्रना पृ.118)

Swami Conveyed to Nivedita.
''The mother's heart the hero's will,
The sweetness of southern breeze,
The sacred charm and strength that,
On aryan Altars flaming, free;
All those be yours, and many more
No ancient soul could dream
before ……
Be thou to india's future son
The mistress, servant, friend in one,''

(Atmaprana p.11 8.)

उपर्युक्त सन्देश स्वामी जी की राष्ट्रवादी भावनाओं को दर्शाता है, जिसमें उन्होंने अपनी प्रिय शिष्या निवेदिता को भारत के पुनःनिर्माण हेतु आह्वान किया। निवेदिता ने 24 जुलाई 1902 को मिस मैक्लेओड (Maclcod) को पत्र मे लिखा कि राष्ट्रीय पुनर्जागरण में महिलाओं व पुरुषों का पूर्ण सहयोग व सहभागिता होनी चाहिए इसलिए मेरा कार्य राष्ट्रीय जागरण है न कि कुछ महिलाओं को जागृत करना। (Sankari Prasad Basu (ed): Letters of Sister Nivedita Vol I, Calcutta, 1982, p. 482) यह पत्र यही दर्शाता है कि निवेदिता ने सम्पूर्ण मनोयोग से राष्ट्र निर्माण का बीड़ा उठाया, उन्हें यह स्पष्ट हो गया कि सभी के सहयोग से ही समग्र विकास सम्भव होगा। स्वामी जी ने यही महसूस किया कि सिर्फ लड़कियों के लिए पाठशाला चलाने से ही सम्पूर्ण विकास नहीं होगा। उन्होंने अपनी आत्म प्रेरणा व दिव्य दृष्टि से निवेदिता में उन सभी गुणों का दर्शन किया जिसे उन्होंने निवेदिता को लिखे पत्र में दर्शाया है। उन्हीं गुणों का स्मरण कराकर उन्होंने भारत के पुनर्जागरण की आधारशिला रखी। स्वामीजी व निवेदिता के सामान्य वार्तालाप में भी यह भाव रहता था कि इस आर्यावर्त का किस प्रकार से विकास हो,जैसा स्वामी जी ने निवेदिता से कहा ''My mission is not Ramakrishna's nor Vendanta's nor anything,but simply to bring manhood to my people, निवेदिता ने जवाब दिया I will help you, Swami स्वामी जी ने कहा I know it'' स्वामी जी के विचारों का ही प्रभाव था जिसके कारण निवेदिता ने 1902 से 1922 तक राष्ट्रीय जागरण में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। स्वदेशी आन्दोलन के सहयोग के साथ 1905 में कर्जन द्वारा बंगाल के विभाजन के विरोध में भी सक्रिय योगदान दिया।

श्री महर्षि अरविन्द ने लिखा है कि 'भगिनी निवेदिता से मेरे संबंध राजनीति के क्षेत्र में रहे हैं मैं उनसे बड़ौदा में मिला जब वे व्याख्यान देने आई थीं। उस समय मैं बंगाल में क्रांतिकारी कार्य कुछ दूतों से करा रहा था। वहाँ क्रांतिकारियों के अलग-अलग समूह थे मैंने उन्हें मिलाने का प्रयास किया, बैरिस्टर पी. मित्रा के नेतृत्व में व केन्द्रीय परिषद् के अंतर्गत जिसके पाँच सदस्यों में से एक निवेदिता थी। उपर्युक्त कथन इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि भगिनी निवेदिता का गुप्त क्रांतिकारी उद्देश्य के लिए योगदान था। उन्होंने बंगाल विभाजन के विरोध के साथ-साथ ब्रिटिश सामग्री का बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं के वितरण पर अधिक बल दिया। उन्होंने स्वदेशी व बहिष्कार को एक साथ जोड़ा। उनके अनुसार स्वदेशी समितियाँ बनाई औद्योगिक उपक्रमों के साथ वस्तुओं की जानकारी हो, इससे स्वदेशी उत्पादों को प्रोत्साहन मिलेगा व विदेशी वस्तुओं के उपयोग को धक्का लगेगा, मुख्य रूप से स्थानीय दूकानों पर। स्वदेशी उत्पादों की खरीदी व उपयोग के कारण ही राष्ट्रीय भावना जागृत होती है। स्वदेशी उत्पादनों के कारण कौशल विकास को प्रोत्साहन मिलता है। अतः कौशल विकास के कारण सकल घरेलू उत्पाद बढ़ता है, आय का सृजन व प्रवाह होता है इससे देश की समृद्धि के साथ-साथ राष्ट्रीय विचारों का उदय होता है। अतः निवेदिता का स्वदेशी चिंतन आज के परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक हैं।

निवेदिता ने देश के पुनर्जागरण के लिए राष्ट्रीयता की भावना का उदय और सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को उत्कृष्टता तक पहुँचाने के साथ वैज्ञानिक योगदान में भी अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया। उन्होंने श्री जगदीश चंद्र बोस के वैज्ञानिक योगदान का प्रकाशन ब्रिटिश विज्ञान शोध पत्रों में प्रकाशित कराया ताकि उन्हें वैश्विक स्तर पर मान्यता मिले। उल्लेखनीय है कि बोस ने विज्ञान व तकनीकी शोध में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान कर भारत की सेवा की। जन जागरण हेतु निवेदिता ने भारतीय पत्र-पत्रिकाओं में समसामयिक विषयों पर लेख लिखे व संदेश दिया कि समस्याओं का सामना करें, हृदय में निर्बलता न लायें व भारतीय शिक्षा का प्रचार-प्रसार करें। राष्ट्रीयता की भावना मन में संजोकर देश के समग्र विकास में योगदान प्रदान करे। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द के सन्देशों को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया, जिनका मूल मंत्र समृद्ध व सक्षम भारत था। उपर्युक्त लघु विवरण भगिनी निवेदिता के भारत के योगदान का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत करता है कि एक विदेशी महिला ने इस पुण्य भूमि को अपनी कर्मस्थली अंगीकार कर भारत के सम्पूर्ण पुनर्जागरण व विकास के लिए अपना जीवन समर्पित किया। शत-शत नमन। ❑

(विभागाध्यक्ष-पर्यावरण विज्ञान विभाग, सरगुजा वि.वि., अम्बिकापुर, छ.ग.)

महाकवि कालिदास का नारी वर्णन उसे पुरुष से पृथक् कर महत्त्व प्रदान करने का नहीं है। अपितु वे नारी और पुरुष को एक दूसरे का पूरक मानते हुये समाज कल्याण के कार्य व जीवन सार्थक करने समर्थक हैं। नारी के विषय में यह भारतीय दृष्टि उसे नारायणी की संज्ञा प्रदान करती है। शिवसायुज्य प्राप्त कर शक्ति सृजनशील होती है। अतः जब विदाई के अवसर पर शकुन्तला अपने पालन-पोषण करने वाले पिता कण्व से पूछती है कि हे तात् अब दूसरे देश में जाकर आप से अलग होकर मैं कैसे रह पाऊंगी तो महर्षि कण्व इसके उत्तर में भारतीय नारी के संपूर्ण महात्म्य का वर्णन कर जाते हैं।

नारी : भारतीय उत्तम दृष्टि

❑ **डॉ. ओम प्रकाश पारीक**

हे मैत्रेयी! मैं अब गृहस्थाश्रम से संन्यास आश्रम में जाना चाहता हूँ इसलिये मेरे पास जो सम्पत्ति है उसका कात्यायनी और तुममें बाँटवारा कर दूँ। मैत्रेयी ने कहा-यदि धन से भरी हुई यह समग्र धरती मुझे मिल जाये तब मैं अमर हो जाऊँगी क्या? तब याज्ञवलक्य बोले-नहीं, जैसा कि बहुत सी साधन सामग्रियों से सम्पन्न मनुष्यों का जीवन होता है वैसा ही संपूर्ण धन से भरी पृथ्वी मिलने पर तुम्हारा जीवन होगा। धन से अमर होने की तो आशा भी नहीं की जा सकती। मैत्रेयी ने कहा हे भगवन्! जिससे मैं अमर नहीं हो सकती, उसे लेकर मैं क्या करुँ? आत्मा के अमरत्व के विषय में आप जो कुछ भी जानते हो, वही मुझे बतलाइये। याज्ञवलक्य कहते हैं धन्य हो मैत्रेयी! पहले भी तुम प्रिय रही हो और अब भी प्रिय ही बोल रही हो। आओ बैठो मैं तुम्हें आत्मज्ञान का उपदेश दूँगा।

बृहदारण्यकोपनिषद् का यह मैत्रेयी व याज्ञवलक्य का संवाद भारतीय नारी की उत्तम प्रज्ञा, सार्थक जीवन दृष्टि का तो परिचायक है ही इसके अतिरिक्त उसके सम्मान एवं महत्त्व का भी निदर्शन करवाता है। इसमें कात्यायनी भी पूज्य है और मैत्रेयी भी, एक परिवार की केन्द्रबिन्दु माता रूप में तो दूसरी ब्रह्मवादिनी के रूप में। कात्यायनी ने पति याज्ञवलक्य के संन्यास के उपरान्त 60,000 लोगों का गुरुकुल संभालने के संदर्भ मिलते हैं। वैदिक काल में परिवार में (स्त्री) का महत्त्वपूर्ण स्थान था।

सम्राज्ञी श्वसुरे भव सम्राज्ञी स्वश्रवां भव
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु

ऋग्वेद 10/85/46

अर्थात् हे वधू तू श्वसुर, सास, ननद एवं देवरों की महारानी के समान होवो सबके उपर तुम्हारा प्रभाव होवे। यहाँ परिवार में एक प्रभावशालिनी सशक्त स्त्री का वर्णन किया है जो उस समय की समर्थ स्त्री की समर्थ दशा को व्यक्त करता है। परिवार एक स्थान जहाँ संस्कारों का निर्माण व सुदृढ़ीकरण होता है। उसकी कल्पना एक प्रभावशालिनी नारी के बिना नहीं की जा सकती अतः महाभारत में लिखा गया है-

''न ग्रहं गृहमित्याहुर्ग्रहिणी गृहमुच्यते''

अर्थात्- बिना गृहिणी के घर को घर नहीं कहा जा सकता है। पत्नी के समान कोई बन्धु, कोई गति तथा कोई धर्म का साधन नहीं माना गया है। मनु स्मृति में स्पष्ट लिखा गया है कि जहाँ नारियों का सम्मान होता है वहाँ सभी देवताओं का वास

होता है, किन्तु जहाँ नारियों का सम्मान नहीं होता वहाँ सभी कार्य निष्फल ही होते हैं। –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

(मनुस्मृति 3/56/)

आज भी ब्रह्मतर्पण में महान् ऋषिकाओं का नाम लिया जाता है विश्ववारा, अपाला, लोपामुद्रा, शाश्वती, घोषा, रोमशा, सूर्या, सावित्री, सुलभा, पालौमि आदि नारियों के नाम लिये जाते हैं। ब्रह्मवादिनी गार्गी विद्वत् सभा में प्रश्न पूछती हैं। ब्रह्मविद्या प्रवीणा मदालसा, सांख्यशास्त्र में उत्कृष्ट देवहुति, दर्शनशास्त्रज्ञा सुलभा आदि नारियाँ उत्कृष्टता के उदाहरण है। पुरंध्रि शब्द में यह बात छिपी हुयी है कि पुरं = नगर को जो धारण करती हैं।

वैदिकयुग के पश्चात् विभिन्न कालखंडों में विभिन्न राजनैतिक, सामाजिक एवं सामरिक परिस्थितियों के कारण नारी का महत्त्व कम हुआ तथापि द्रौपदी को पण्डिता माना जाता था, सीता धर्म की ज्ञाता थी तथा राम की सहचरी बन वन में गयी। बौद्ध युग में भिक्षुणियाँ अत्यधिक प्रखर विद्वत्ता को धारण करती थीं जिनसे उस समय के राजकुमार एवं धार्मिक विद्वान् भी विवाह करने के लिये उत्सुक थे। सुभद्रा नामक भिक्षुणी व्याख्यान देने में निपुण थी। जैन धर्म में जयन्ता ज्ञान और दर्शन में पारंगत थी। नारियों की आर्थिक स्थिति के विषय में धर्मशास्त्र में भी चिन्ता की गयी थी। पिता की सम्पत्ति में पुत्रों को विभाजन के समय पत्नि को भी पुत्रों के समान भाग दिया जाता था। यदि कोई पहली स्त्री के रहते दूसरा विवाह करता है तो दूसरे विवाह में जितना धन व्यय हुआ है उतना ही पहली स्त्री को देने का विधान था यदि पहले से उसको स्त्री धन मिला है तो विवाह में लगे धन का आधा धन देने की व्यवस्था थी। मनु के अनुसार जैसे पुत्र पिता की आत्मा है वैसे ही पुत्री भी उसकी आत्मा है पुत्री के जीवित रहते हुये कोई दुसरा उसके पिता की सम्पत्ति नहीं प्राप्त कर सकता।

यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा
तस्यामात्मानि तिस्ठन्त्यां कथमन्यो धनं हरेत्

(मनु 9/130)

मनुस्मृति में स्पष्ट कहा है कि पिता, भ्राता, पति देवर जो कोई परिवार में अपनी उन्नति एवं कल्याण चाहता है तो उसके लिये यह उचित है कि वह नारियों का सम्मान करे तथा उन्हें वस्त्र, आभूषण इत्यादि किसी प्रकार की कमी न आने दें–

पितृभि भातृभिश्चैता पतिभिर्देवरैस्तथा
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः

(मनु स्मृति)

याज्ञवलक्य स्मृति में स्पष्ट लिखा गया है कि माता के धन पर केवल पुत्रियों का ही अधिकार होता है ना कि पुत्रों का किन्तु यदि ऋण है तो उसे चुकाने का उत्तरदायित्व पुत्रों पर है। ऋण चुकाने के पश्चात् बचा धन पुत्रियों का ही होगा ऐसी व्यवस्था थी।

इनमें भी कम आर्थिक स्थिति वाली पुत्रियों को प्राथमिकता से माता का धन दिये जाने की व्यवस्था थी। इस प्रकार नारियों की आर्थिक स्थिति की चिन्ता उस समय की जाती थी और उसकी शास्त्रीय व्यवस्था थी। स्त्रियों को पति के मर जाने पर, संन्यासी हो जाने पर, नपुंसक होने पर, पतित होने पर पुनर्विवाह करने की व्यवस्था थी, पाराशर स्मृति–

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे च पतिते पतौ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विद्यीयते।।

नारी स्वतंत्रता की जहाँ हम बात करते हैं तो वह स्वयं द्वारा धारित उत्तरदायित्वों का पालन करती हुयी आत्मसुख व स्वतंत्रता का अनुभव करती थी। आज से दो हजार वर्ष से भी पूर्व लिखे गये महाकवि कालिदास के नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शकुन्तला न केवल महर्षि कण्व की स्वयं से भी प्रिय पुत्री है अपितु वह पूर्णतः स्वतंत्र

भी है, महर्षि को अपनी पुत्री पर अनन्त विश्वास है। तीर्थयाात्रा से लौटने पर जब महर्षि को शकुन्तला के गान्धर्व विवाह की सूचना मिलती है तो वे उसका अनुमोदन करते हैं। महर्षि को ज्ञान है कि जिन संस्कारों में शकुन्तला का पालन -पोषण हुआ है वह अनुचित कार्य नहीं कर सकती वह योग्य वर का ही वरण करेगी और वह वर है चक्रवर्ती सम्राट -दुष्यन्त । कालान्तर में उन्हीं दुष्यन्त व शकुन्तला से उत्पन्न पुत्र भरत के नाम से हमारे देश का नामकरण भारत हुआ है।

महाकवि कालिदास का नारी वर्णन उसे पुरुष से पृथक् कर महत्त्व प्रदान करने का नहीं है। अपितु वे नारी और पुरुष को एक दूसरे का पूरक मानते हुये समाज कल्याण के कार्य व जीवन सार्थक करने समर्थक हैं। नारी के विषय में यह भारतीय दृष्टि उसे नारायणी की संज्ञा प्रदान करती है। शिवसायुज्य प्राप्त कर शक्ति सृजनशील होती है। अत: जब विदाई के अवसर पर शकुन्तला अपने पालन-पोषण करने वाले पिता कण्व से पूछती है कि हे तात् अब दूसरे देश में जाकर आप से अलग होकर मैं कैसे रह पाऊंगी तो महर्षि कण्व इसके उत्तर में भारतीय नारी के संपूर्ण महात्म्य का वर्णन कर जाते हैं। वे कहते हैं हे शकुन्तला तुम अपने उत्कृष्ट पति के महत्त्वपूर्ण गृहिणी पद को प्राप्त करके, उसके घर में रात-दिन विभिन्न प्रकार के कार्यों में व्यस्त रहोगी तथा जैसे प्राची दिशा से पवित्र सूर्य उत्पन्न होता है वैसे अपने पुत्र को उत्पन्न करके हमारे यहाँ के बिछोह का दु:ख भूल जाओगी। कालिदास के इस कथन में भारतीय नारी पूर्णत: अभिव्यक्त हो रही है। भारतीय नारी की जो भूमिका हमारे परिवार के केन्द्रबिन्दु के रूप में विकसित हुयी उसमें नारी की कोई न्यूनता प्रकट नहीं होती है अपितु उसकी शक्तिमत्ता, मातृत्व एवं वात्सल्यभाव के नैसर्गिकगुणों के कारण ही उसकी यह भूमिका रही है चतुराई, दक्षता एवं बौद्धिकता में वह किसी भी प्रकार से पुरुषों से कम नहीं है। मृच्छकटिकम् नाटक में कहा भी गया है।

स्त्रियो हि नाम खल्वेता: निसर्गादेव पण्डिता:।
पुरुषाणान्तु पाण्डित्यं शास्त्रैरेवोपजायते।

अर्थात् - नारियाँ तो जन्मजात ही पण्डित होती है और पुरुषों का पाण्डित्य शास्त्रों से पैदा किया जाता है। प्राचीन काल में नारी का शिक्षा, धर्म, व्यक्तित्व विकास तथा साामजिक विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान था। वह परिवार का महत्त्वपूर्ण प्रशंसनीय अंग की कोई भी प्रतिष्ठा का कार्य उसके बिना सम्पन्न नहीं होता है। पति एवं परिवार के साथ सदैव आत्मीय रहती हुयी वह सार्थक जीवन व्यतीत करती थी माता, पत्नी, दादी, बुआ, चाची, मौसी, बहन, इत्यादि विभिन्न भूमिकाओं में वह परिवार व समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। माता के रूप में वह हजारों पिताओं से भी अपनी गरिमा में बढ़कर है। इसलिये मनुस्मृति में कहा भी है कि दस उपाध्यायों से बढ़कर आचार्य होता है तथा सौ आचार्यों से बढ़कर पिता होता है किन्तु हजारों पिताओं से भी बढ़कर माता का गौरव अधिक होता है-

उपाध्यायान् दशाचार्य: आचार्याणां शतं पिता
सहस्त्रं तु पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते

(वा. रामायण)

इस प्रकार हमारे देश की प्राचीन परम्पराओं में नारी का महात्म्य अक्षुण्ण है। भारतीय दृष्टि से वो सशक्त, पुरुष के साथ अर्धनारीश्वर रूप में मिलकर परिवार, समाज व राष्ट्र का कल्याण करने वाली तो रही है साथ ही वेदों से लेकर विभिन्न काल-खण्डों में विभिन्न क्षेत्रों में उसने अपनी प्रतिभा व सामर्थ्य को व्यक्त किया है।

आज नारी सशक्तीकरण का नारा समाज में व्याप्त हो रहा है नारी सशक्त हो यह आवश्यक भी है परिवार समाज व राष्ट्र की उन्नति में नारी अपनी सशक्तता को व्यक्त कर भी रही है किन्तु नारी विमर्श के प्रत्येक पक्ष पर विचार करते हुये हमें पश्चिम के नारीवाद के प्रभाव की समीक्षा भी करना आवश्यक है पश्चिम का नारीवाद नारी को पुरुष से एवं परिवार से पृथक् कर सशक्तीकरण के बहाने उसे एक अन्तहीन प्रतिस्पर्धा में झोंककर भोगवाद के उच्छृंखल स्वरूप को बढ़ावा दे रहा है जिसके परिणाम स्वरूप नारी एकाकिनी होकर हताश, निराश हो गयी है, पुरुष और नारी प्रतिस्पर्धा के इस भयावह खेल में परिवार के सब रिश्ते टूट रहे हैं, बालक वात्सल्य विहीन होकर कुपथ-गामी बन समाज को दूषित कर रहे हैं। वृद्ध निराश्रित होकर वृद्धाश्रम के आश्रय में हैं। ऐसे भोगवाद में नारी के आत्मिक आभ्यान्तर व मानसिक पक्ष गौण होकर बाह्य व भौतिक पक्षों का ही मूल्य बढ़ गया है। ऐसे पर्यावरण के चलते समाज में तनाव दबाव-अवसाद बढ़ रहा है।

इस स्थिति में नारी के विषय में भारतीय दृष्टि एवं गौरवमयी भावना आवश्यक है। अंतहीन प्रतिस्पर्धा के स्थान पर पारिवारिक सहयोग प्रदान कर नारी की प्रतिभा का समाज व राष्ट्रहित में उपयोग होना चाहिये। नारी-पुरुष के साथ अविभाज्य आत्मीय इकाई के रूप में उचित प्रेम सद्भाव व सामञ्जस्य से परिवार में रहते हुये आत्मविश्वास के साथ उन्नति के शिखर छुये यह श्रेयस्कर मार्ग है। इसके लिये यदि कुछ खामियाँ दृष्टिगोचर होती हैं तो उनकी पूर्ति नारी के शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा की उत्तम व्यवस्था के द्वारा होनी चाहिये। इस प्रकार गरिमामयी भारतीय नारी परिवार समाज व राष्ट्र को सार्थक एवं उन्नत दिशा देने में सक्षम है। ❑

(सहाचार्य संस्कृत, वर्तमान-सहायक निदेशक, आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा, राजस्थान)

वर्तमान परिदृश्य में भारतीय नारी

❑ डॉ. प्रियंका गर्ग

स्त्रियों की सभी समस्याओं का समाधान स्त्री शिक्षा में ही निहित है। स्त्रियों को किताबी शिक्षा के साथ ऐसी शिक्षा दी जाए कि वे अपनी स्वतंत्र दृष्टि का निर्माण कर सकें एवं आत्मनिर्भर बन सकें। व्यावसायिक शिक्षा, कुटीर उद्योगों के पुन: विकास द्वारा स्त्री पुन: अपनी वैदिक युग की गरिमा को प्राप्त करने में समर्थ होगी। ऐसी आशा की जा सकती है। पिछले 15 वर्षों में स्त्री परिदृश्य में क्रांतिकारी बदलाव आया है। संभवतया अगले 15 वर्षों में स्त्री शिक्षा नया आसमान बना पाएगी।

नारी ईश्वर की अद्वितीय रचना है। नारी के अभाव में सृष्टि का उन्नयन असंभव है। नारी ही हैं जो पुरुष को प्रेम, करुणा, दया आदि मानवीय गुणों की सीख देती है। रायबर्न के अुनसार ''स्त्रियों ने ही प्रथम सभ्यता की नींव डाली है और उन्होंने ही जंगलों में मारे-मारे भटकते हुए पुरुषों को हाथ पकड़कर अपने स्तर का जीवन प्रदान किया तथा घर में बसाया।

भारतीय समाज में प्राचीन काल से नारी को सम्मानीय स्थान प्राप्त है। वैदिक युग से ही नारी को देवी का पद प्राप्त है। प्रसिद्ध उक्ति है- ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।'' वैदिक युग में गार्गी और मैत्रेयी की प्रसिद्धि रही है। वृहदारण्यक उपनिषद् में गार्गी के शास्त्रार्थ का प्रसंग प्रसिद्ध है। अमृण ऋषि की पुत्री वाक् ब्रह्मज्ञानिनी सूर्या ने 17 ऋचाओं की रचना की। वैदिक युग स्त्रियों के लिए स्वर्ण-युग था। जहाँ स्त्री को पुरुष के समान शिक्षा, अनुष्ठानादि और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्वयंवर का अधिकार प्राप्त था।

बौद्ध और जैन युग में स्त्री को साधना का बाधक माना गया एवं दोषों का आगार कहा गया। मध्ययुग में मुगल आक्रांताओं के आक्रमण के साथ स्त्री पराभव का दौर प्रारंभ हुआ। पर्दाप्रथा के प्रारंभ के कारण स्त्री समाज की मुख्यधारा से कट गई। स्त्रीत्व की रक्षा के नाम पर स्त्री पर अत्याचार की परंपरा प्रारंभ हुई।

आधुनिक काल का प्रारंभ भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का दौर था। सती-प्रथा, कन्या हत्या, देवदासी प्रथा, वेश्यावृत्ति का प्रचलन एवं विधवा विवाह पर रोक ने समाज को खोखला बना रखा था। स्त्री शिक्षा का अभाव था। ऐसे समय में राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, ईश्वरचंद्र विद्यासागर एवं रविन्द्रनाथ ठाकुर जैसे सद्पुरुषों के प्रयास से देश में परिवर्तन की एक लहर आई। सती प्रथा जैसी कुरीतियों पर रोक लगी। कन्या शिक्षा में इजाफा हुआ। देश की आजादी के बाद स्त्री को संविधान में समान अधिकार प्रदान किए गए। किंतु संवैधानिक अधिकारों एवं वास्तविकता में आज भी एक बहुत बड़ा अंतर है। आज भी समाज की विकृत रूढ़ियों, आचार-संहिताओं, परंपराओं अंधविश्वासों बर्बर

व्यवस्थाओं, धर्म के वर्चस्ववादी पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को पुरुष की सेवा करने का धर्म घुट्टी के रूप में पिलाया जाता है। समाज के बहुसंख्यक तबके में स्त्री स्वयं पुरुष की पराधीनता स्वीकार कर प्रसन्नता महसूस करती है। पति उसका परमेश्वर है चाहे वह शराबी ही क्यों न हो। फिर भी समाज के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों का रुझान बढ़ा है। राजनीति में प्रतिभा पाटिल, वसुंधरा राजे, सुषमा स्वराज, उमा भारती, मायावती, जयललिता आदि लोकप्रिय नाम है। अभिनय के क्षेत्र में मीनाकुमारी, नरगिस से लेकर दीपिका पादुकोण एवं प्रियंका चौपड़ा जैसी अभिनेत्रियों ने भारत का नाम विश्व पटल पर ऊँचा किया है। व्यापार क्षेत्र में भी इंद्रा नूई, चंदा कोचर, सुधामूर्ति आदि अपना विशिष्ट स्थान रखती है। खेलों के क्षेत्रों में भी मैरिकोम, फोगाट बहनें, सानिया मिर्जा, सायना नेहवाल, पी.वी. सिंधु आदि लोकप्रिय नाम हैं। समाज का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं बचा जहाँ भारतीय स्त्रियों ने अपनी पैठ न बनाई हो। कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स जैसी महिलाओं ने अपना नाम अंतरिक्ष तक लिख दिया है।

परंतु यह एक बहुत छोटी तस्वीर है। समाज की बहुसंख्यक महिलाएँ आज भी शोषित एवं अपेक्षित जीवन जीने को मजबूर है। स्त्री के जन्म पर ही तलवार लटकी हुई है। गर्भधारण पूर्व एवं निदान तकनीक अधिनियम, 1994 के अन्तर्गत कन्या भ्रूण हत्या को संज्ञेय, अमानवीय एवं अक्षमनीय अपराध की श्रेणी में रखा गया है। इसके बावजूद देश में लैंगिक अनुपात चिंतनीय है। हरियाणा (879), पंजाब, (895), सिक्किम (890), और जम्मू कश्मीर (889), जैसे आँकड़े बताते हैं कि प्रकृति का संतुलन किस कदर बिगड़ चुका है। केवल केरल राज्य (1084) और पांडिचेरी केन्द्र शासित प्रदेश (1033) में आँकड़े संतुष्ट करते हैं। इन सभी स्त्री समस्याओं का समाधान स्त्री शिक्षा में निहित है। परंतु आजादी के वर्षों बाद भी 2011 की जनगणना के अनुसार स्त्री शिक्षा का प्रतिशत 65.46 ही है। आज भी समाज के लड़के-लड़की के बीच भेद विद्यमान है। ग्रामीण क्षेत्र में स्कूल-कॉलेजों का अभाव, सहशिक्षा का अभाव, स्त्री संबंधी सुविधाओं की उपलब्धता का अभाव आदि बहुत सारे कारण हैं जिनसे आज भी स्त्री शिक्षा बाधित है। स्त्रियों की सभी समस्याओं का समाधान स्त्री शिक्षा में ही निहित है। स्त्रियों को किताबी शिक्षा के साथ ऐसी शिक्षा दी जाए कि वे अपनी स्वतंत्र दृष्टि का निर्माण कर सकें एवं आत्मनिर्भर बन सकें। व्यावसायिक शिक्षा, कुटीर उद्योगों के पुनः विकास द्वारा स्त्री पुनः अपनी वैदिक युग की गरिमा को प्राप्त करने में समर्थ होगी। ऐसी आशा की जा सकती है। पिछले 15 वर्षों में स्त्री परिदृश्य में क्रांतिकारी बदलाव आया है। संभवतया अगले 15 वर्षों में स्त्री शिक्षा नया आसमान बना पाएगी। ❑

(सहायक आचार्य, महारानी महाविद्यालय, जयपुर)

AKJLTF State Executive Meeting Conducted at Jammu

A quarterly meeting of State Executive committee of All Jammu Kashmir and Ladakh Teachers Federation under the aegis of Akhil Bharatiya Rashtriya Shaikshik Mahasangh on 19 December 2018 in Jammu under the chairmanship of Sh. Mahendra Kapoor Akhil Bhartiya Sangathan Mantri of Shaikshik Mahasangh. The meeting attended by all the State body members and District Presidents/Secretaries . "The main agenda of the meet was to discuss the review of activities undertaken /performance by the State/District bodies of the Federation w.e.f August to November 2018, framing of action plan for the next quarter December 2018 to March 2019. " During the starting of the meeting all the members unanimously hailed the Hon'ble Governor Sh. Satya Paul Mallik for solving SSA Teachers issues by creating more than 28000 supernumerary posts of Teachers and allocated separate funds in the State budget for the SSA Teachers which led to the end of over a decade old problems of teachers.

"All the members unanimously blamed the previous Government for their non serious approach towards the teaching fraternity." They thanked and appreciated the State Government headed by the Hon'ble Governor and the Advisors.During the meeting, Sh. Mahendra Kapoor Sangathan Mantri prepared the action plan for the next quarter. In the quarterly action plan, he stressed upon the members to organise "Kartavya Bodh Divas Karyakram" at Zonal levels which will be organised w.e.f 12 th January 2019 (Swami Vivekananda Jayanti) to 23rd January 2019 (Neta ji Subash Chandra Bose Jayanti) throughout the country to incite and inculcate spirit of responsibility towards the nation and society. It is also decided to present the memorandum of demands of teaching fraternity to the Advisor and the Commissioner/Secretary concerned for their early redressal. Others who were present during the meeting included Maheshwar Prasad, Rattan Sharma, Shiv Dev Singh, Radha Krishan, Ravi Kumar, Gurdeep Singh , Raj Kumar, Sanjay Kumar Koul, Zorawar Singh, Arvind Sharma, Sanjay Kumar, Dr. Khem Raj, Jagdish Kumar and many others.

Bharat always had its own knowledge tradition, and this originated much before all other knowledge traditions of the world. But the conquests and other influences from outside influenced Bharatiya knowledge tradition in a devastating manner. Those who came from out side had never understood Bharatiya knowledge tradition because of the huge conceptual and logical differences in what they knew and the Vedopanishadic knowledge tradition. They imposed what they thought as correct, especially in the light, that they never understood Bharat.

Bharatiya Sanskriti Education and Women

❑ **Dr. T. S. Girishkumar**

Women and education in ancient Bharat had been portrayed in a much bad manner by those who took pen for historiography in post independent days. Some of them did wilful mutilations, while some others wrote things out of their ignorance of ancient Bharat, either from their unknowledge or from the kind of education they had from abroad. In any case, such books were written, and our schools were following these books as authority. Yet another mutilation with history had been carried out by the communists, who are very religious about propaganda of repeating lies over lies with the confidence that such lies shall become certainties with people in time. This indeed is ironical with the communists, as it is these communists who celebrated theories of ideologies and hegemony as 'intellectual legitimisation of social domination' and wrote many voluminous treatises. Nonetheless, our generations were grossly misled by these so-called intellectuals of fortune seekers.

Bharat has to depend on the Vedopanishadic knowledge tradition for authentic knowledge. Bharat has to depend on the Vedas as primary source of knowing Bharat directly, without going for secondary sources or commentaries done by these intellectuals. Thus, to speak about women and education in ancient Bharat, one has to go directly to the Vedas and the Vedopanishadic knowledge tradition.

The Vedas

The Vedic Suktas are composed by many Vedic Rishis. Fortunately, we have fairly large knowledge of who composed which Suktas. In all, there are more than some thirty Vedic Rishikas, or women Rishis, who composed many of the Suktas. Some prominent among the names of the Vedic Rishikas are GhoshaKakashivati, daughter of Kakashivat and grand daughter of Dirkhatamas, Lopamudra, wife of Maharishi Agastya, Maitreyi, wife of Yajnavalkeya, Gargi, daughter of Vachaknu, Sulabha etc.

These Rishikas did compose considerable amount of Suktas in the Vedas. What more is required to understand the importance and status of women in ancient Bharat? Strictly speaking, we should see that there was no difference at all among individuals on a gender basis. Gender distinctions did not exist in public space, gender questions arose only in gender related and gender significant contexts. Ancient people of Bharat lived more at mental level than mundane and there hardly used to be thoughts discriminating individuals on gender basis, individuals were individuals and that is all.

Functional status of women

Patanjali and Katyayana speaks about women as having equal status with men in every respect. Education was equally available to both, without gender discrimination. Broadly, two kinds of women are talked about. The first type are students of Vedas, and the second type are Gruhastis. They may be women with common prerogatives, of house makers. The student category of womendoes Upanayana, study the Vedas and other knowledge texts to become Rishikas, teachers and eventually scholars whose knowledge is made available to the entire society. They may get married of their choice, or may not get married, in either way, it remains their choice and personal likes as well as dislike. At no point there is a discussion of women being less or below man in any sense. At the same time, the distinct functions of women in society is well understood and accepted. At higher level, this distinct function of women is not seen at all, as in the case of scholars, queens etc.

The earliest reference to a queen available to us is from sixth century BCE. There is reference to a queen Mrigavati, who had to take the crown of VatsaMahajanpath on account of her son Udayana being a minor. We do not have references to queens prior to this, but common-sense logic suggests that there was nothing special for a woman to rule, when required. Otherwise, the reference to queen Mrigavati would not have been made as a normal case, it would have been made a special case in the least.

Gods and Goddesses

Hindus do not have the concept of an ultimate God in the Semitic sense of the term. Hindus have concepts of Devtas, so, small letter 'g' is used to refer to Devtas. We see all gods are with their wives, where the wife goddess is given more importance, examples are plenty. One instance is worth mentioning, that when one does agnihotra, each mantra is addressed to 'Swaha'. Swaha is the wife of Agni, and in Devi Bhagavata Purana, it is clearly instructed that all requests to Agni must be made to the wife of Agni, Swaha. (9.4)

Here, one may ask as to, given this concept of women in Bharatiya Sanskriti, how on earth the thoughts towards women as not being equal ever came into existence? Women being separate or different from man is unthinkable when one is within Bharatiya Sanskriti and Parampara. Obviously, this is another negative influence from long colonial rule and European knowledge system.

Origin of Women as inferior thoughts

European philosophy begins with Greek philosophy, and for a long time, Europeans did not know beyond Socrates, Plato and Aristotle. Only much later that Europeans could know about pre-Socratic philosophers like Thales of Greece, Anaximander etc. thus for all practical purposes, European philosophy begins from where Socrates, Plato, Aristotle trio

stopped. There is also a continuity among them, as Socrates was Plato's teacher, and Plato was Aristotle's teacher. European philosophers could find considerable continuity among them, especially from the fact that Socrates did not write anything, it was Plato who wrote what Socrates had been teaching.

Plato has a ladder of 'Beings'. From the highest beings of existence to the lowest, Plato made a list. The list begins with the 'Idea of Good', and ends up with 'women and animals'. He puts man in an exclusive category, and made women inferior to man. One must remember the status of women in Greek city states, they did not have voting rights in their democracy, and they were not allowed to see Greek Olympics.

With the end of Greek Philosophy through the Roman conquest and subsequent establishment of Constantine's empire who became a Christian, Greek philosophy was first used by the Christian scholars modifying it to the requirement of the church. The church was slowly establishing its unquestionable authority and monopolising education. They translated everything into Latin, and only the clergy could study Latin. Hence, practically, only the clergy had access to education and knowledge. That was a period when common people were denied knowledge, so the European historians themselves called it as the dark ages.

All studies were theology, and all thinkers were theologians. We have thinkers like St. Aquinas, St. Augustine, St. Anselm of Canterbury etc during this period.

They, especially St. Augustine twisted much of Greek philosophy to suit the fancies of the church and the Pope. Through these theologians, Greek philosophies were dressed into Christian theology and for two thousand years plus, remained 'the truth' and authority. The idea that women are lesser beings in its myriad manner became the norm and law in Europe as well as in the Semitic minds through these phenomena.

Bharat

Bharat always had its own knowledge tradition, and this originated much before all other knowledge traditions of the world. But the conquests and other influences from outside influenced Bharatiya knowledge tradition in a devastating manner. Those who came from out side had never understood Bharatiya knowledge tradition because of the huge conceptual and logical differences in what they knew and the Vedopanishadic knowledge tradition. They imposed what they thought as correct, especially in the light, that they never understood Bharat. Mutilations took place in almost every sphere of Bharatiya existence: and one such result is the change in the status of women and their education in Bharat. Nonetheless, these things albeit, did create disturbances, could not go beyond some point. This is because of the strength, vivacity as well as the authority of Bharatiya Sanskriti.

Our present situation is such that, we know about the status of women as well as their educational achievements in ancient Bharat, we know that how many things suffered mutilations with the coming of aliens to Bharat, we also know that the re-creation of Bharatiya Sanskriti is the only solution to most of our problems. We only have to work towards these, and we are also working towards such things. Such things do not happen overnight, at the same time such things are happening in their own pace taking time due, to such things. To sum up, let us be confident that we lost nothing substantial, and we are working towards reinventing our ancient Sanskriti with strength and conviction.❑

(Ex. Professor of Philosophy, The Maharaja Sayajirao University of Baroda)

Woman is the magnificent creation of god, a multi faceted personality with the power of benevolence, adjustability, integrity and tolerance. Women are the pioneers of nation. There is nothing that a woman cannot do or excel at. The potential and abilities of women are humongous. Gone are the days when women were considered only the household entities commanded by males. Today, more than ever, women are becoming active participants and full protagonists of the development process. Women s participation in the development process has been recognized not only as an issue of human rights and social justice, but also as a crucial contribution to solving the pressing needs of most important and often-excluded segments of society.

Role of Women in Social Development

❑ **Prof. P.C.Agarwal**

The most famous saying of our ancestors is "To awaken the people, it is the women who must be awakened. Once she is on the move, the family moves, the village moves, the nation moves".

This quote is well accepted by all and supported by yet another famous saying of Brigham Young which is "If you educate a man; you educate a man. You educate a woman; you educate a generation."

Woman is the magnificent creation of god, a multi faceted personality with the power of benevolence, adjustability, integrity and tolerance. Women are the pioneers of nation. There is nothing that a woman cannot do or excel at. The potential and abilities of women are humongous. Gone are the days when women were considered only the household entities commanded by males. Today, more than ever, women are becoming active participants and full protagonists of the development process. Women's participation in the development process has been recognized not only as an issue of human rights and social justice, but also as a crucial contribution to solving the pressing needs of most important and often-excluded segments of society. Furthermore, evidence shows that women's participation in social development initiatives, in policymaking and in developmental decisions which generates benefits that are beneficial not only to women and their communities, but also society as a whole. The real life example of women's role in the development of society is innumerous. Give women the right shoes and they can conquer the world. Now with the encouragement of co-education, women have cast off the age old inferiority complex and are marching side by side with men in every walk of life. Women are actually proving to be academically better and socially more active. When we come across the results of competitive examinations in all India civil services and Indian universities we are happily surprised to note that women

capture most of the merit seats. There is not any sphere left which has been beyond the reach of women, they have excelled in all the walks of life. Women have been key agents of social change as well, and because of social change there is tremendous change in the lives of women. These women are not only the beneficiaries of change they are the key agents for change. Throughout India's long struggle for independence, women stood shoulder to shoulder with men. Who can undermine the role and contributions of Rani Laxmibai, Annie Besant, Sarojini Naidu, Indira Gandhi, Kalpana Chawla, Arundhati Roy, Sucheta Kriplani, Pratibha Patil, Bachendri Pal, Kiran Bedi, Mary Kom, Lata Mangeshkar, Malala Youzafzai etc. in uplifting the society and proving that there is no ground where women needs to step back. It is said that one can tell about status of a country by looking at the status of women of that country. Women constitute fifty percent of the population and a nation cannot develop ignoring the fifty percent of its population. Women have always been contributing to tremendous social progress. But it is the gender bias that still exists at every social stratum, even in the most educated and developed society. The visible contribution of women in all walks of life is hard to digest for many. In some regions, patriarchal societies diminish the role of women in important matters. This masochist thinking is, however, beginning to fade gradually with the passage of time. Despite hurdles like male chauvinism and indifference towards them, women have proved their worth as teachers, administrators, officers, entrepreneurs, doctors, engineers, nurses, and computer scientists and almost in all the spheres of activity contributing to social transformation and nation building. Women in rural India, despite suffering from the problems like health, malnutrition, repeated childbearing, and lack of education, engage themselves in direct and allied agricultural activities, run small shops, sell by-products or handicraft products and thus generate additional income for the family. A government of India study shows that more than 40 per cent of rural women directly or indirectly contribute to the uplift of their families and thereby bringing social change. Harriet Beecher Stowe rightly said, "Women are the real architects of society".

Florence Nightingale, the lady with a lamp, made history and showed the way to womankind and how efficiently and nobly women can mitigate the sufferings of humanity in war and epidemic. Even in the area of family planning women can render admirable service of explaining to the village women the importance of family planning by taking into them confidence and can guide them by creating awareness about different methods of birth control. If all educated women accept the challenge of time and make up their mind to serve the nation in checking the population growth, it will greatly put in to the socio-economic evolution of the nation. "The contribution of women is omnipresent and all-pervasive in every sphere of life as India seeks to march steadily towards the path of growth. One such example is a study conducted by Nair et. al. The study was conducted in the state of Jharkhand and Odisha where pregnant women were counseled by participatory women's group through home visit which resulted in improved child growth. Child stunting which is a marker of chronic under nutrition was curbed to a large extent. This study shows the change that women can collectively bring in a society. All these become possible only with the active participation of women who are the catalysts of qualitative growth of future generation as well. Many women have emerged as exemplary leaders at the policy level as well as the community level. The presence of women in various field helps develop confidence among other women, opening up possibilities for future. Women are a driving force of the socio-economic development of a country. Vast networks of women groups such as NGOs, associations and co-operatives at the grassroots level have played a pivotal role in providing empowerment initiatives which resulted in socio-economic development and income generating activities. This, in turn, paved the way for sustainable development and economic growth of the country. Women have come a long way in achieving their dreams against all odds, and it is obvious that women will achieve unimaginable success for the times to come. The role of women in development of the society is nothing but indispensable. We, as a part of the nation, should understand and realize the importance of women in the development of society. We all should take our small step and never hesitate to help women in need and ask others to do the same as "The hand that rocks the cradle rules the world". In the apron string of women is hidden the revolutionary energy, which can establish paradise on this earth- Dr Rajendra Prasad.

"Woman is the companion of man, gifted with equal mental capacity"- Mahatma Gandhi. ❑

(Principal, Regional Institute of Education, NCERT, Sachivalaya Marg, Bhubaneswar)

शिक्षा के उद्देश्य व मूल्यांकन

❑ बजरंग प्रसाद मजेजी

विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ विनम्रता और शालीनता से युक्त बनाना, प्रकृति और जीवन संरक्षण की भावना का विकास करना, शिक्षित होकर समाज का मार्गदर्शन करना, आत्मनिर्भर बनाते हुए सुसंस्कृत तथा सभ्य नागरिक बनाना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये। –कालीदास

शिक्षा का उद्देश्य बालकों को रट्टू तोता बनाना नहीं अपितु प्रतिकूल परिस्थितियों में उचित निर्णय लेने वाला संवेदनशील इन्सान बनाना है। तभी वह अपने अभीष्ट को प्राप्त करने के लिए जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर खट्टे-मीठे अनुभवों को झेलता हुआ, मंजिल की ओर अहर्निश उन्मुख होता है।

किसी भी देश की शिक्षा का स्वरूप उस देश की संस्कृति एवं प्रगति के अनुरूप हो, इस हेतु शिक्षा व्यक्तिनिष्ठ नहीं अपितु राष्ट्रनिष्ठ होनी चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना से ओतप्रोत होकर देशभक्ति और राष्ट्रीयता की गहन अनुभूति पैदा करे, होना चाहिए। केवल पुस्तकीय ज्ञान ही शिक्षा नहीं अपितु उसके आचरण और व्यवहार में परिवर्तन लाना ही सच्ची शिक्षा है। शिक्षा मनुष्य को अज्ञान, अभाव तथा दु:ख के बंधनों से मुक्त करती है और उन्हें अहिंसक एवं शोषणविहीन सामाजिक व्यवस्था की ओर ले जाती है। व्यक्ति द्वारा अर्जित ज्ञान इसका प्रतीक होना चाहिए कि जो कुछ वह जानता है उसका अर्थ भी उसने हृदयंगम किया है या नहीं ? शिक्षा का उद्देश्य यह भी है कि बालक व्यक्तिगत नैतिक, सामाजिक, राष्ट्रीयता आधारित मूल्यों और सहवर्ती गुणों का विकास करें। ऐसी क्षमताओं का विकास करें जो न केवल सूचना विश्लेषण की बल्कि इन्हें ठीक से समझे, उन पर विचार करें, इन्हें आत्मसात करें और उनके प्रति अंतदृष्टि का विकास करें, तब ज्ञानवान, विचारवान सच्चरित्रवान, सुयोग्य, सुसंस्कृत, समर्थ, स्वाभिमानी, स्वदेशभक्त नागरिक का निर्माण होगा। यही शिक्षा का लक्ष्य और उद्देश्य है।

मूल्यांकन का महत्त्व एवं आवश्यकता

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या योजना में स्पष्ट किया है कि सफलतापूर्वक सीखने के लिए बिना उच्च स्तरीय मूल्यांकन के शिक्षण संभव नहीं है। इसलिए अध्यापन और सीखने की प्रक्रिया में जाँच या मूल्यांकन का अन्तर्निहित होना आवश्यक है। यह जितना अधिक होगा, उतने ही सीखने के बेहतर परिणाम मिलेंगे। इसलिए मूल्यांकन प्रणाली की रचना ऐसी होनी चाहिए कि शिक्षक जो पढ़ाते हैं

किसी भी देश की शिक्षा का स्वरूप उस देश की संस्कृति एवं प्रगति के अनुरूप हो, इस हेतु शिक्षा व्यक्तिनिष्ठ नहीं अपितु राष्ट्रनिष्ठ होनी चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना से ओतप्रोत होकर देशभक्ति और राष्ट्रीयता की गहन अनुभूति पैदा करे, होना चाहिए। केवल पुस्तकीय ज्ञान ही शिक्षा नहीं अपितु उसके आचरण और व्यवहार में परिवर्तन लाना ही सच्ची शिक्षा है। शिक्षा मनुष्य को अज्ञान, अभाव तथा दु:ख के बंधनों से मुक्त करती है और उन्हें अहिंसक एवं शोषणविहीन सामाजिक व्यवस्था की ओर ले जाती है।

वर्तमान परीक्षा प्रणाली कई प्रकार की अपूर्णता से त्रस्त है। यह केवल संज्ञानात्मक शिक्षण परिणामों पर ध्यान देती है और सह-संज्ञानात्मक आयामों को पूरी तरह से नजर-अंदाज या उपेक्षित करती है, जबकि ये आयाम व्यक्तित्व के अत्यंत सशक्त अंग है।

और छात्र जो सीखते हैं, उसे प्रभावित करने का वह शक्तिशाली माध्यम बनें। लेकिन साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होगा कि मूल्यांकन मानवीय हो और वह शिक्षार्थी को एक जिम्मेदारी और उत्पादक नागरिक की तरह विकसित होने के काबिल बनाए। केवल इतना ही नहीं मूल्यांकन को लगातार पाठ्यवस्तु की प्रभावशीलता, कक्षागत, प्रक्रियाओं और प्रत्येक शिक्षार्थी के विकास के बारे में प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देनी होगी जो मूल्यांकन प्रक्रिया की उपयुक्तता के अतिरिक्त होगी। महाकवि एवं शिक्षा के प्रति चिन्तक कालीदास ने ज्ञान के मूल्यांकन के लिए कहा है कि–''मूल्यांकन के लिए निश्चित समय निर्धारित करें तथा शिक्षार्थी को सतत् तैयार रहने हेतु प्रेरित करें। व्यवहार में आयी शिक्षा ही शिक्षार्थी का वास्तविक मूल्यांकन है। शिक्षार्थी का संतोष, उसकी योग्यता आचरण व्यवहार से ही उसका मूल्यांकन करना चाहिए। कमजोर छात्रों के लिए निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण तथा कुशाग्र विद्यार्थियों के ज्ञानवर्द्धन के लिए नवीनतम शिक्षण युक्तियों के प्रयोग पर बल देना चाहिए।

वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली

वर्तमान परीक्षा प्रणाली कई प्रकार की अपूर्णता से त्रस्त है। यह केवल संज्ञानात्मक शिक्षण परिणामों पर ध्यान देती है और सह–संज्ञानात्मक आयामों को पूरी तरह से नजर–अंदाज या उपेक्षित करती है, जबकि ये आयाम व्यक्तित्व के अत्यंत सशक्त अंग है। यहाँ तक कि संज्ञानात्मक क्षेत्रों में भी रटकर याद कर लेने पर तो उसका बहुत जोर रहता है। मगर उन योग्यताओं और कौशलों पर बहुत कम ध्यान रहता है जो उच्च मानसिक क्रियाओं जैसे समस्या निवारण, सृजनात्मक सोच, सारांश बोध, निष्कर्ष, तर्क–वितर्क आदि के लिए आवश्यक है। शिक्षक अपना शिक्षण परीक्षा या मूल्यांकन की दृष्टि से पाठों को महत्त्व देकर अध्ययन कराते हैं। यह विषय की पूर्ण प्रवीणता के साथ सीखने की आवधारणा को छिन्न–भिन्न कर देता है। बाजार में प्रचलित गाइड बुक, वन–वीक सीरीज की उपलब्धता के कारण एवं कोचिंग संस्थानों की सहायता से विद्यार्थी वर्षभर पाठ्यपुस्तक के आधार पर गहन अध्ययन करता है उसका एक अंश का ही मापन होता है। परीक्षा के माहौल में परीक्षाकक्ष में जो विद्यार्थी ने उत्तरपुस्तिका में लिख दिया उसके आधार पर परीक्षा परिणाम दिया जाता है। उत्तर पुस्तिका मूल्यांकन में शिक्षकों की लापरवाही के उदाहरण देखने–सुनने में आते रहते हैं। कुछ शिक्षक या उच्चकक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थी से जाँच करवाकर परिणाम देते हैं जो विद्यार्थी के भविष्य के साथ खिलवाड़ ही कहा जायेगा। बोर्ड, विश्वविद्यालय में विद्यार्थी द्वारा पुनर्मूल्यांकन कराने पर ऐसे भी उदाहरण आते हैं कि अंदर दिये अंकों और उत्तर पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर दर्शाये अंकों की जोड़ में असमानता पाई जाती है और परिणाम परिवर्तित हो जाता है। मूल्यांकन पद्धति में जो बुराइयाँ दृष्टि गोचर हो रही है उनको समाप्त करने का प्रयास प्रशासन, शिक्षकों को करना चाहिए।

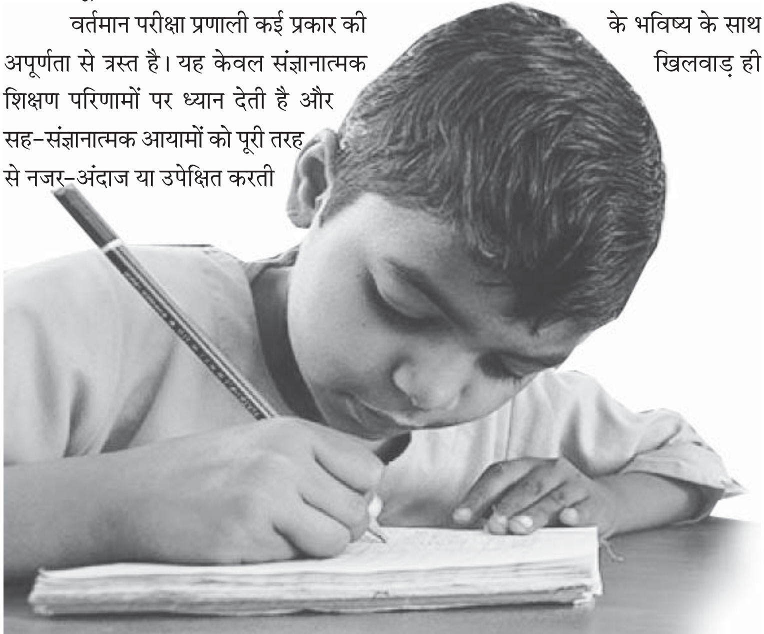

मूल्यांकन का आदर्श स्वरूप

मूल्यांकन जितना संभव हो विश्वसनीय होना चाहिए और सहयोगात्मक भावना से किया जाना चाहिए। पारदर्शी मूल्यांकन शिक्षार्थी को अधिक से अधिक सीखने के लिए प्रेरित करेगा और अंततः वे आजीवन सीखने वाले व्यक्तित्व में बदल जायेंगे। मूल्यांकन प्रक्रिया की प्रासंगिकता, विश्वसनीयता और वैद्यता प्रतिपुष्ठि (फीडबैक) की गुणवत्ता निश्चित करेगी जो छात्रों गुणात्मक सुधार सुनिश्चित करने के लिए सहायक होगी। शिक्षकों द्वारा आदर्श मूल्यांकन की भावना से विद्यार्थी हित एवं राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर कर्त्तव्य पालन करने पर लक्षित होगा कि –

- मूल्यांकन अपने उद्देश्य के प्रति हमेशा एक समान और सुसंगत होगा और छात्रों की योग्यता का विश्वसनीय एवं वैध मापन उपलब्ध करायेगा।
- मूल्यांकन अध्ययन –अध्यापन की प्रक्रिया में ही निहित होगा।
- मूल्यांकन छात्र की पृष्ठभूमि और पूर्व अनुभव पर भी विचार करेगा।
- मूल्यांकन प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित करते हुए इसे आम आदमी के लिए भी विश्वसनीय और आस्थापूर्ण बनाएगा।
- मूल्यांकन की प्रकृति मानवीय होगी और यह छात्रों की सामाजिक इकाई के रूप में विकसित होने से सहायक होगी और उन्हें अनावश्यक चिन्ता, पीड़ा, परेशानी और अपमान से बचायेगी।
- मूल्यांकन की प्रवृत्ति में निदानात्मक एवं उपराचात्मक ध्येय निहित हो। ❑

(स्वतंत्र लेखक व स्तम्भकार)

सौर क्रांति : अमावस्या को कर दे पूनम

भारत में ईश्वर द्वारा प्रदत्त अमूल्य उपहार सौर ऊर्जा का सुनहरा भविष्य देखते हुये, अन्य देशों की कम्पनियाँ भारतीय कम्पनियों के साथ आ रही है। गतवर्ष विश्व बैंक द्वारा 4000 करोड़ रुपये का ऋण भी स्वीकृत किया गया। आज भारत में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में सभी लोगों के सहभागिता को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। सरकार द्वारा अनुदान दिया जा रहा है जिससे बंजर भूमि पर सौर पेनल स्थापित कर बिजली की खेती (गुजरात के खेड़ा से यह प्रारम्भ हो चुका है) होने लगी है। फसल की कटाई से बचे पुआल से बिजली, एथेनॉल का निर्माण होने लगा। अनेक कम्पनी मकानों की छतों पर सोलर पेनल लगाने हेतु जगह लीज पर ले रहे हैं।

❑ **डॉ. अनिल कुमार गुप्ता**

ऐसा माना जाता है कि सूर्य समस्त ब्रह्माण्ड का मित्र है क्योंकि सूर्य से पृथ्वी सहित, सभी ग्रहों के अस्तित्व के लिये ऊर्जा प्राप्त होती है। सूर्य नमस्कार मंत्र में प्रथम मंत्र ॐ मित्राय नमः अर्थात् सभी के मित्र को प्रणाम हैं, बोलते हैं। कोणार्क के सूर्य मंदिर का निर्माण संभवतः इसी संदेश को देने के लिये किया गया होगा कि पूर्ण जीवन चक्र सूर्य की ऊर्जा से चलता है। आठों पहर ऊर्जा देने वाले सूर्य में ऊर्जा का अक्षय भंडार है। सूर्य की किरणों में इतनी शक्ति है कि वह, मानवों द्वारा निर्मित मशीन को चला सकती है। उदाहरणार्थ कोणार्क के सूर्य रथ की तरह 14 जुलाई, 2017 को भारत में प्रथम रेल गाड़ी को सौर ऊर्जा से चालित किया गया। भारत की भौगोलिक स्थिति भूमध्य रेखा और कर्क रेखा के मध्य स्थित होने के कारण, सामान्यतः सूर्य का प्रकाश बर्न में 330 दिन तक उपलब्ध रहता है और सूर्य से मिलने वाली ऊर्जा प्रति वर्ग मीटर, 1358 वाट प्राप्त होती है हालांकि यह मान पृथ्वी की सूर्य के साथ दूरी के साथ थोड़ा परिवर्तनशील है। परन्तु यह तो स्पष्ट ही है कि इसके अधिकारिक प्रयोग से भारत की ऊर्जा की आवश्यकता को पूर्ण किया जा सकता है। गुजरात, राजस्थान, लद्दाख, में अनेक स्थानों पर सौर ऊर्जा प्रयोग की व्यापक संभावना है। ऊर्जा बिजली की बढ़ती माँग और अर्थव्यवस्था की गति बनाये रखने के लिए आवश्यक हो गया कि नवीकरणीय ऊर्जा में वृद्धि करें और पेट्रोलियम, तेल, कोयलों पर निर्भरता कम करें। अपने देश को लगभग 5 लाख करोड़ रुपये पेट्रोलियम, तेल पर जबकि 28000 करोड़ रुपये कोयले पर प्रतिवर्ष आयात के लिए खर्च करने पड़ रहे हैं। इसमें से 10 प्रतिशत की बचत भी कर सकें तो राशि लगभग 53000 करोड़ रुपये होगी जिसे मानव की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निवेश किया जा सकता है। इस संभावना को नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग से प्राप्त किया जा सकता है। सम्पूर्ण विश्व ऐसे क्रांतिकारी खोज की आवश्यकता अनुभव कर रहा है जिससे पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ ऊर्जा संकट का हल हो सके।

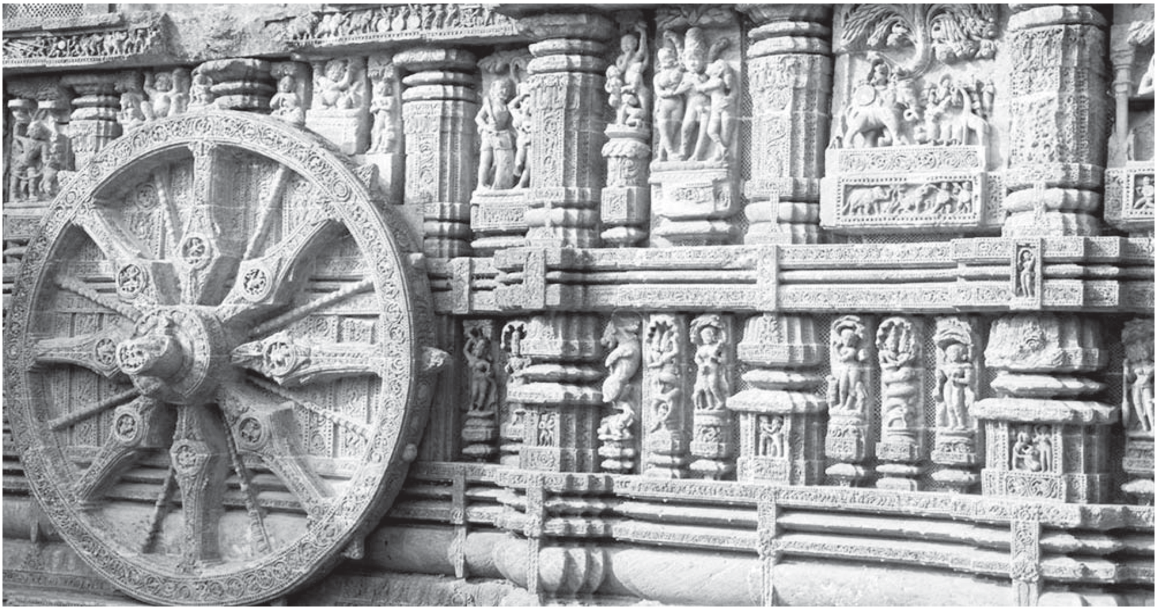

आज का भारत विकास के पथ पर चलायमान है। पिछली घटनायें जैसे 30 जुलाई, 2012 को 22 राज्यों में पावर ग्रिड फेल हो जाने पर भारत का बड़ा क्षेत्र अंधेरे में डूब गया, अभी भी 3 करोड़ घरों को बिजली आपूर्ति नहीं होने से 20.4 करोड़ भारतीय बिजली प्रकाश से वंचित है, अनेक बार पावर कट जैसी परिस्थितियों के स्थाई समाधान हेतु नवीकरणीय ऊर्जा वरदान है। नवाचार, नवोन्मेष के पथ पर नवीकरणीय ऊर्जा को सृजित-संचित करते हुये भविष्य का समृद्ध भारत बनने हेतु अग्रसर है। चीन, सिंगापुर, दक्षिणी कोरिया, जर्मनी एवं यूरोप के अन्य देशों की तरह भारत में सौर ऊर्जा का उत्पादन को प्राथमिकता मिल रही है।

सौर ऊर्जा में मुख्य महत्त्व सोलर फोटो बोल्टिक्स सेल से है जो सौर ऊर्जा को सीधे ही विद्युत ऊर्जा में रूपान्तरित करते हैं। इसका मूल सिद्धांत भौतिकी का प्रकाश विद्युत प्रभाव है। जब बहुत अधिक संख्या में सोलर सेल को संयोजित करते हैं तब यह व्यवस्था सौर पेनल कहलाती है।

वर्तमान में एक सोलर पेनल से 250 से 300 वाट तक ऊर्जा उत्पन्न हो जाती है, जिसकी कीमत लगभग 15000 रुपये है। सोलर पेनल निर्माण में चीन प्रमुख व कनाड़ा एवं कोरिया भी है। मकान की छत पर लगभग 5 पेनल लगाने से घर की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु 1 किलो वाट बिजली उत्पन्न हो जाती है। वर्तमान में सौर ऊर्जा द्वारा 1000 मेगावाट ऊर्जा का उत्पादन स्तर प्राप्त हो गया है। विद्युत नीति के अनुसार 2027 तक नवीकरणीय ऊर्जा द्वारा प्रमुख लक्ष्य प्राप्त करना है। सोलर पेनल की लागत कम करने के लिये पॉली क्रिस्टलाईन सिलिकेन की जगह थिन फिल्म एमॉर्फस सिलीकॉन का अनुसंधान हो रहा है।

भारत में ईश्वर द्वारा प्रदत्त अमूल्य उपहार सौर ऊर्जा का सुनहरा भविष्य देखते हुये, अन्य देशों की कम्पनियाँ भारतीय कम्पनियों के साथ आ रही है। गतवर्ष विश्व बैंक द्वारा 4000 करोड़ रुपये का ऋण भी स्वीकृत किया गया। आज भारत में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में सभी लोगों के सहभागिता को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। सरकार द्वारा अनुदान दिया जा रहा है जिससे बंजर भूमि पर सौर पेनल स्थापित कर बिजली की खेती (गुजरात के खेड़ा से यह प्रारम्भ हो चुका है) होने लगी है। फसल की कटाई से बचे पुआल से बिजली, एथेनॉल का निर्माण होने लगा। अनेक कम्पनी मकानों की छतों पर सोलर पेनल लगाने हेतु जगह लीज पर ले रहे हैं। और प्लांट लगाकर, सोलर मीटर, नेटमीटर, अर्थिग किट, स्थापित कर रहे हैं। लीज अवधि में भवन मालिक भुगतान पर ऊर्जा प्राप्त कर सकता है। सोलर प्लांट से उत्पन्न ऊर्जा प्रयोग में लेने के पश्चात्, अतिरिक्त ऊर्जा ग्रिड को सप्लाई होती है। इस ऊर्जा की राशि अथवा यूनिट, बिल से कम होती रहती है। लीज अवधि के समाप्ति पर सोलर प्लांट, भवन मालिक का ही हो जाता है।

भारत के मिसाईल मैन भारत रत्न ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब ने अपनी पुस्तक टर्निंग पॉइन्ट (पृष्ठ 49) में ऊर्जा संकट के समाधान हेतु नवीकरणीय ऊर्जा का ही सुझाव दिया है। भारत और फ्रांस की पहल पर 30 नवम्बर, 2015 से अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन की स्थापना हुई जिसका सचिवालय, राष्ट्रीय सौर संस्थान, गुरुग्राम (हरियाणा) के परिसर में ही स्थापित किया गया था।

ऊर्जा के घटते प्राकृतिक संसाधन और बढ़ती हुई जनसंख्या तथा सुविधाओं के प्रति मानवीय आकर्षण को देखते हुये और सौर क्रांति आज देश की आवश्यकता है। सौर क्रांति के आधार पर ही हम प्रत्येक घर से अमावस्या जैसे अंधकार को दूर कर ऐसे घरों में पूर्णिमा जैसी रोशनी भर देंगे। ❑

(सह-आचार्य-भौतिकी,
राजकीय महाविद्यालय, नसीराबाद, अजमेर)

खाद्य सुरक्षा से सुपोषण की ओर

❑ कैलाश विश्नोई

आज के बच्चे ही कल के भविष्य हैं और आने वाले समय में देश की तरक्की व संरक्षण का भार उनके कंधों पर होगा। ऐसे में जरूरी है कि वे शारीरिक-मानसिक स्तर पर स्वस्थ व मजबूत हों। लेकिन बच्चों के स्वास्थ्य पर आई विश्व स्वास्थ्य संगठन की वैश्विक पोषण रिपोर्ट चिंताजनक है। इस रिपोर्ट के अनुसार पूरी दुनिया में भारत चार करोड़ 66 लाख बौने बच्चों के साथ पहले नंबर पर है। वहीं भारत में अपनी लंबाई के मुकाबले कम वजन वाले बच्चों की संख्या 2.55 करोड़ है जो नाइजीरिया (34 लाख) और इंडोनेशिया (33 लाख) से भी अधिक है। यह तथ्य अपने आप में इसलिए भी चिंताजनक है, क्योंकि लंबाई के मुकाबले कम वजन होना पांच साल तक की आयु वाले बच्चों में मृत्यु का सूचक होता है।

मोटापा भी है कुपोषण

वैश्विक पोषण रिपोर्ट में कुपोषण से संबंधित एक नया आयाम यानी मोटापा भी सामने आया है और यह समस्या खाते-पीते परिवारों से संबंधित है। रिपोर्ट के मुताबिक भारत उन सात देशों में भी शामिल है जहाँ दस लाख से अधिक बच्चे मोटापे का शिकार हैं। अन्य देशों में चीन, इंडोनेशिया, मिस्र, अमेरिका, ब्राजील व पाकिस्तान हैं। वयस्कों में मोटापे के मामले में पुरुषों के मुकाबले महिलाएँ अधिक मोटी हैं। इसके विपरीत महिलाओं के मुकाबले पुरुष मधुमेह के अधिक शिकार हैं। रिपोर्ट में जिन 141 देशों का विश्लेषण किया गया है उनमें से 88 प्रतिशत से ज्यादा देशों में एक से अधिक तरह का कुपोषण पाया गया। शरीर के भारी होने और मोटापे से भी दुनिया भर में 40 लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है तथा जीवन के 120 मिलियन स्वस्थ-वर्षों की हानि होती है।

आज विश्व में 38.9 प्रतिशत वयस्क आवश्यकता से अधिक भारी हैं, जो एक बड़ी समस्या है। चूंकि यह बीमारी आधुनिक जीवनशैली से जुड़ी हुई है और जिसमें पोषक तत्त्वों के स्थान पर फास्ट फूड का चलन बढ़ रहा है, लिहाजा मध्यम तथा उच्च वर्ग के परिवारों में बच्चे और किशोर आवश्यकता से अधिक परिष्कृत अनाज, चीनी वाले खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ का सेवन कर रहे हैं। वे उतनी मात्रा में फल, तरकारी और पूरे अनाज नहीं ले रहे हैं जितना स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होता है। इसलिए ऐसे बच्चे भरपेट

आम तौर पर कुपोषण को एक चिकित्सीय समस्या माना जाता है जबकि कुपोषण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक कारकों का परिणाम है। कुपोषित महिलाओं से पैदा होने वाले बच्चे भी कुपोषण और शारीरिक अशक्तता के शिकार हो जाते हैं। कुपोषण की विकराल समस्या से निपटने के लिए और समाज के गरीब, वंचित वर्ग को संतुलित आहार उपलब्ध कराने के मकसद के साथ राष्ट्रीय पोषण मिशन शुरू किया है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय पोषण मिशन के माध्यम से देश भर के विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान केंद्रों में नए अनुसंधान किए जाएँ। इसके अलावा आंगनबाड़ी, आशा सहयोगिनी, एसएनएम, सीडीपीओ एवं कॉरपोरेट क्षेत्र के लोगों का सहयोग लेकर सुपोषण के क्षेत्र की कार्यक्षमता को बढ़ाया जा सकता है।

खाना खाने के बावजूद अनेक बीमारियों की गिरफ्त में आ रहे हैं तथा यह फास्ट फूड कल्चर उसकी पौष्टिक आवश्यकताओं की पूर्ति न करके अप्रत्यक्ष रूप से उसकी कुपोषण की समस्या पैदा कर रही है। ऐसे बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो रही है और इस प्रकार यदि यह कहें कि कुपोषण की समस्या बच्चे के खाली पेट और भरे पेट दोनों से है तो अनुचित नहीं होगा।

कुपोषण का नकारात्मक प्रभाव

कुपोषण एवं अल्प-पोषण हमारे अस्तित्व, विकास, स्वास्थ्य, उत्पादकता और आर्थिक स्थिति को प्रभावित करता है। आइसीएमआर के अनुसार एक औसत भारतीय के लिए भारी काम करने वालों को रोजाना 2,400 कैलोरी प्रति व्यक्ति तथा कम शारीरिक श्रम करने वालों के लिए 2,100 कैलोरी पोषण जरूरी है। पोषण सुरक्षा का आशय यह भी है कि किसी भी व्यक्ति को अपने जीवन चक्र में ऐसे विविधतापूर्ण भोजन तक पर्याप्त मात्रा में पहुँच सुनिश्चित हो जिसमें जरूरी कारबोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा व सूक्ष्म पोषक तत्त्व की उपलब्धता हो। बच्चों में कुपोषण उनके शारीरिक और मानसिक विकास को प्रभावित करता है विकासशील देशों में कुपोषण के कारण लगभग 14 करोड़ 70 लाख बच्चों का उचित शारीरिक और मानसिक विकास नहीं हो पाता।

विश्व भर में बच्चों की 45 प्रतिशत मौतों का कारण पर्याप्त पोषण का नहीं मिलना है। अगर बच्चों को पूरा पोषण नहीं मिलता है तो वह या तो गंभीर रूप से बीमार हो जाते हैं या फिर उनकी दूसरी बीमारियाँ कुपोषण के कारण और गंभीर हो जाती है। जिन बच्चों का वजन थोड़ा बहुत भी कम होता है, उन बच्चों की मौत का शिकार होने की आशंका उन बच्चों की तुलना में दोगुनी होती हैं जिन्हें पूरा पोषण मिलता है।

बीमारियों का भयावह दुष्चक्र

बच्चों में कुपोषण के कारण बीमारियों का बड़ा भयावह दुष्चक्र शुरू हो जाता है। जो बच्चे इसके चंगुल में फँस जाते हैं वे दस्त, खसरा, कुकुरखाँसी, टीबी और निमोनिया जैसे संक्रामक रोगों की चपेट में आ जाते हैं। कुपोषित बच्चों में ये बीमारियां ज्यादा गंभीर होती हैं और उनकी अवधि लंबी होने की संभावना बहुत ज्यादा होती है। कुपोषण के अन्य प्रकार भी जीवन के लिए घातक हो सकते हैं, क्योंकि शरीर में विटामिन और खनिज तत्वों की कमी से एनीमिया, स्कर्वी, पेलिग्रा, बेरी-बेरी जैसे रोग हो सकते हैं।

रक्त का मुख्य संघटक लाल रक्त कणिकाएँ होती हैं जो कि हीमोग्लोबिन से बनी होती है। इस हीमोग्लोबिन में आयरन मौजूद होता है। यह हीमोग्लोबिन ही रक्त से ऑक्सीजन का संवहन करने में मदद करता है। इसलिए आयरन की कमी से शरीर को थकान की शिकायत होने लगती है। विटामिन की कमी भी शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र को कमजोर करता है जिस कारण अन्य कई बीमारियाँ शरीर पर आक्रमण करने लगती हैं, जिसकी कमी से आँखों की रोशनी पर भी प्रभाव पर पड़ता है।

पोषण सुरक्षा के लिए रणनीति

आम तौर पर कुपोषण को एक चिकित्सीय समस्या माना जाता है जबकि कुपोषण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक कारकों का परिणाम है। कुपोषित महिलाओं से पैदा होने वाले बच्चे भी कुपोषण और शारीरिक अशक्तता के शिकार हो जाते हैं। कुपोषण की विकराल समस्या से निपटने के लिए और समाज के गरीब, वंचित वर्ग को संतुलित आहार उपलब्ध कराने के मकसद के साथ राष्ट्रीय पोषण मिशन शुरू किया है। इस मिशन का लक्ष्य बच्चों के बौनापन, आवश्यकता से कम पोषण, खून की कमी और जन्म के समय बच्चों के कम वजन को क्रमशः दो प्रतिशत, दो प्रतिशत, तीन प्रतिशत और दो प्रतिशत तक कम करना है। यद्यपि बौनापन को सालाना कम से कम दो प्रतिशत कम करने का लक्ष्य है, लेकिन मिशन के तहत वर्ष 2022 तक बौनापन को 38.4 प्रतिशत से घटाकर 25 प्रतिशत तक लाना है। इस कार्यक्रम से 10 करोड़ से अधिक लोग लाभान्वित होंगे। इसमें सभी राज्यों और जिलों को चरणबद्ध रूप से 2017-18 में 315 जिलों, 2018-19 में 235 जिलों व 2019-20 में शेष जिलों को शामिल किया जाएगा।

क्या हो आगे का रास्ता?

विश्व बैंक की 'न्यूट्रिशन एट ए ग्लांस' रिपोर्ट के अनुसार भारत को हर साल 12 अरब डॉलर विटामिन और खनिज की कमी के रूप में नुकसान सहना पड़ता है। यह एक बहुत बड़ी धनराशि है जिसका खामियाजा भारत को जीडीपी के रूप में भुगतना पड़ रहा है, लेकिन अगर इस क्षेत्र में बेहतरी के लिए प्रयास किया जाए तो भारत को सालाना महज 574 मिलियन डॉलर की लागत आएगी। ऐसे में अब सवाल यह है कि भारत किस तरह इस बाधा से पार पा सकता है?

इसका एक तरीका यह हो सकता है कि भोजन में प्रोटीन विटामिन और खनिज लवण से भरपूर बनाने की कोशिश की जाए। इस समय गरीबों में अच्छे पोषक तत्वों से युक्त खानपान की आदतों को जीवन शैली का हिस्सा बनाने के लिए अगर सरकार सार्वजनिक वितरण प्रणाली में गेहूँ-चावल के साथ-साथ मोटे अनाजों का वितरण करे तो महत्त्वपूर्ण पोषक तत्व विटामिन ए, विटामिन सी, आयरन, जिंक, बीटा कैरोटीन, लाइकोपिन इत्यादि स्वयं ही भोजन चक्र में

शामिल हो जाएँगे। साथ ही आज वक्त की मांग है कि किसानों को पारंपरिक किस्मों के बजाय उन्नत फसल उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया जाए। पोषक एवं पारंपरिक फसलें जैसे ज्वार बाजरा का उत्पादन बढ़ने के साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को पोषण को ध्यान में रखते हुए बायोफोर्टिफाइड फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देना होगा जिनमें स्वास्थ्यवर्धक पोषक तत्व पर्याप्त मात्र में मौजूद हों।

आंगनबाड़ी बने ज्यादा सक्रिय

इसका एक दूसरा उपाय यह भी हो सकता है कि देश भर में फैले आंगनबाड़ी को अधिक सक्रिय किया जाए। इसके कार्यकताओं को शिशुओं के लिए एक हजार दिन के स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान देने के लिए प्रशिक्षित किया जाए। इतना ही नहीं उन्हें इस तरह का प्रशिक्षण मुहैया कराया जाए ताकि वे गर्भवती महिलाओं एवं रक्त अल्पता से पीड़ित किशोरियों के परिवारों को परामर्श देने में सक्षम हों। उन्हें पिछड़े परिवारों को यह समझाना आना चाहिए कि कुपोषण का प्रभाव न केवल शरीर, बल्कि नवजात शिशु के मस्तिष्क के विकास पर भी पड़ता है।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय पोषण मिशन के माध्यम से देश भर के विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान केंद्रों में नए अनुसंधान किए जाएँ। इसके अलावा आंगनबाड़ी, आशा सहयोगिनी एसएनएम, सीडीपीओ एवं कॉरपोरेट क्षेत्र के लोगों का सहयोग लेकर सुपोषण के क्षेत्र की कार्यक्षमता को बढ़ाया जा सकता है।

वैश्विक पोषण रिपोर्ट दुनिया भर में कुपोषण की स्थिति पर विश्व की सबसे भरोसेमंद रिपोर्ट है। वैश्विक पोषण रिपोर्ट की परिकल्पना वर्ष 2013 में न्यूट्रीशन फॉर ग्रोथ शिखर सम्मेलन में की गई थी। वर्ष 2014 में इस रिपोर्ट का पहला संस्करण प्रकाशित किया गया था। यह वैश्विक पोषण लक्ष्यों पर प्रगति की पड़ताल या पहचान करता है, जिसमें आहार से संबंधित गैर संक्रामक बीमारियों से लेकर मातृ, शिशु और युवा बाल सुपोषण जैसे अनेक तथ्य शामिल किए जाते हैं। यह दुनिया के अग्रणी शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और सरकारी प्रतिनिधियों के एक स्वतंत्र विशेषज्ञ समूह द्वारा किए गए शोध और विश्लेषण के आधार पर तैयार की जाती है। इस रिपोर्ट को तैयार करने में विश्व बैंक की भी अहम भूमिका है।

प्रदूषण की समस्या वैसे तो दुनिया भर में विकराल रूप धारण कर रही है, लेकिन भारत में इसका दुष्प्रभाव कुछ अधिक ही दिख रहा है। खासकर बच्चों के लिए तो यह बेहद जानलेवा साबित हो रहा है। वह दिन दूर नहीं जब बच्चों के सुपोषण की दिशा में प्रदूषण एक बड़ी चुनौती साबित हो सकती है। दरअसल प्रदूषण युद्ध, प्राकृतिक आपदा और किसी महामारी से भी ज्यादा घातक साबित होता है। बीजिंग नॉर्मल यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ स्टेटिस्टिक्स के लेखक व शोधकर्ता शिन डौंग बताते हैं, 'वायु प्रदूषण दिमाग के हमारी भाषा सबंधी क्षमताओं को प्रभावित कर रहा है जो बच्चों के मस्तिष्क और उनकी भाषाओं को समझने की क्षमता को कमजोर कर रहा है।'❑

(अध्येता, दिल्ली विश्वविद्यालय)

सुखाड़िया विश्वविद्यालय शैक्षिक संघ ने दिया ज्ञापन

मोहनलाल सुखाड़िया विश्व-विद्यालय शैक्षिक संघ, उदयपुर (राज.) ने विभिन्न माँगों को लेकर 21 दिसम्बर 2018 को कुलपति प्रो. जे. पी. शर्मा को ज्ञापन दिया। संघ के महामंत्री डॉ. बालू दान बारहठ ने बताया कि संघ ने ज्ञापन में माँग रखी कि विश्वविद्यालय शिक्षकों को 7वें वेतन आयोग का लाभ देने के आदेश करीब चार माह पूर्व राज्य सरकार ने जारी किए थे लेकिन विश्वविद्यालय में अभी तक यह कार्य पूर्ण नहीं हो पाया है। ज्ञापन में माँग रखी गई कि फिकसेशन का कार्य शीघ्रताशीघ्र पूर्ण किया जाए। ज्ञापन में बताया कि विश्वविद्यालय बोम में अनुसूचित जाति व जनजाति समुदाय का कोई प्रतिनिधित्व नहीं है अत: संघ ने इस वर्ग का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने का आग्रह किया। डॉ. बारहठ ने बताया कि नियमों में अस्पष्ठता के कारण प्रोबेशनर्स को एकेडेमिक अवकाश को लेकर दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है अत: ज्ञापन में माँग की गई कि इस अस्पष्टता को शीघ्र ही दूर किया जाए। बारहठ ने बताया कि विश्वविद्यालय संविधान में बोम में शिक्षकों द्वारा चुने गए दो सदस्यों का प्रावधान है लेकिन लम्बे समय से दोनों स्थान रिक्त है जिसके कारण बोम में शिक्षकों का कोई प्रतिनिधित्व नहीं है। अत: संघ ने कुलपति से आग्रह किया कि बोम सदस्यों के निर्वाचन की कार्यवाही शुरू की जाए। विश्वविद्यालय में नवचयनित शिक्षकों की आधारभूत माँगों के लिए विश्वविद्यालय द्वारा बजट जारी करने की माँग संघ द्वारा पूर्व में भी रखी गई थी जिस पर विश्वविद्यालय ने कार्यवाही शुरू कर दी है। ज्ञापन में पुन: आग्रह किया गया कि तत्काल प्रभाव से इस हेतु बजट जारी किया जाए।

प्रतिनिधिमण्डल में शैक्षिक संघ अध्यक्ष प्रो. दिग्विजय भटनागर, डीन प्रो. साधना कोठारी, निदेशक प्रो. अनिल कोठारी, डीएसडब्ल्यू प्रो. बी. एल. वर्मा, डॉ. विनीत सोनी, डॉ. आशीष सिसोदिया, डॉ. नीता त्रिवेदी, डॉ. अजित भाभोर, डॉ. राजकुमारी अहीर, डॉ. शैलेन्द्र राव, डॉ. देवेंद्र श्रीमाली एंव डॉ. सचिन गुप्ता शामिल थे।

विवेकानन्द : कर्तव्यबोध की प्रासंगिकता

हम बड़े गर्व से कहते हैं कि हम उस देश के हैं जहाँ स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरुष हुए। लेकिन लिप्साओं के चलते आज सामान्य नागरिकों में भी कर्तव्यों से अधिक अधिकारों की चिंता बढ़ गयी है। मनुष्य आज संवेदनहीन, चारित्रिक पतन के कारण धरती के सीमित साधनों से असीमित प्रगति कर लेना चाहता है। सामान्य आदमी भी भूल रहा है कि धन तो साधन है साध्य तो मानव-मात्र का कल्याण है। परिवार संस्था आज धीरे-धीरे टूट रही है। परिवार द्वारा ही व्यक्ति एक आदर्शोन्मुख जीवन जीता हुआ, गृहस्थ एवं वानप्रस्थ काल में अपने कर्तव्यों का निर्वहन करता हुआ, राष्ट्र के लिए समर्पित नागरिक होता था।

❑ **डॉ. हरनाम सिंह**

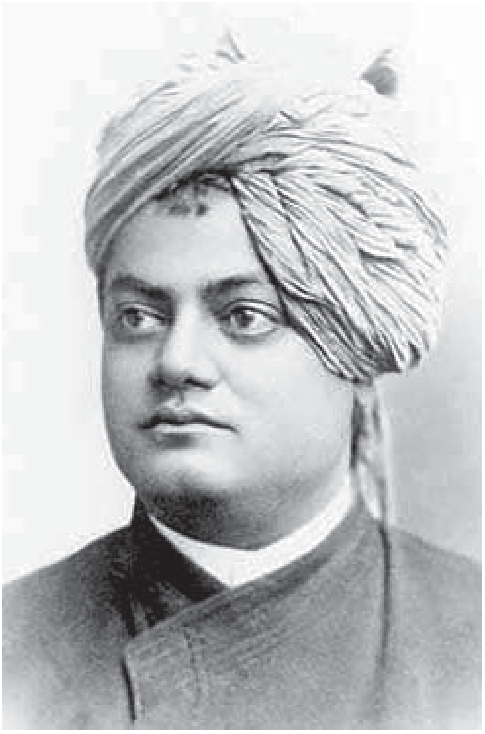

विश्व का सबसे प्राचीन देश भारत जहाँ बहुत से महापुरुषों ने समय-समय पर जन्म लेकर देश-दुनियाँ की उन्नति और मनुष्यों के कल्याण हेतु कार्य किया। मानव मात्रा की सुख-शन्ति-समृद्धि के लिए जीवन भर प्रयत्न करने वाले हम सबके प्रेरणास्त्रोत स्वामी विवेकानन्द का 'नर सेवा-नारायण सेवा' स्मरणीय है। उन्होंने एक बार कहा था कि 'ओ माँ जब मेरी मातृभूमि गरीबी में डूब रही हो तो मुझे नाम और यश की चिन्ता क्यों हो? हम निर्धन भारतीयों के लिए यह कितने दु:ख की बात है कि जहाँ लाखों लोग मुट्ठी भर चावल के अभाव में मर रहे हों, वहाँ हम अपने सुख-साधनों के लिए लाखों रुपये खर्च कर रहे हैं। भारतीय जनता का उद्धार कौन करेगा? कौन उनके लिए अन्न जुटायेगा? मुझे राह दिखाओ माँ कि मैं कैसे उनकी सहायता करूँ?' विवेकानन्द के देश में आज भी लाखों लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। अशिक्षा-अज्ञानता से ग्रस्त लोगों की संख्या भी करोड़ों में है। दरिद्रनारायण के उन्नयन पर कोई खर्च नहीं करना चाहता लेकिन धर्मस्थल या अपनी जातीय समाज के भवन बनाने में लोगों की बड़ी दिलचस्पी देखी जा रही है। ऐसे समय में निर्धन वर्ग से नैतिकता या धर्म-कर्म की बातें करना बेमानी प्रतीत हो रहा है। विवेकानन्द ने गरीबी के मर्म को समझा था। इसलिए कहते थे 'पहले रोटी, फिर धर्म'। जब लोग भूखों मर रहे हों तब उनमें धर्म की खोज करना मूर्खता है। भूख की ज्वाला किसी भी मतवाद से शांत नहीं हो सकती। जब तक तुम्हारे पास संवेदनशील हृदय नहीं, जब तक तुम गरीबों के लिए तड़प नहीं सकते, जब तक तुम उन्हें अपने शरीर का अंग नहीं समझते, जब तक तुम अनुभव नहीं करते कि तुम और सब, दरिद्र और धनी, संत और पापी उसी एक असीम पूर्ण के जिसे तुम ब्रह्म कहते हो, अंश है, तब तक तुम्हारी धर्म चर्चा व्यर्थ है।

हम बड़े गर्व से कहते हैं कि हम उस देश के हैं जहाँ स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरुष हुए। लेकिन लिप्साओं के चलते आज सामान्य नागरिकों में भी कर्तव्यों से अधिक अधिकारों की चिंता बढ़ गयी है। मनुष्य आज संवेदनहीन, चारित्रिक पतन के कारण धरती के सीमित साधनों से असीमित प्रगति कर लेना चाहता है। सामान्य आदमी भी भूल रहा है कि धन तो साधन है साध्य तो मानव-मात्र का कल्याण है। परिवार संस्था आज धीरे-धीरे टूट रही है। परिवार द्वारा ही व्यक्ति एक आदर्शोन्मुख जीवन जीता हुआ, गृहस्थ एवं वानप्रस्थ काल में अपने कर्तव्यों का निर्वहन करता हुआ, राष्ट्र के लिए समर्पित नागरिक होता था। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'कृणवन्तो विश्वमार्यम्' को लेकर चलने वाला भारत दिग्भ्रमित सा प्रतीत

हो रहा है। बेरोजगारी, भूख, छुआ-छूत, अशिक्षा, अंधविश्वास, राष्ट्रविरोधी प्रवृत्ति आदि अनेक बुराइयों से ग्रस्त, भारतीय समाज को एक बार फिर स्वामी विवेकानन्द के विचारों से रूबरू होने का समय आ गया है। हमें अतीत को निहारते हुए ही भविष्य का सफर तय करना होगा। क्योंकि उनका कहना था 'मैं कोई तत्ववेत्ता नहीं हूँ, न तो संत या दार्शनिक ही हूँ। मैं तो गरीब हूँ और गरीबों का अनन्यभक्त हूँ। मैं तो सच्चा महात्मा उसे कहूँगा जिसका हृदय गरीबों के लिए तड़पता हो।'

भारत की प्रतिष्ठा स्थापित करने एवं अपने जीवंत विचारों के लिए ही विवेकानन्द युवाओं के प्रेरणास्रोत हैं। युवाओं से कहते थे कि 'अपने पुट्ठे मजबूत करने में जुट जाओ। वैराग्य वृत्ति वालों के लिए त्याग-तपस्या उचित है। लेकिन कर्मयोग के सेनानियों को चाहिए विकसित शरीर, लौह माँस-पेशियाँ और इस्पात के स्नायु'। तरुण मित्रों को सम्बोधित करते हुए कहा 'शक्तिशाली बनों! तुम्हारे स्नायू और माँसपेशियाँ अधिक मजबूत होने पर तुम गीता अच्छी तरह समझ सकोगे। शरीर में शक्तिशाली रक्त प्रवाहित होने पर श्रीकृष्ण के तेजस्वी गुणों ओर उनकी आपार शक्ति को हृदयंगम कर पाओगे।' समाज में व्याप्त छुआ-छूत की भवना को देखकर वे आहत होकर कहते थे 'मैं भारतीय हूँ और प्रत्येक भारतीय मेरा भाई है। भूलकर भी किसी को हीन मत मानो चाहे वह कितना भी अज्ञानी, निर्धन या अशिक्षित क्यों न हो और उसकी वृत्ति भंगी की ही क्यों न हो। क्योंकि हमारी-तुम्हारी तरह वे सब भी हाड़-माँस के पुतले हैं ओर हमारे बंधु-बांधव हैं।'

यह मान लेना कि युवाकाल मौजमस्ती का काल होता है बहुत बड़ी नादानी और मूर्खतापूर्ण सोच है। युवा पीढ़ी को गुमराह करने की साजिश है। विवेकानन्द के जीवनवृत्ति को देखें तो हम कह सकते हैं कि एक युवक अगर ठान ले तो वह अपने जीवन को नरेन्द्रनाथ से विवेकानन्द में तब्दील कर सकता है। युवा पीढ़ी के नायक रूपहले पर्दे के नकली हीरो नहीं हो सकते। उसे नायक तलाश करना है तो पीछे मुड़कर देखना होगा। अतीत के पन्ने खंगालकर इतिहास से गुजरना होगा। भारत को भारत बनाने में युवा पीढ़ी का महती योगदान रहा है। विवेकानन्द के सपनों का भारत बनाने का दायित्व हम सबका है।

उनका स्पष्ट मानना था कि भारतीय विकास मण्डल जो भारतीय जीवन मूल्यों के प्रकाश में समाज की आवश्यकता-आकाँक्षा, सामाजिक-आर्थिक परिवेश में प्राकृतिक संसाधनों, स्वयं की शक्ति-सामर्थ्य एवं कौशल-स्तर को ऊँचा उठाते हुए सार्वजनिक सुख में वृद्धि है। भारतीय अवधारणा मनुष्य आर्थिक कल्याण से कहीं अधिक सामाजिक कल्याण की वाहक है। भारतीय मनोवृत्ति संघर्ष की नहीं वरन् सहयोग की है। हमें एक ऐसी सामाजिक, आर्थिक संरचना विकसित करने का प्रयास करना चाहिए जिसमें धन और धर्म भौतिकता एवं आध्यात्मिकता, संचय एवं त्याग एवं सार्वजनिक हित आदि अनेक बातों के बीच उचित समन्वय स्थापित कर सके। भारतीय दर्शन व्यावहारिक धरातल पर सर्वव्यापक अवधारणा है जो विश्व कल्याण के लिए है। यह नर को नारायण बनाने की ओर प्रवृत्त करता है। वर्तमान की आवश्यकता है नैतिक एवं मानवीय मूल्यों को आर्थिक क्षेत्र में क्रियान्वित करने की जिससे नवीन दृष्टि-कोण एवं दिशा मिल सके।

स्वामी जी के अनुसार कर्तव्यों एवं अधिकारों के सार्वभौमिक आदर्श का पालन करना ही सच्ची नैतिकता है। स्वामी जी के विचार से कर्म पर मानव का अधिकार है और कर्म के द्वारा ही व्यक्ति अपने समाज को एवं सामाजिक परिवेश को बचा सकता है। जिस समाज में सभी अपने कर्तव्यों का निर्वहन सुचारू रूप से करते हैं वह समाज अपना उत्थान स्वयं ही कर लेता है। 'उठो जागो और अपने लक्ष्य की प्राप्ति से पूर्व मत रुको' से प्रेरणा लेकर आवश्यकता है देश समाज को कमजोर करने का प्रयत्न करने वाली शक्तियों के विरुद्ध जागृत होकर राष्ट्रीय एकता, संस्कृति एवं पहचान के सशक्तिकरण व संरक्षण हेतु सभी प्रकार से प्रयत्न की। विवेकानन्द ने एक बार कह था कि मुझे 100 युवा मिल जायें तो मैं नव-राष्ट्र निर्माण कर सकता हूँ। परन्तु तब उन्हें इतने युवा नहीं मिले, केवल एक भगिनि निवेदिता मिलीं। पर वर्तमान में पूछा जाय तो कई लाख लोग कहते मिल जायेंगे कि यदि तब हम होते तो उनका साथ देते। ऐसों के लिए यह जरूरी नहीं है कि विवेकानन्द के सपनों का भारत बनाने के लिए पुनः उनके आगमन की। आवश्यकता है उस संकल्प की और उनके दिखाये मार्ग पर चलकर कर्तव्यबोध और कर्तव्यपालन की। देश का विकास तो नागरिकों, समाजसेवियों, सामाजिक संस्थाओं ओर उनके संकल्पों के साथ जन-जन के जुटने से ही संभव है। जरूरत है राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत युवाओं की टोली रात-दिन मस्ती में ध्येय-लक्ष्य को सामने रखकर जुटे रहे। हमारा कर्तव्य है कि दर्शक की उत्सुकता छोड़कर निर्माता की लगन और पुरुषार्थ से इसके लिए जुट जायें तभी स्वामी विवेकान्द जी के जन्मदिन को युवा दिवस के रूप में मनानें की संकल्पना साकार होगी।❑

(सहायक आचार्य, सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर, उत्तराखण्ड)

गाँधी, महिला और शिक्षा

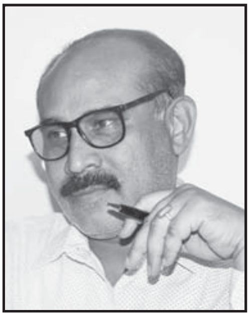

गाँधी जी की हर मुहिम में महिलाओं ने भाग लिया। नमक सत्याग्रह का नेतृत्व सरोजनी नायडू के द्वारा किया गया। गाँधी जी ने यहाँ तक लिखा है कि मैंने सत्याग्रह का मूलमंत्र अपनी माता पुतलीबाई और पत्नी कस्तूरबा गाँधी से सीखा है। महिला शिक्षा का अर्थ महज किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है। गाँधी जी ने बालिका शिक्षा की आधारभूत विसंगतियों को निशाना बनया। उनकी नजर में अंतर पुरुष और महिला में होना ही नहीं चाहिए। उनकी दूसरी महत्त्वपूर्ण सीख यह थी कि महिलाओं की समस्याओं का जायजा भी भारतीय दृष्टिकोण से होना चाहिए।

❑ **प्रो. सतीश कुमार**

लगभग आज से 100 वर्ष पहले गाँधी जी ने वर्धा में महिलाओं के शिक्षा के सन्दर्भ में कहा था कि देश कभी भी संपन्न और विकसित नहीं हो सकता जब तक महिलाएँ शिक्षित नहीं होती। क्योंकि महिला को शिक्षा देना महज एक व्यक्ति को शिक्षित करना भर नहीं है वरन् एक पूरे परिवेश की शिक्षा है। गाँधीजी का कहना था कि महिलाएँ समाज के आन्तरिक ढाँचे का निर्माण करती हैं जबकि पुरुष बाहरी तंत्र का। गाँधीजी की अभिव्यक्ति के साथ यह सोच विकसित हुई कि 'एक पुरुष को शिक्षित करना हो तो एक व्यक्ति शिक्षित होता है, अगर एक महिला को शिक्षित करना है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है। लेकिन गाँधीजी के सुझाव और युक्तियाँ सरकारी फाइलों से निकालकर गाँव-शहरों की गलियों और स्कूलों में नहीं पहुँच पाये। 1986 में शिक्षा योजना के तहत लिंग समानता और ड्राप आउट पर विशेष ध्यान दिया गया था। लेकिन 2012 के आँकड़ों में यह दिखाई देता है कि उत्तर भारत के पाँच राज्यों में स्थिति निरंतर बिगड़ती जा रही है। बालिका शिक्षा खतरे में है। लिंग अनुपात 927 से घटकर 918 तक पहुँच चुका है। परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने पाँच राज्यों में 'बेटी पढ़ाओ-बेटी बचाओ' योजना की शुरूआत की। क्योंकि समाज के अस्तित्व का प्रश्न आ खड़ा हुआ। बेटियों के मरने और मारने की परंपरा आजादी के 70 वर्षों बाद भी जारी है। जबकि यह बात शिद्दत के साथ बालिकाओं ने बड़े अक्षरों में देश की दीवार पर लिख चुकी हैं कि बुद्धि और क्षमता में महिलाएँ पुरुषों से कम नहीं है। देश और समाज के लिए प्रतिबद्धता भी उनकी उतनी ही अहमियत रखती है जितनी की पुरुषों की। पिछले एक दशक से 10वीं और 12वीं की परीक्षाओं में बालिकाओं की अंक तालिका लड़कों से बेहतर रही है। जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं का प्रदर्शन बेहतर रहा है। इण्डियन बॉक्सर मैरीकोम ने दुनिया के सामने एक नया मुकाम स्थापित कर, तिरंगे की प्रतिष्ठा पर चार चाँद लगा दिए।

यह सब कुछ होने के बावजूद आज भी बालिकाओं की शिक्षा में देश क्यों पिछड़ा हुआ है। इस सन्दर्भ में गाँधीजी ने क्या कहा था। क्या

दर्शन थे उनकी इन बातों को विवेचना जरूरी है। महिलाओं की शिक्षा के सन्दर्भ में कई भ्रांतियाँ भी है। इन विसंगतियों पर भी गाँधीजी ने बहुत कुछ कहा है। आजाद भारत की सरकारों ने यह प्रपंच और भ्रम फैलाने की कोशिश की कि वेदों और हिन्दू ग्रंथों में महिलाओं का चित्रण अत्यंत ही कमजोर और जर्जर है। जंजीरों में महिलाओं को जकड़ दिया गया है। प्रगतिशील विद्वानों ने यह कहा कि हिन्दू परम्पराओं ने महिलाओं को पंगु बना दिया है। गाँधीजी ने इन भ्रांतियों को दूर करने की बात कही थी। 1921 में एक सभा को संबोधित करते हुए गाँधीजी ने कहा था कि वेदों में ऐसी कोई बात नहीं कही गई है जिससे महिलाओं की शक्ति क्षीण हो तो हो, न ही उनकी शिक्षा व्यवस्था को रोकने की कोशिश की गई थी। अगर ऐसा होता तो प्रतिभासम्पन्न महिलाओं का उल्लेख जो हम पढ़ते हैं, वह नहीं होता। इसलिए भ्रम फैलाने की कोशिश नहीं की जानी चाहिए। यह विकृति विगत के कुछ वर्षों की है। गाँधीजी ने कहा था कि परम्पराओं का पालन करना अच्छी बात है, उसमें तैरना भी अच्छा है लेकिन उसमें डूब जाना आत्मघाती है। परम्पराएँ अगर विकास में बाधक बन जाये तो उसका अनुपालन ठीक नहीं है, इसकी समझ होनी चाहिए अर्थात् परंपराएँ अगर प्रतिरोध पैदा करती हों तो उनको तिलांजलि दे देनी चाहिए।

1922 में पटना में महिलाओं को संबोधित करते हुए गाँधीजी ने कहा था कि 'पर्दा प्रथा भारत की परंपरा नहीं रही है, जब तक पर्दा प्रथा को हटाया नहीं जाता है तब तक महिलाओं के उत्थान की बात तो दूर, शिक्षा की कामना तक नहीं की जा सकती। 1923 में गाँधीजी ने लड़के और लड़कियों की सामूहिक शिक्षा पर बोलते हुए कहा था कि इस अभ्यास की शुरूआत पहले परिवार की परिधि के भीतर की जानी चाहिए। जहाँ से यह प्रारूप सफल होकर निकलता है तो इसका राष्ट्र व्यापी असर

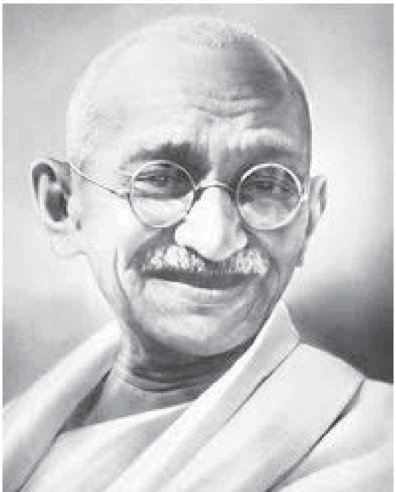

होगा। सामूहिक व्यवस्था की सोच एक साकार रूप लेगी। गाँधीजी के दर्शन में कितना रहस्य छिपा हुआ था हमारे देश की राजधानी में हर दिन निर्भया जैसी खौफनाक घटनाएँ शिक्षा व्यवस्था पर स्याही पोत देती है। एक जीवंत समाज होने पर प्रश्न चिह्न लगाता है। 100 वर्षों बाद इस बात की सुध ले रहे हैं कि अगर लड़कियों को सुरक्षित रखना है तो लड़कों को प्रशिक्षित और शिक्षित करना होगा।

लड़कियों की बदतर स्थिति आर्थिक व्यवस्था के कारण भी बनी है। अर्थ तंत्र पर पुरुष प्रधान समाज का आधिपत्य है। बाजारीकरण ने महिलाओं को और कमजोर किया है। एक अनपढ़ गंवार महिला यह कहती है कि प्राचीन काल से कुछ कार्य महिलाओं के कंधे पर हो रहे हैं। आज भी उसका निष्पादन वही करती है। मसलन भोजन बनाने और सिलाई-कढ़ाई का काम। लेकिन जैसे ही इन दोनों कार्यों का व्यावसायीकरण होता है, यह काम छिटक कर पुरुषों के पास चला जाता है। हजारों-लाखों की संख्या में ढाबेवाला, फेरीवाला और शहरों में फैलते 'बुटीक' को देखा जा सकता है। 1925 में एक महिला सभा को संबोधित करते हुए गाँधीजी ने कहा था, हर महिला को 2-3 घंटे ऐसे काम करना चाहिए जिससे कुछ उनका आर्थिक उपार्जन हो सके। ऐसा करने से उनका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा और राष्ट्र को भी मजबूती मिलेगी। करोड़ों की संख्या में महिलाओं की तादाद आज भी निष्क्रिय है, उनके पास संचित गुण है, लेकिन उसका लाभ न तो उनको खुद मिलता रहा है और न ही राष्ट्र को।

गाँधीजी ने कहा था कि मैं चाहूँगा की भारतीय सेना में महिलाओं की संख्या पुरुषों से ज्यादा हो। क्योंकि महिलाओं के पास नैसर्गिक शक्ति है, संयम है और सबसे अधिक है आध्यात्मिक मनोबल। अगर बागडोर की कमांड उनके हाथ में होगी तो विजय की संभावना कई गुणा बढ़ जाएँगी। गाँधीजी के कहे गए शब्दों के 100 वर्षों बाद वायु सेना के लड़ाकू विमान को उड़ाने की इजाजत महिलाओं को दी गई। आज भी सेना और अर्द्ध सैनिक बलों में महिलाओं की संख्या अत्यल्प है।

गाँधी जी की हर मुहिम में महिलाओं ने भाग लिया। नमक सत्याग्रह का नेतृत्व सरोजनी नायडू द्वारा किया गया। गाँधी जी ने यहाँ तक लिखा है कि मैंने सत्याग्रह का मूलमंत्र अपनी माता पुतलीबाई और पत्नी कस्तूरबा गाँधी से सीखा है। महिला शिक्षा का अर्थ महज किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है। गाँधी जी ने बालिका शिक्षा की आधारभूत विसंगतियों को निशाना बनया। उनकी नजर में पुरुष और महिला में अंतर होना ही नहीं चाहिए। उनकी दूसरी महत्त्वपूर्ण सीख यह थी कि महिलाओं की समस्याओं का जायजा भी भारतीय दृष्टिकोण से होना चाहिए। आज सैंकड़ो की संख्या में जेंडर स्टडीज भारतीय विश्वविद्यालय में खुल गए हैं, वहाँ पर अध्ययन पाठ्यक्रम पश्चिमी नक्शे-कदम पर बनाया गया है, गाँधी के शब्दों में ऐसी पहल सार्थक नहीं हो पायेगी। चूँकि समस्या भारतीय है तो इसका इलाज भी देशज ही होगा, इसलिए हमें फेमिनिस्ट नजरिये से नहीं राष्ट्रीय सोच के तहत इस समस्या का निदान करना चाहिए। ❑

(राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर)

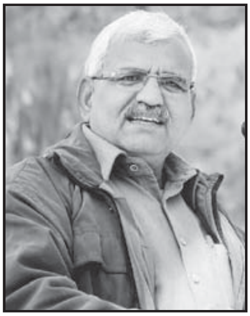

''प्रभुता पाकर किसे मद नहीं होता? यह तुलसीदास जी ने ही लिखा है। सामान्यतया लोगों में सुगमता की ओर जाने की प्रवृत्ति होती है, ढलान पर फिसलना सुगम है। विवेकानंद का अनुगमन ऊर्ध्वगामी पथ पर चलना है और इसके लिए अतिरिक्त प्रयत्न करना पड़ता है। यह सम्भ्रम और संघर्ष आज का नहीं है, सनातन है। ऐसे समर्थ व्यक्ति जैसा आचरण करते हैं वैसा ही लोग अनुसरण करने लगते हैं। उनका व्यवहार प्रमाण बनने लगता है।'' माँ ने कहा।

शक्ति, वैभव और सामर्थ्य की प्राप्ति से सामान्य व्यक्ति के व्यवहार में सहज ही अहंकार का समावेश होने लगता है। 'राम-कथा' भारतीय जनमानस को विपरीत परिस्थितियों तथा अवांछनीय स्थितियों में संयत रहने तथा संयत व्यवहार करने की प्रेरणा देती रही है। अशांत मन को शुभ संकल्पों से परिपूरित करने तथा 'रावणत्व' पर 'रामत्व' की विजय का प्रसंग ही विद्वान लेखक हनुमान सिंह राठौड़ कृत 'कुटुम्ब प्रबोधन' पुस्तक के अध्याय -10 'क्या समर्थ को दोष नहीं?' से यहाँ प्रकाशित है। - सम्पादक।

क्या समर्थ को दोष नहीं?

हरिण मारने के प्रकरण में सलमान खान पेशी पर राजस्थान में आया था। उसे देखने के लिए युवक-युवतियों की इतनी भीड़ उमड़ी की पुलिस को हल्का बल प्रयोग कर उन्हें खदेड़ना पड़ा। आज समाचार पत्र में यह समाचार पढ़कर चाय पर चर्चा शुरू हो गई।

नेहा की प्रतिक्रिया थी- ''यह अपराधी का महिमा मण्डन नहीं है क्या?''

''दोष सिद्ध नहीं हो तब तक अपराधी कैसे? सेलिब्रिटी को देखने के लिए तो भीड़ उमड़ती ही है। जिस हीरो को अभी तक पर्दे पर देख रहे थे, उसे प्रत्यक्ष देखने का अवसर वे क्यों छोड़ते? '' विक्की ने तर्क दिया।

''तो हरिण को गोली आकाश मार्ग से अज्ञात शक्ति ने मारी थी क्या? इन लोगों को रंगे हाथों पकड़ा था'' नेहा ने जोड़ा।

''फिल्मों के कलाकार और विज्ञापनों के मॉडल सेलिब्रिटी या हीरो होंगे तो उस देश का सांस्कृतिक पतन निश्चित है। युवकों के नायक या आदर्श तो देश की संस्कृति के गौरव होने चाहिए। मेरा आदर्श विवेकानंद होगा या माइकल जैक्सन?'' संघमित्र ने किसी बौद्धिक में सुनी पंक्तियाँ यथावत् दोहरा दीं।

''आजकल तो लोग नेता और अभिनेता का ही अनुसरण करते हैं। क्योंकि इनके पास पद और प्रतिष्ठा है। आर्थिक समृद्धि है, निर्णयों को प्रभावित करने की क्षमता है।'' विक्की ने कहा

''प्रभुता पाकर किसे मद नहीं होता? यह तुलसीदास जी ने ही लिखा है। सामान्यतया लोगों में सुगमता की ओर जाने की प्रवृत्ति होती है, ढलान पर फिसलना सुगम है। विवेकानंद का अनुगमन ऊर्ध्वगामी पथ पर चलना है और इसके लिए अतिरिक्त प्रयत्न करना पड़ता है। यह सम्भ्रम और संघर्ष आज का नहीं है, सनातन है। ऐसे समर्थ व्यक्ति जैसा आचरण करते हैं वैसा ही लोग अनुसरण करने लगते हैं। उनका व्यवहार प्रमाण बनने लगता है।'' माँ ने कहा।

''माँ, रामचरित मानस में तुलसीदास जी ने ही कहा है कि समर्थ व्यक्ति के विपरीत आचरण पर भी कोई दोषारोपण नहीं करता बल्कि उसके इस आचरण के पक्ष में तर्क गढ़ते हैं। विष्णु को शेष शायी कहते हैं पर साँपों का बिछौना लोक विरुद्ध आचरण नहीं उनके सामर्थ्य का प्रतीक मानते हैं। सूर्य और अग्नि सब रसों का भक्षण करते हैं पर उन्हें कोई बुरा नहीं कहता, गंगा में स्वच्छ और मैला सब पानी बहता है पर उसे कोई अपवित्र नहीं कहता पावन ही मानता है।

''जौं अहि सेज सयन हरि करहीं।
बुध कहु तिन्ह कर दोषु न धरहीं।।
भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं।
तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नाहीं।।
सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई।
सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई।।
समरथ कहुँ नहिं दोष गोसाईं।

रबि पावक सुरसरि की नाईं।।''

विक्की ने संशय प्रकट करते हुए कहा।

''यदि समर्थ को भी उसका दोष दिखा सकने वाले सामर्थ्य के लोग और व्यवस्था न हो तो समाज में अराजकता फैल जाएगी। तुलसीदास जी का कथन अलग संदर्भ में है, जिस हरिण प्रकरण पर चर्चा प्रारम्भ हुई वह अलग प्रकार का है। प्राचीन ग्रंथों में राजतिलक के प्रसंग का वर्णन आता है। इसमें राजा कहता है कि 'अदण्ड्योऽस्मि' मैं अदण्डनीय हूँ क्योंकि मैं लोगों को दण्ड देता हूँ, मुझे कौन दण्ड देगा। यह अहंकार है, निरंकुशता की मनोवृत्ति है, यह विचार दोषपूर्ण है, यह राजा को ध्यान आना चाहिए इसलिए प्रतीकात्मक रूप से राजगुरु धर्मदण्ड से राजा की पीठ पर आघात करते हुए उसे स्मरण करवाता था कि धर्म तुम्हें दण्डित कर सकता है। अर्थात् तुम्हें राजधर्म का पालन करना है, इसके विपरीत आचरण करने पर धर्माचरण का प्रतीक ऋषि समुदाय तुम्हें दण्डित कर सकता है, पदच्युत कर सकता है। समर्थ लोगों को भी उनके दोष-दर्शन करवाना तथा उचित प्रतिकार करना लंगोटधारी, निस्पृह, कृतकृत्य लोगों द्वारा ही सम्भव है। जो व्यक्ति या व्यक्ति समूह ऐसे समर्थ लोगों के उपकारों के आदी हो जाते हैं, सुविधाभोगी हो जाते हैं या अज्ञान स्वरूप उनकी बाह्य चमक-दमक से अभिभूत उनके मुरीद हो जाते हैं वही उनके दोषों का भी 'अहो रूपं, अहो ध्वनि' की तरह गुणगान करते हैं।'' माँ ने रुककर गहरी साँस ली।

''लेकिन आजकल तो ऐसे धर्मदण्डधारी ऋषि नहीं है।'' विक्की ने पुनः प्रश्न किया।

''ऐसा नहीं है। ऋषि वेश नहीं वृत्ति है। मनोवृति के अनुसार वेश बनता है। आज भी देश और समाज के लिए जीने-मरने वाले लोग हैं। समाज के हित में ऋत और सत् का उद्घोष करने वाले लोग हैं। समय-समय पर वे अपनी बात समाज के समक्ष रखते हैं, देश के समक्ष खतरों से समाज को सचेत करते हैं। संविधान आज का धर्मदण्ड है। देश-काल -परिस्थिति के अनुसार व्यवस्थाओं का स्वरूप बदला है, मूल नहीं। ❑

कर्नाटक राज्य माध्यमिक शिक्षक संघ का प्रदेश सम्मेलन हुबली में सम्पन्न

कर्नाटक राज्य माध्यमिक शिक्षक संघ के सुवर्ण महोत्सव के अवसर पर बी.वी.बी महाविद्यालय के बायोटेक सभागार में दिनांक 17.12.18 को राज्य स्तर के शैक्षणिक सम्मेलन का उद्घाट्न करते हुए धारवाड़ के रामकृष्ण विवेकानंद आश्रम के श्री विजयानंद सरस्वती स्वामीजी ने कहा कि - शिक्षा राष्ट्र की शक्ति है। शिक्षा सभी समस्याओं के लिए परिहार है। शिक्षा देने वाले शिक्षक सचमुच राष्ट्र के रक्षक हैं।

सिर्फ प्रमाणपत्र देना ही शिक्षा नहीं है। किसी से लिखा हुआ इतिहास पढ़कर हम आत्मस्वातंत्र्य को खो चुके हैं। शिक्षक केवल पेमेंट, प्रमोशन और पेन्शन जैसे तीन 'पी' के बारे में न सोचकर छात्रों के सर्वांगीण अभिवृद्धि के बारे में सोचना चाहिए।

विधान परिषद के सदस्य अरुण शहापुर ने कहा कि राष्ट्र के हित में शिक्षा, शिक्षा के हित में शिक्षक, शिक्षक के हित में समाज इन तीन ध्येय वाक्यों के साथ माध्यमिक शिक्षक संघ काम कर रहा है। देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय जे.एन.यू. जैसे विश्वविद्यालयों में किस तरह के व्यक्ति अवसर पा रहे हैं? इसके बारे में सोचना चाहिए। शिक्षकों के हित से पहले हमें शिक्षा के हित के बारे में सोचना चाहिए। नई शिक्षा विधि की स्थापना करने का केन्द्र सरकार प्रणीत सोच अभिनंदनीय है।

के.एल.ई. संस्था के निदेशक शंकरण्णा ने कहा कि 'शिक्षा क्षेत्र में कई समस्याएँ हैं। उन समस्याओं के समाधान के बारे में सोचना चाहिए। शिक्षक पद पवित्र है। अगर शिक्षक चैन से रहेंगे तो उत्तम शिक्षा दे सकते हैं।'

प्रज्ञा प्रवाह के दक्षिण मध्यक्षेत्र संयोजक रघुनंदन ने शिक्षा के गुणवत्ता, परिकल्पना और समस्याओं के बारे में प्रबोधन दिया। समारोह को संबोधित करते हुए अ.भा.रा.शै. महासंघ के अध्यक्ष प्रो. जे.पी. सिंघल ने कहा कि राज्य में सातवें वेतन आयोग का लागू होना अत्यंत आवश्यक है, नहीं तो इसका विपरीत परिणाम राज्य की शिक्षा व्यवस्था पर पड़ेगा। शिक्षा संस्थाओं को सकारात्मक मनोभाव से काम करना होगा। शिक्षकों को शुद्ध मन से काम करना होगा।

विधान परिषद् के सदस्य अ. देवेगौडा, महापौर सुधीर सराफ, शिक्षा विभाग के उपनिदेशक लक्ष्मण पाटील, कनकदास शिक्षण समिति के उपाध्यक्ष शांतण्णा कडिवाल, विधान परिषद के पूर्व सदस्य बालकृष्ण भट्ट, सुशील नमोशी, गणेश कार्णीक, संघ के संरक्षक श्री कृ. नरहरि और महामंत्री शिवानन्द सिंदनकेरा, महिला विभाग के सह कार्यदर्शी श्रीमती ममता डी.के., क.रा.मा.शि.संघ के अध्यक्ष संदीप बुधिहाल, प्रधान कार्यदर्शी चिदानंद पाटील, सह कार्यदर्शी गंगाधर, महिला प्रमुख श्रीमती वासुकी उपस्थित थे। कार्यक्रम में 600 से ज्यादा शिक्षक उपस्थित थे।

गतिविधि अ.भा.रा.शै. महासंघ का अ.भा. विचार वर्ग उदयपुर में संपन्न

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का अखिल भारतीय विचार वर्ग कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड इंजीनियरिंग उदयपुर में 25 से 27 दिसंबर तक आयोजित किया गया। सामूहिक सरस्वती वंदना से प्रारंभ हुए विचार वर्ग का उद्घाटन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह माननीय डॉ. मनमोहन वैद्य द्वारा किया गया।

उद्घाटन सत्र में अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री महेंद्र कपूर ने महासंघ की विचार एवं कार्य यात्रा का विवरण प्रस्तुत करते हुए अखिल भारतीय विचार वर्ग की प्रस्तावना रखी। उन्होंने कहा कि 1988 से प्रारंभ हुए महासंघ ने अपने रचनात्मक एवं शिक्षा, शिक्षक व राष्ट्र हित में किए गए कार्यों के कारण समाज में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। महासंघ के कार्यकर्ताओं की वैचारिक परिपक्वता से जुड़े प्रश्नों पर गहन चिंतन के लिए विचार वर्ग की योजना की गई है।

दूसरे सत्र में डॉ. मनमोहन वैद्य ने 'राष्ट्रीय' शब्द की व्याख्या करते हुए इसे पश्चिम के नेशनलिज्म से भिन्न संकल्पना बताया। उन्होंने कहा कि पश्चिम का राष्ट्रवाद राज्य बढ़ाने के लिए अपना विचार दूसरे पर थोपता है, किंतु हमारी राष्ट्रीय अवधारणा सांस्कृतिक है, धर्म आधारित है। धर्म, रिलीजन नहीं है बल्कि यह स्व का समाज के लिए विस्तार है। उन्होंने कहा कि भारत विविध संस्कृतियों का देश ही नहीं है बल्कि भारत एक ऐसी संस्कृति का देश है जो विविधता का उत्सव मनाती है। भारत का विचार एक्सक्लूसिव नहीं है इंक्लूसिव है। यहां अर्थ और काम का निषेध नहीं लेकिन इस पर धर्म का आधार है और धर्म के मार्ग से मोक्ष तक जाना जीवन का लक्ष्य है। उनका कहना था कि सरकार पर आधारित व्यवस्था समाज को दुर्बल व अकार्यक्षम बनाता है, समाज जीवन का हर क्षेत्र विकेंद्रीकृत रूप से सशक्त हो इसके लिए प्रत्येक नागरिक को अपना कर्तव्य निभाना जरूरी है।

द्वितीय दिवस के प्रथम बौद्धिक सत्र में उच्च शिक्षा संवर्ग के प्रभारी श्री महेंद्र कुमार ने 'राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश करने की आवश्यकता' व्यक्त करते हुए शिक्षक की व्यापक भूमिका पर विषय रखा। उन्होंने कहा कि यह चिंता का विषय है कि वर्तमान में शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य रोजगार प्राप्त करना रह गया है। विद्या, आत्मज्ञान प्राप्त कर बंधन मुक्त करने वाली नहीं रह गई है। हमारे प्राचीन ज्ञान को जब विदेशी उद्धृत करते हैं तभी हम इसे स्वीकार करते हैं यह पराधीनता की मानसिकता है। उन्होंने कहा कि भारत में समस्याओं की जड़ अशिक्षित व्यक्ति नहीं वरन वर्तमान शिक्षा पद्धति में पढ़ा लिखा व्यक्ति है।

'शिक्षक की संकल्पना एवं शिक्षक कार्यकर्ता की मनोभूमिका' विषय पर उद्बोधन करते हुए अखिल भारतीय अध्यक्ष प्रो. जे.पी. सिंघल ने विषय शिक्षक के स्थान पर समाज का शिक्षक बनने का आह्वान किया। उन्होंने प्रश्न उठाया कि हम शिक्षक मन से बने हैं या इसे आजीविका के रूप में मजबूरी से स्वीकार किया है? उन्होंने शिक्षक एवं शिक्षार्थी में अध्ययन की प्रवृत्ति में आई कमी पर चिंता व्यक्त करते हुए पैकेज के ग्लैमर के स्थान पर विद्वत्ता को स्थापित करने का आह्वान किया। प्रोफेसर सिंघल ने पाश्चात्य संदर्भों को ही प्रमाण मानने की पराधीन मानसिकता से उबर कर मानसिक स्वतंत्रता की ओर कार्य करने की आवश्यकता जताई।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राजस्थान क्षेत्र कार्यवाह श्री हनुमान सिंह राठौड़ ने अर्बन नक्सल विषय पर उद्बोधन देते हुए इसे कम्युनिज्म का शहरी चेहरा बताया। उन्होंने कम्युनिज्म को साम्यवाद से भिन्न बताते हुए उसके इतिहास पर प्रकाश डाला। उनका कहना था कि अर्बन नक्सल्स के मॉडस ऑपरेंडी को विभिन्न उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करते हुए बताया कि यह लोग असहिष्णुता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, मानवाधिकार, लिबरेलिज्म, सेक्युलरिज्म आदि के नाम पर हिंदुत्व को निशाने पर लेकर समाज में वर्ग संघर्ष खड़ा करने का षड्यंत्र रचते हैं। यह ब्रेकिंग इंडिया फोर्स ऐतिहासिक तथ्यों को समाप्त कर नया विमर्श उत्पन्न करती है। बीफ फेस्टिवल, महिषासुर दिवस, आर्य आक्रमण मूल निवासी, स्लट वॉक, किस ऑफ लव जैसे सिद्धांतों एवं कार्यक्रमों को प्रगतिशीलता के नाम पर बढ़ावा देकर भारत की मूल संस्कृति के विरुद्ध विदेशी सहायता के माध्यम से कार्य करती हैं। श्री राठौड़ ने इस षड्यंत्र को तोड़ने के लिए समाज में जनजागृति अभियान चलाने की आवश्यकता जताई।

27 दिसंबर को प्रात: कालीन सत्र में गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय नोएडा के कुलपति प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा ने 'शिक्षा के समक्ष चुनौतियों' को विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि शिक्षा के समक्ष समानता एवं नवाचार की कमी, भारतीय ज्ञान परंपरा से दूरी, छात्रों के जीवन में वांछित नैतिकता के मूल्यांकन में असफलता और रेगुलेशन के उद्देश्यों में एकांगीपन बड़ी चुनौतियाँ हैं। विश्व के प्रथम 200 विश्वविद्यालयों में हमारा कोई विश्वविद्यालय नहीं है। नवीनतम प्रौद्योगिकी बनाने एवं अपनाने में हम बहुत पीछे हैं, हमारे शोध-पत्रों की गुणवत्ता पर गंभीर प्रश्न चिह्न हैं। हमारी शिक्षा पद्धति ने हमें अपनी जड़ों से दूर कर दिया है। हमें पढ़ाया जाता है की ज्ञान के समस्त स्त्रोत पश्चिम से आए हैं जबकि नवीनतम वैज्ञानिक शोधों ने भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा की श्रेष्ठता को क्रमश: स्वीकार करना प्रारंभ कर दिया है। उन्होंने शिक्षा एवं ज्ञान के सभी क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान परंपरा का न्यूनतम एक पेपर पढ़ाने की आवश्यकता बताई। उन्होंने यह भी चिंता व्यक्त की कि शिक्षा विद्यार्थी के व्यवहार एवं जीवन शैली में अपेक्षित जीवन मूल्य नहीं दे पा रही है इसके लिए मोरल साइंस का कोई प्रश्न पत्र रखना ही काफी नहीं वरन नवीनतम पेडागॉजिकल विधियों का इस प्रकार उपयोग करना होगा ताकि छात्रों के जीवन में एथिक्स व मानवीय मूल्य स्थाई रूप से आ सके। प्रोफेसर भगवती प्रकाश ने यूजीसी एआईसीटीई व अन्य नियामक संस्थाओं को नियमन के साथ-साथ केपेसिटी बिल्डिंग का कार्य करने की जरूरत बताई। उनका सुझाव था कि स्व नियमित स्वायत्तता एक अच्छा विकल्प सिद्ध हो सकती है।

समारोप में माननीय डॉ. मनमोहन वैद्य ने कहा कि शिक्षक युवा मस्तिष्कों के लिए माली के समान हैं जिसे अनावश्यक बातें खरपतवार दूर कर अच्छी बातों के फूल-फल विकसित करना सुनिश्चित करना है। उन्होंने

कहा कि जीवन में सफलता से अधिक सार्थकता महत्त्वपूर्ण है। आज की शिक्षा साधनपरक हो गई, बड़ी नौकरी लेना है, किंतु जाना कहाँ है, यह स्पष्ट नहीं है। श्री मनमोहन ने कहा कि जब ध्येय तय होता है, तो दिशा तय होती है दिशा तय होती है तो प्राथमिकता पता चलती है और प्राथमिकता से जीवन में गति आती है। उन्होंने उपस्थित शिक्षक कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि अपने विषय की पढ़ाई के साथ-साथ छात्र को जीवन की तरफ देखने का दृष्टिकोण विकसित करना और अपने आचरण से सिखाना देश के शिक्षक से अपेक्षा है।

विचार वर्ग में बौद्धिक सत्रों के अतिरिक्त गटश: एवं सामूहिक चर्चा सत्र भी रहे जिनमें बौद्धिक सत्रों में प्रतिपादित विषयों पर कार्यकर्ताओं ने सम्यक विचार विमर्श किया। अखिल भारतीय विचार वर्ग में महासंघ से संबंधित संगठनों के अपेक्षित कार्यकर्ता एवं अखिल भारतीय पदाधिकारी उपस्थित रहे। विचार वर्ग की व्यवस्थाओं के लिए राष्ट्रीय महामंत्री श्री शिवानंद सिंदनकेरा ने राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) का आभार व्यक्त किया। सामूहिक कल्याण मंत्र के साथ विचार वर्ग का समापन हुआ।

हिमाचल प्रदेश शिक्षक महासंघ की प्रदेश साधारण सभा शिमला में सम्पन्न

हिमाचल प्रदेश शिक्षक महासंघ की प्रान्त कार्यकारिणी की बैठक 16 दिसंबर 2018 को रा.आदर्श व.मा.पा. (छात्र) लाल पानी, शिमला में आयोजित की गई जिसमें अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अ.भा. संगठन मंत्री श्री महेंद्र कपूर मुख्य अतिथि रहे एवं हिमाचल प्रदेश शिक्षक महासंघ के प्रान्त संगठन मंत्री एवं राष्ट्रीय संयुक्त सचिव पवन मिश्रा व हिमाचल प्रदेश शिक्षक महासंघ के संपर्क अधिकारी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक के सह प्रान्त कार्यवाह श्री अशोक कुमार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। बैठक में सभी जिलों के प्रतिनिधि एवं प्रान्त के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

प्रथम सत्र में दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वन्दना के बाद जिला अध्यक्ष अशोक कुमार ने मुख्यातिथि, विशिष्ट अतिथि एवं हिमाचल प्रदेश शिक्षक महासंघ के कर्मठ कार्यकर्ताओं का स्वागत किया। इसी सत्र में जिलास: वृत्त पत्रकों का ब्यौरा रखा गया।

दूसरे सत्र में अतिरिक्त प्रान्त महामंत्री विनोद सूद ने हिमाचल प्रदेश शिक्षक महासंघ द्वारा तैयार किये गए माँग पत्र की विशेष उपलब्धियों के बारे में चर्चा की तथा सभी जिलों से क्रमश: माँगों के प्रति सुझाव लिए गए। प्रान्त कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से चुनाव पर्यवेक्षक के रूप में प्रधानाचार्य लाल पानी श्रीराम कृष्ण मार्कण्डय एवं रूसा के कोऑर्डिनेटर बलवीर पटियाल को नियुक्त किया।

समापन सत्र में हिमाचल प्रदेश शिक्षक महासंघ की साधारण सभा में हिमाचल प्रदेश शिक्षक महासंघ की प्रान्त कार्यकारिणी को भंग किया गया तथा नई कार्यकारिणी के चुनाव के लिए चुनाव पर्यवेक्षक बलवीर पटियाल ने प्रान्त अध्यक्ष के चुनाव के लिए साधारण सभा से नाम मांगे जिसमें जिला मंडी के अध्यक्ष भगत चंदेल ने पवन कुमार जिला काँगड़ा का नाम प्रान्त अध्यक्ष पद के लिए प्रस्तावित किया जिसका अनुमोदन सभी जिला अध्यक्षों ने किया। चुनाव पर्यवेक्षक बलवीर पटियाल ने पवन कुमार के सर्वसम्मति से प्रान्त अध्यक्ष बनने की घोषणा की। साधारण सभा ने नवनियुक्त प्रान्त अध्यक्ष पवन कुमार को प्रान्त कार्यकारिणी गठन के लिए अधिकृत किया। उसके पश्चात् सर्वसम्मति से प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा की गई।

इस अवसर पर रा.स्व.संघ हिमाचल प्रदेश के सहकार्यवाह अशोक कुमार ने नव नियुक्त प्रान्त कार्यकारिणी को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गतिविधियों के बारे में अवगत करवाया तथा अ.भा. संगठन मंत्री श्री महेंद्र कपूर ने अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ द्वारा वर्ष में करवाए जाने वाले कार्यक्रमों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें कार्यक्रमों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण, चरित्र निर्माण, व्यक्ति निर्माण के लिए समाज के साथ मिलकर अपनी भूमिका निर्वहन करनी है। संगठन के निर्माण के लिए भी कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि कार्यक्रमों के माध्यम से श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं का निर्माण होता है तथा श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं से संगठन का विस्तार होता है। समापन सत्र के अंत में अतिरिक्त प्रान्त महामंत्री सुधीर गौतम ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, विद्यालय प्रशासन, मीडिया एवं सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया।

दिल्ली अध्यापक परिषद् साधारण सभा सम्पन्न

दिल्ली अध्यापक परिषद् की साधारण सभा बैठक दिनांक 23-12-2018 को कमर्शियल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दरियागंज, दिल्ली में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर साधारण सभा के निर्वाचन अधिकारी श्री जगदीश कौशिक (उत्तर भारत क्षेत्र प्रमुख, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ) की देख रेख में विधिवत निर्वाचन सम्पन्न हुए। निर्वाचन से पूर्व महामंत्री रतन लाल शर्मा ने महामंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। प्रदेश और चारों निकायों के कोषाध्यक्षों ने आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया।

बैठक में निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष जय भगवान गोयल ने सभी कार्यकर्ताओं को सहयोग के लिए धन्यवाद देते हुए नए निर्वाचित पदाधिकारियों को शुभकामना देकर संगठन को मजबूत बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि अलग-अलग जगह पर कुआँ खोदने से पानी प्राप्त नहीं होता है बल्कि लक्ष्य बनाकर एक ही जगह पर गहराई से कुआँ खोदने पर पानी अवश्य मिलता है, इसलिए राष्ट्र हित, छात्र हित और शिक्षक हित को लक्ष्य मानकर मनसा, वाचा, कर्मणा से युक्त होकर कार्य संपादित करने में लग जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी कार्यकर्ता महत्त्वपूर्ण हैं और बिना सभी के सहयोग से लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता है लेकिन संगठन की एक व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत कुछ लोगों को दायित्व दिया जाता है। इसलिए बिना दायित्व वाले कार्यकर्ता को निराश होने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने इस वैचारिक संगठन को और मजबूती प्रदान करने हेतु सभी कार्यकर्ताओं का आह्वान किया।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अ.भा. संगठन मंत्री श्री महेंद्र कपूर ने नव निर्वाचित पदाधिकारियों को शुभकामनाएँ देते हुए प्रेरक प्रसंग द्वारा ऊर्जा भरने का प्रयास किया तथा दायित्व और पद के अंतर स्पष्ट करते हुए कहा कि पद प्राप्त करने के उपरांत अहं का भाव उत्पन्न होता है जबकि दायित्व में विनम्रता और जिम्मेदारी का अहसास रहता है। इसी कारण हमारे संगठन में दायित्व की परिकल्पना की गई है न की पद की।

अंत में वर्तमान अध्यक्ष वेद प्रकाश ने अपने वक्तव्य में कहा कि परिषद् के कार्य को सभी कर्मठ कार्यकर्ताओं के साथ अपने वरिष्ठ और अनुभवी कार्यकर्ताओं के आशीर्वाद से नई ऊंचाई पर ले जाएँगे।